ओ३म्

कुरानानुवाद

तथा च

वेद-कुरान-यन्दावस्था, बाईबिल-पितक

शास्त्र सम्मेलन

प्रथम भागांश

श्रीमान् पं० सत्यदेव जी कृत

जो

श्रीमान् महाशय शिवप्रसाद जी गुप्त

रईस काशी की आज्ञानुसार।

हिजरी १३३२

आर्य्यसंवत्सर १९६०८५३०१४ में

तारा यन्त्रालय में मुद्रित हुवा

ईस्वी १९१४

प्रथमवार ५००० मूल्य ॥=) बिना डाक व्यय

ओ३म्

विज्ञापन विज्ञापन विज्ञापन

सर्व आर्य्य सज्जनों को विदित हो । कि हमारे आयुर्वैदिक औषधालय में हर एक बीमारी की औषधि मिल सकती है या बाहर भेजी जा सकती है । पत्र द्वारा पूर्ण व्यवस्था लिखने पर ।

॥ स्वप्न विलास ॥

यह उस रोग की औषधि है । कि जिस कुटिल रोग से ग्रसित आज १०० में से ८० मनुष्य इस बिमारी से ग्रसित हैं । अधिक करके यह बिमारी युवकों में पाई जाती है हमने यह औषधि बहुत यत्न से तैयार की है । शर्तिया एक सप्ताह तक सेवन करने से आपका जो स्वप्न में वीर्यपात हो जाता है वह बन्द हो जायगा । मूल्य केवल एक सप्ताह का १) रुपया है ।

॥ प्रमेह विनाशक बटिका ॥

यथा नाम तथा गुणः जैसा इसका नाम है वैसी ही यह गुण कारक एक औषधी है । चाहे कितना पुराना सुजाक क्यों ना हो । एक सप्ताह तक सेवन करने से आपको फायदा मालूम हो जायगा मूल्य केवल एक सप्ताह का २) रुपया है ॥

॥ भास्कर लवण ॥

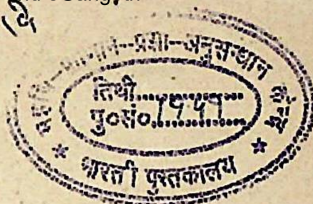
यह वह चूर्ण है कि जिसके प्रति दिन सेवन करने से आपकी जठराग्नि मंद नहीं होगी और चाहे किसी प्रकार का सुल क्यों न हो यह तत्काल उसे दूर कर देगा और उदर सम्बन्धी व्याधियों को यह चूर्ण हर एक गृहस्थी को अपने गृह में रखना चाहिये । मूल्य केवल एक शीशी का ।) आना है ।

॥ रजः प्रवर्तनी बटिका ॥

आज कल स्त्रियों की तंदुरुस्ती को नाश करने वाली यदि कोई बीमारी है । तो वह केवल मासिक धर्म्म का ठीक २ समय पर नहीं आना ही है । इस वटिका का एक सप्ताह तक सेवन करने से यह व्याधि दूर हो सकती है । मूल्य केवल एक सप्ताह का २) रुपया है ।

पता—कविराज पं० कृष्णचन्द्रशर्म्मा वैद्यराज
मैदागिन बनारस शहर ।

नोट—डाक महसूल ग्राहक के जिम्मे रहेगा ।



ओ३म्

मन्ज़िल ॥१॥ सूरते फ़ातेहः मक्की, रुकुअ ॥१॥ आयत ॥७॥

॥ ईश्वर के नाम से जो अति कृपालु तथा अति दयालु है ॥

रु. १ म—सर्व स्तुति ईश्वर के लिये है।
जो संसार का परिपालक है ॥ १ ॥
अति कृपालु तथा अति दयालु ॥ २ ॥
न्याय के दिन का अधिपति ॥ ३ ॥
हम तेरी ही वन्दना करते और
तुझ ही से सहायता की प्रार्थना करते ॥ ४ ॥
हमें सुमार्ग दर्शा ॥ ५ ॥
उनका पथ जिनपर तू ने अनुग्रह किया ॥ ६ ॥
न कि उनका, जिनपर तू क्रुद्ध हुआ,
और न मार्गभ्रष्टों का ॥ ७ ॥

म० ॥ १ ॥ पारः अलिफ़ लाम् मीम् ॥ १ ॥ सूरते बक़ ॥२॥ मदनी ॥
रुकुअ ॥ ४० ॥ आयत ॥ २८८ ॥

॥ ईश्वर के नाम से जो अति कृपालु तथा अति दयालु है ॥

रुकुअ ॥१म॥—अलिफ़, लाऽम, मीऽम ॥ १ ॥ उस पुस्तक में निस्सन्देह डरने वालों के लिए शिक्षा है ॥ २ ॥ जो अदृष्ट पर विश्वास करते (श्रद्धा करते) नमाज़ पढ़ते और हमारे दिये में से व्यय करते हैं ॥ ३ ॥ जो विश्वास (निश्चय) करते हैं। जो तुझपर उतरा और जो कुछ तुझ से पूर्व उतरा और उनका आख़िरत (प्रलय) में विश्वास है ॥ ४ ॥ उन्हीं ने प्राप्त किया है स्वपरिपालक से

आदेश और वही अभीष्ट को प्राप्त हुये (मुक्त) ॥ ५ ॥ वह जो काफ़िर हैं। उनके वास्ते समान है चाहे तू उनको भय दे या भय न दे वे न मानेंगें ॥ ६ ॥ ईश्वर ने मुहर कर दी है उनके हृदयों पर और उनके श्रोत्रों पर तथा उनके नेत्रों पर आवरण आच्छादित है और उन के लिये महा कष्ट है ॥ ७ ॥

रुकुअ ॥ २य ॥ कतिपय मनुष्य ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम ईश्वर पर तथा अन्तिम दिन पर विश्वास रखते हैं परन्तु वे कदापि मोमिन (आस्तिक) नहीं ॥ ८ ॥ वे ईश्वर को तथा मनुष्यों को प्रतारण देते हैं यद्यपि वे स्वातिरिक्त अन्य किसी का वंचन नहीं करते। परन्तु वे समझते नहीं ॥ ९ ॥ उनके मानसों में रोग है पुनः ईश्वर ने उनके रोग की वृद्धि की। अनृत भाषण के कारण उनके लिये दारुण कष्ट है ॥ १० ॥ जब उनसे कथन करते हैं कि पृथ्वी पर उपद्रव न करो तो कहते हैं कि हम तो शांति प्रसारक हैं ॥ ११ ॥ सचेत हो वही उपद्रवी हैं परंच समझते नहीं ॥ १२ ॥ और जब उनसे कहा जाए श्रद्धा करो जैसे और लोग श्रद्धा किये हैं तो कहते हैं क्या हम भी उसी प्रकार श्रद्धा करें जिस प्रकार मूर्ख श्रद्धा किये हैं। सावधान! वे ही मूर्ख हैं परन्तु समझते नहीं ॥ १३ ॥ और जब आस्तिकों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम तो विश्वासी हैं। और जब अपने असुरों के साथ एकान्त में बैठते हैं तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ हैं हमतो उनसे (मुसल्मानों से) उपहास करते हैं ॥ १४ ॥ ईश्वर उनका उपहास करता है और उनके उपद्रव में उन्हें आकर्षित करता है वे बहकते हैं ॥ १५ ॥ ये ही हैं जिन्होंने उपदेश के स्थान में अज्ञान क्रय किया फिर उन के क्रयण ने लाभ न दिया। और उन्होंने शिक्षा लाभ

न की ॥ १६ ॥ उनका दृष्टान्त ऐसा है कि एक व्यक्ति ने वन्हि प्रदीप्त की । जब उस का मंडल दीप्तिमान हुआ तो ईश्वर ने उन का प्रकाश हरण किया और उन्हें अन्धकार में त्याग दिया और वे कुछ नहीं देखते ॥ १७ ॥ बधिर हैं । मूक हैं । अन्धे हैं वे नहीं फिरेंगे ॥ १८ ॥ अथवा (उनका दृष्टान्त ऐसा है कि) गगन से वृष्टि हो । उसमें अन्धकार, गर्जना, और विद्युत हो और कड़क के कारण मृत्यु भयात् वे स्वकर्णों में अंगुलियां डालें और परमेश्वर काफ़िरों को घेर रहा है ॥ १९ ॥ समीप है कि बिजुली उनके नयन (दर्शन शक्ति) हरण कर ले जाय। जब वह उन पर उल्लसित होती है तो वे उस में चलते हैं और जब उन पर अन्धकार होता है तो वे स्थिर रहते हैं और यदि ईश्वर चाहे तो उनके श्रोत्रों और नेत्रों को हरण कर लें यतः ईश्वर प्रत्येक वस्तु का शासक है ॥ २० ॥

रु० ३ य—हे जनता, अपने प्रभु, जिसने तुम्हें तथा तुम्हारे पूर्वजों को उत्पन्न किया, की वन्दना करो स्यात् तुम परहेज़गार बन जाओ (बच जाओ) ॥ २१ ॥ उसने भूमि को तुम्हारी शय्या बनाया और नभ को गृह (छत) बनाया फिर नभोमंडल से वारि को उतारा जिससे तुम्हारे खाने के लिये मेवे (फल) उपजे अतः तुम उसके (कई एक) शरीक (तुल्य) मत बनाओ और तुम जानते हो ॥ २२ ॥ और जो वाणि हमने अपने दास (मुहम्मद) पर उतारी है । यदि तुमको उसमें कुछ संशय हो तो तुम उसके सदृश एक सूरत ले आओ । और ईश्वरातिरिक्त अपने साक्षियों को बुलाओ यदि तुम सच्चे हो ॥ २३ ॥ पुनः यदि ऐसा न करोगे और कदाचित् न कर सकोगे । तो उस अनल से भीत होवो जिसका ईंधन मनुष्य तथा पत्थर है । और काफ़िरों के लिये बनाई गई है ॥ २४ ॥

उनको शुभ संवाद सुना जो विश्वास लाए । और शुभ कार्य्य किये । उनके वास्ते उद्यान हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं । जब वहां का कोई फल खाएंगे तो कहेंगे कि यह तो वही है जो हमने पूर्व खाया था । और उनके समीप वहां एक ही प्रकार के फल लाए जाएंगे और वहां उनके लिये स्वच्छ स्त्रियें होंगी और वे सर्वदा वहां निवास करेंगे ॥ २५ ॥ ईश्वर मत्कुण का उतवा उस से उत्कृष्ट वस्तु का उदाहरण देने से लज्जित नहीं होता । फिर वे जो विश्वासी हैं जानते हैं कि वह ठीक उनके प्रभु की ओर से है । परन्तु जो काफ़िर हैं वे कहते हैं कि ईश्वर का दृष्टान्त से क्या प्रयोजन । बहुतों को मार्गभ्रष्ट करता और बहुतों को उपदेश देता है । केवल कुकर्मी इस्से मार्गच्युत होते हैं ॥ २६ ॥ जो ईश्वर से प्रण कर प्रतिज्ञा भंग करते हैं और जिस मेल की आज्ञा ईश्वर ने दी उसको ध्वंस हैं । और उस में उपद्रव करते हैं । वे हानि उठावेंगे ॥ २७ ॥ तुम ईश्वरास्तित्व को क्यों अस्वीकार करते हो तुम मृत थे उसने तुम्हे जीवन दिया । पुनः तुम्हें मार डालेगा फिर जिलायेगा पश्चात् तुम उसी की ओर लौट जाओगे ॥ २८ ॥ ईश्वर वही है जिसने तुम्हारे लिये पृथिवी के समग्र पदार्थों को उत्पन्न किया फिर उसने आकाश की ओर आरोहण किया । और सप्तआकाश निर्माण किये वह प्रत्येक पदार्थ का ज्ञाता है ॥ २९ ॥

रु० ४ थं— और जब तेरे प्रभु ने फ़रिश्तों से कहा था कि मैं पृथ्वी पर एक प्रतिनिधि (ख़लीफ़ा) बनाना चाहता हूं । तो वह बोला । क्या तू उसमें उस पुरुष को रक्खेगा जो वहां उपद्रव करे और रक्तपात करे हम तेरे गुण श्रवण कराते और पवित्रता का वर्णन कराते हैं । फ़रमाया (कहा) मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते ॥ ३० ॥ और उसने आदिम को सर्व वस्तुओं के नाम सिखाये । फिर उनको फ़रिश्तों के समक्ष उपस्थित



किया और कहा तुम मुझे नाम बतलाओ यदि तुम ऋत भाषी हो ॥ ३१ ॥ वह बोले तू पवित्र है । हम उतना जानते हैं जितना तूने हमें सिखाया । और तू बोद्धा-कार्य्यदक्ष है ॥ ३२ ॥ आज्ञा की भो आदिम ! तू उनको इनके नाम बतला फिर जब आदिम ने उनको इनके नाम बता दिये तब फ़रमाया कि मैंने कहा न था कि मैं आकाश पृथ्वी की निहित वार्त्ताओं को जानता हूं और (वे सब) जो तुम प्रगट करते हो और जो तुम छिपाते हो मुझे ज्ञात हैं ॥ ३३ ॥ और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदिम को साष्टांग प्रणाम करो तो सबने साष्टांग प्रणाम किय सिवा इबलीस के । और उसने स्वीकार न किया और गर्व किया और वह काफ़िरों में से था ॥ ३४ ॥ और हमने आदिम से कहा कि तू सपत्नीक स्वर्ग में निवासकर और तुम उभय उस्में जहां चाहो यथेष्ठ खाओ परन्तु उस वृक्षके समीप न जाना कि तुम दोनों अत्याचारी (अपराधी उतवा अन्यायी] न हो जाओ ॥ ३५ ॥ पश्चात् शैतान ने उन दोनों को उससे फिसलाया (आज्ञा भंग कराई) और दोनों को वहां से (कि जिस्में वे थे) बहिःकरा दिया और हमने कहा तुम सब नीचे उतरो । तुम एक दूसरे के शत्रु हो और तुम्हें एक नियत समय पर्य्यन्त पृथ्वी पर रह कर कार्य्य सम्पादन करना होगा ॥ ३६ ॥ फिर आदिम ने अपने प्रभु से कुछ बातें सीखीं तब वह [ईश्वर] उसपर कृपालु हुवा क्योंकि वही क्षमा करने वाला (फिराने वाला) दयालु है॥३७॥ हमने कहा तुम सब यहां से नीचे उतरो फिर जो मेरी ओर से तुमको शिक्षा मिलेगी तो जो कोई मेरी शिक्षा पर चलेगा। उन्हें नतो कुछ भय होगा और न दुःख॥३८॥ और जिन्हो ने अनङ्गीकार किया और हमारे चिन्हों को झुटलाया वही नरक के निवासी थे और सर्वदा उस्में बास करेंगे ॥ ३९ ॥

रु० ५ म—हे इसराईल की सन्तानों ! मेरे उस अनुग्रह को स्मरण करो जो कि मैंने तुम पर किया और तुम मेरे साथ किये हुए प्रण को पूर्ण करो तो मैं तुम्हारे साथ किये प्रण को निभाऊंगा। और मुझ से भय करो और उसको स्वीकार कर लो जो कुछ मैंने उतारा है। उस वस्तु को सच बता जो तुम्हारे पास है। और तुम पहिले उसे अनङ्गीकार करने वाले न बनो। और मेरी आयतों के बदले थोड़ा मूल्य न लो और मुझ से भय करते रहो ॥ ४० ॥ और सत्य को असत्य में न मिलाओ। और नाही जान बूझ कर सत्य को छिपाओ ॥ ४१ ॥ और नमाज़ पढ़ो और चत्वारिंशतांश दो। और झुकने वालों के साथ झुको ॥ ४२ ॥ क्या तुम लोकों को पुण्य करने की आज्ञा देते हो। और अपने प्राणों को विस्मरण किये जाते हो। और तुम तो "पुस्तक" पढ़ते हो। फिर क्या नहीं समझते ॥ ४३ ॥ और संतोष तथा नमाज़ के साथ सहाय्य मांगो। हां ! गुरु तो हैं परन्तु उन पर नहीं जिनके अन्तःकरण द्रवित (नम्रता करने वाले) हैं ॥ ४४ ॥ जिन्हें यह विचार है कि उन्हें अपने प्रभु से मिलना हैं और उनको उसी की तरफ लौटना है ॥४५॥

रु० ६ ष—भो इसराईलापत्य ! मेरा उस कृपा को स्मरण करो जो मैंने तुम पर की। और यह कि विश्व भरके मनुष्यों से मैंने तुझे श्रेष्ठता दी ॥ ४६ ॥ और उस दिन से डरो जिसमें कोई किसी को कुछ भी सहायता न दे सकेगा और न उसकी ओर सिफ़ारिश स्वीकृत होगी और न उस स्थान में कुछ लिया जावेगा और न उनको सहायता मिलेगी ॥ ४७ ॥ जब हमने तुझे फ़िरऔन के लोगों से छुड़ाया जो तुमको महा कष्ट देते थे जो तुम्हारी सन्तानों का वध करते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे और उसमें तुम्हारे प्रभु की ओर से महती परीक्षा (आपत्ति) थी ॥ ४८ ॥ और जब हमने तुम्हारे हेतु महासागर को चीरा और तुम्हें रक्षित



किया और फ़िरऔन के पुरुषों को निमज्जित किया और तुम अवलोकन कर रहे थे ॥ ४९ ॥ और जब हमने चत्वांरिशत रात्रि की मूसा से प्रतिज्ञा की थी फिर तुमने उसके पीछे वत्स निर्माण किया और तुम अत्याचारी थे ॥ ५० ॥ फिर उसके पश्चात् हमने तुम्हें क्षमा कर दिया किस्यात् तुम धन्यवाद दो ॥ ५१ ॥ जब हमने किताब और "फ़ुर्क़ान" (सिद्धियां) मूसा को दीं किस्यात् तुम उपदेश ग्रहण करो ॥ ५२ ॥ और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा। हे जाति वालों। तुमने वत्स निर्माण से अपने ऊपर अत्याचार किया है अब अपने सृष्टा के सन्मुख हूजियो। और अपनी प्राणों का अन्त कर दो। तुम्हारे उत्पादक के विचार में तुम्हारे लिये यह कार्य्य श्रेष्ट है। फिर उसने तुम पर ध्यान दिया कि वही क्षमा करने वाला दयालु है ॥ ५३ ॥ और जब तुमने कहा हे मूसा हम तुझ पर विश्वास न करेंगे। जब लों ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन न कर लें। फिर तुम्हें विद्युत ने पकड़ा और तुम देख रहे थे ॥ ५४ ॥ फिर हमने तुम्हारे मृत्यु के पश्चात् तुम्हें जीवित किया स्यात् तुम कृतज्ञ बनो ॥५५॥ और हमने तुम पर अभ्र की छाया की और "मन वसलवा" तुम पर उतारा कि तुम हमारी दी हुई अच्छी वस्तुओं को भोगो। हमारी तो कुछ हानि (अत्याचार) न की पर तुम अपने ही प्राणों पर अत्याचार करते रहे ॥ ५६ ॥ और जब हम ने कहा कि तुम इस नगर में प्रवेश करो और यत्र कुत्र यथेष्ट सुरक्षितर हो। खाते फिरो और साष्टांग दण्डवत् करो और "हित्तन" उच्चारण करते द्वार में प्रविष्ट होवो तो हम तुम्हारे पाप क्षमा करेंगे। और पुण्य शीलों को हम अधिक भी देंगे ॥ ५७ ॥ परञ्च उन अन्याय शीलों ने कही गई वार्ता को दूसरी वार्ता से परिवर्तित किया तब हम ने उन अन्याय शीलों पर उनके आज्ञोल्लंघन के कारण आकाश से कष्ट भेजा इस लिए कि पापिष्ठ थे ॥ ५८ ॥

रु० ७ म—और जब मूसा ने अपनी जाति के हेतु जलार्थ प्रार्थना की तो हमने कहा अपनी यष्टिका से पत्थर पर प्रहार कर। तब उसी से द्वादश स्रोत बह निकले। और सब मनुष्यों ने स्वस्वघाट का प्रत्यभिज्ञान कर लिया। ईश्वर की ओर से सम्पति का उपभोग करो और पान करो और पृथिवी पर उपद्रव न करते फिरो ॥ ५९ ॥ जब तुमने कहा हे मूसा! हम एक खाने पर तुष्ट न होंगे। तू हमारे हेतु परमेश्वर से प्रार्थना कर कि वह हमारे लिये वह प्रकट करे जो पृथिवी से उपजते हैं शाक और ककड़ी और गोधूम और मसूर तथा पियाज़। तो उस (मूसा) ने कहा क्या तुम अच्छी वस्तु का तुच्छ वस्तु से परिवर्तन करना चाहते हो किसी नगर (मिश्र) में उतर जाओ। जो मांगते हो वह तुमको मिलेगा वे असन्मान तथा दीनता को प्राप्त हुए। और ईश्वरीय मन्यु को लेकर फिरे। यह इस लिये कि वह ईश्वरीय चिन्हों को अनङ्गीकार करते थे। और वृथा नबियों का घात करते थे। इस लिये अनाज्ञाकारी थे और सीमोल्लंघन कर जाते थे ॥ ६० ॥

रु० ८ म—निस्सन्देह जो लोग विश्वास लाए और जो लोग यहूदी हुए और नसारा हुए और सापर्वान (अविश्वासी तथा ग्रहपूजक) हुए। जो कोई उसमें से ईश्वर पर तथा अन्तिम दिनपर विश्वास करे और सुकर्म करे उनका बदला (मज़दूरी) उनके प्रभु के पास है! न उनको कुछ भय है और न वे शोकातुर होंगे ॥ ६१ ॥ जब हम ने तुम से प्रतिज्ञा कराई और पर्वत (तूर) को तुम्हारे ऊपर उठाया कि हमने जो तुम को दिया है उसे हठात् पकड़ो और जो उसमें हैं तुम उसे स्मरण करते रहो स्यात् तुम भयभीत होवो ॥ ६२ ॥ इसके पश्चात् तुम लौट गये। सो यदि ईश्वर की कृपा और दया तुम पर न होती तो तुम हानि उठाने वालों में में से हो जाते। और तुम उन पुरुषों को अवश्य जानते

ओ३म्

मन्ज़िल ॥१॥ सूरते फ़ातेहः मक्की, रुकुअ ॥१॥ आयत ॥७॥

॥ ईश्वर के नाम से जो अति कृपालु तथा अति दयालु है ॥

रु॰ १ म—सर्व स्तुति ईश्वर के लिये है ।
जो संसार का परिपालक है ॥ १ ॥
अति कृपालु तथा अति दयालु ॥ २ ॥
न्याय के दिन का अधिपति ॥ ३ ॥
हम तेरी ही वन्दना करते और
तुझ ही से सहायता की प्रार्थना करते ॥ ४ ॥
हमें सुमार्ग दर्शा ॥ ५ ॥
उनका पथ जिनपर तू ने अनुग्रह किया ॥ ६ ॥
न कि उनका, जिनपर तू क्रुद्ध हुआ,
और न मार्गभ्रष्टों का ॥ ७ ॥

म० ॥ १ ॥ पारः अलिफ़ लाम् मीम् ॥ १ ॥ सूरते बक़ ॥२॥ मदनी ॥
रुकुअ ॥ ४० ॥ आयत ॥ २८८ ॥

॥ ईश्वर के नाम से जो अति कृपालु तथा अति दयालु है ॥

रुकुअ ॥१म॥—अलिफ़, लां३म, मी३म ॥ १ ॥ उस पुस्तक में निस्सन्देह डरने वालों के लिए शिक्षा है ॥ २ ॥ जो अदृष्ट पर विश्वास करते (श्रद्धा करते) नमाज़ पढ़ते और हमारे दिये में से व्यय करते हैं ॥ ३ ॥ जो विश्वास (निश्चय) करते हैं। जो तुझपर उतरा और जो कुछ तुझ से पूर्व उतरा और उनका आख़िरत (प्रलय) में विश्वास है ॥ ४ ॥ उन्हीं ने प्राप्त किया है स्वपरिपालक से

आदेश और वही अभीष्ट को प्राप्त हुये (मुक्त) ॥ ५ ॥ वह जो काफ़िर हैं। उनके वास्ते समान है चाहे तू उनको भय दे या भय न दे वे न मानेंगे ॥ ६ ॥ ईश्वर ने मुहर कर दी है उनके हृदयों पर और उनके श्रोत्रों पर तथा उनके नेत्रों पर आवरण आच्छादित है और उन के लिये महा कष्ट है ॥ ७ ॥

रुकुअ ॥ २य ॥ कतिपय मनुष्य ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम ईश्वर पर तथा अन्तिम दिन पर विश्वास रखते हैं परन्तु वे कदापि मोमिन (आस्तिक) नहीं ॥ ८ ॥ वे ईश्वर को तथा मनुष्यों को प्रतारण देते हैं यद्यपि वे स्वानिरिक्त अन्य किसी का वंचन नहीं करते। परन्तु वे समझते नहीं ॥ ९ ॥ उनके मानसों में रोग है पुनः ईश्वर ने उनके रोग की बृद्धि की। अनृत भाषण के कारण उनके लिये दारुण कष्ट है ॥ १० ॥ जब उनसे कथन करते हैं कि पृथ्वी पर उपद्रव न करो तो कहते हैं कि हम तो शांति प्रसारक हैं ॥ ११ ॥ सचेत हो वही उपद्रवी हैं परंच समझते नहीं ॥ १२ ॥ और जब उनसे कहा जाए श्रद्धा करो जैसे और लोग श्रद्धा किये हैं तो कहते हैं क्या हम भी उसी प्रकार श्रद्धा करें जिस प्रकार मूर्ख श्रद्धा किये हैं। सावधान! वे ही मूर्ख हैं परन्तु समझते नहीं ॥ १३ ॥ और जब आस्तिकों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम तो विश्वासी हैं। और जब अपने असुरों के साथ एकान्त में बैठते हैं तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ हैं हमतो उनसे (मुसल्मानों से) उपहास करते हैं ॥ १४ ॥ ईश्वर उनका उपहास करता है और उनके उपद्रव में उन्हें आकर्षित करता है वे बहकते हैं ॥ १५ ॥ ये ही हैं जिन्होंने उपदेश के स्थान में अज्ञान क्रय किया फिर उन के क्रयण ने लाभ न दिया। और उन्होंने शिक्षा लाभ

न की ॥ १६ ॥ उनका दृष्टान्त ऐसा है कि एक व्यक्ति ने वन्हि प्रदीप्त की । जब उस का मंडल दीप्तिमान हुआ तो ईश्वर ने उन का प्रकाश हरण किया और उन्हें अन्धकार में त्याग दिया और वे कुछ नहीं देखते ॥ १७ ॥ बधिर हैं । मूक हैं । अन्धे हैं वे नहीं फिरेंगे ॥ १८ ॥ अथवा (उनका दृष्टान्त ऐसा है कि) गगन से वृष्टि हो । उसमें अन्धकार, गर्जना, और विद्युत हो और कड़क के कारण मृत्यु भयात् वे स्वकर्णों में अंगुलियां डालें और परमेश्वर काफ़िरों को घेर रहा है ॥ १९ ॥ समीप है कि बिजुली उनके नयन (दर्शन शक्ति) हरण कर ले जाय। जब वह उन पर उल्लसित होती है तो वे उस में चलते हैं और जब उन पर अन्धकार होता है तो वे स्थिर रहते हैं और यदि ईश्वर चाहे तो उनके श्रोत्रों और नेत्रों को हरण कर ले यतः ईश्वर प्रत्येक वस्तु का शासक है ॥ २० ॥

रु० ३ य—हे जनता, अपने प्रभु, जिसने तुम्हें तथा तुम्हारे पूर्वजों को उत्पन्न किया, की वन्दना करो स्यात् तुम परहेज़गार बन जाओ (बच जाओ) ॥ २१ ॥ उसने भूमि को तुम्हारी शय्या बनाया और नभ को गृह (छत) बनाया फिर नभोमंडल से वारि को उतारा जिससे तुम्हारे खाने के लिये मेवे (फल) उपजें अतः तुम उसके (कई एक) शरीक (तुल्य) मत बनाओ और तुम जानते हो ॥ २२ ॥ और जो वाणी हमने अपने दास (मुहम्मद) पर उतारी है । यदि तुमको उसमें कुछ संशय हो तो तुम उसके सदृश एक सूरत ले आओ । और ईश्वरातिरिक्त अपने साथियों को बुलाओ यदि तुम सच्चे हो ॥ २३ ॥ पुनः यदि ऐसा न करोगे और कदाचित् न कर सकोगे । तो उस अनल से भीत होवो जिसका ईंधन मनुष्य तथा पत्थर है । और काफ़िरों के लिये बनाई गई है ॥ २४ ॥

उनको शुभ संवाद सुना जो विश्वास लाए । और शुभ कार्य्य किये । उनके वास्ते उद्यान हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं । जब वहां का कोई फल खाएंगे तो कहेंगे कि यह तो वही है जो हमने पूर्व खाया था । और उनके समीप वहां एक ही प्रकार के फल लाए जाएंगे और वहां उनके लिये स्वच्छ स्त्रियें होंगी और वे सर्वदा वहां निवास करेंगे ॥ २५ ॥ ईश्वर मत्कुण का उतवा. उस से उत्कृष्ट वस्तु का उदाहरण देने से लज्जित नहीं होता । फिर वे जो विश्वासी हैं जानते हैं कि वह ठीक उनके प्रभु की ओर से है । परन्तु जो काफ़िर हैं वे कहते हैं कि ईश्वर का दृष्टान्त से क्या प्रयोजन । बहुतों को मार्गभ्रष्ट करता और बहुतों को उपदेश देता है । केवल कुकर्मी इस्से मार्गच्युत होते हैं ॥ २६ ॥ जो ईश्वर से प्रण कर प्रतिज्ञा भंग करते हैं और जिस मेल की आज्ञा ईश्वर ने दी उसको ध्वंस हैं । और उस में उपद्रव करते हैं । वे हानि उठावेंगे ॥ २७ ॥ तुम ईश्वरास्तित्व को क्यों अस्वीकार करते हो तुम मृत थे उसने तुम्हे जीवन दिया । पुनः तुम्हें मार डालेगा फिर जिलायेगा पश्चात् तुम उसी की ओर लौट जाओगे ॥ २८ ॥ ईश्वर वही है जिसने तुम्हारे लिये पृथिवी के समग्र पदार्थों को उत्पन किया फिर उसने आकाश की ओर आरोहण किया । और सप्त आकाश निर्माण किये वह प्रत्येक पदार्थ का ज्ञाता है ॥ २९ ॥

रु० ४ र्थ— और जब तेरे प्रभु ने फ़रिश्तों से कहा था कि मैं पृथ्वी पर एक प्रतिनिधि (ख़लीफ़ा) बनाना चाहता हूं । तो वह बोला । क्या तू उसमें उस पुरुष को रक्खेगा जो वहां उपद्रव करे और रक्तपात करे हम तेरे गुण श्रवण कराते और पवित्रता का वर्णन कराते हैं । फ़रमाया (कहा) मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते ॥ ३० ॥ और उसने आदिम को सर्व वस्तुओं के नाम सिखाये । फिर उनको फ़रिश्तों के समक्ष उपास्थित

किया और कहा तुम मुझे नाम बतलाओ यदि तुम ऋत भाषी हो ॥ ३१ ॥ वह बोले तू पवित्र है । हम उतना जानते हैं जितना तूने हमें सिखाया । और तू बोद्धा-कार्य्यदक्ष है ॥ ३२ ॥ आज्ञा की भो आदिम ! तू उनको इनके नाम बतला फिर जब आदिम ने उनको इनके नाम बता दिये तब फ़रमाया कि मैंने कहा न था कि मैं आकाश पृथ्वी की निहित वार्त्ताओं को जानता हूं और (वे सब) जो तुम प्रगट करते हो और जो तुम छिपाते हो मुझे ज्ञात हैं ॥ ३३ ॥ और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदिम को साष्टांग प्रणाम करो तो सबने साष्टांग प्रणाम किय सिवा इबलीस के । और उसने स्वीकार न किया और गर्व किया और वह काफ़िरों में से था ॥ ३४ ॥ और हमने आदिम से कहा कि तू सपत्नीक स्वर्ग में निवासकर और तुम उभय उस्में जहां चाहो यथेष्ठ खाओ परन्तु उस वृक्षके समीप न जाना कि तुम दोनों अत्याचारी (अपराधी उतवा अन्यायी] न हो जाओ ॥ ३५ ॥ पश्चात् शैतान ने उन दोनों को उससे फिसलाया (आज्ञा भंग कराई) और दोनों को वहां से (कि जिस्में वे थे) बहिःकरा दिया और हमने कहा तुम सब नीचे उतरो । तुम एक दूसरे के शत्रु हो और तुम्हें एक नियत समय पर्य्यन्त पृथ्वी पर रह कर कार्य्य सम्पादन करना होगा ॥ ३६ ॥ फिर आदिम ने अपने प्रभु से कुछ बातें सीखीं तब वह [ईश्वर] उसपर कृपालु हुवा क्योंकि वही क्षमा करने वाला (फिरानें वाला) दयालु है॥३७॥ हमने कहा तुम सब यहां से नीचे उतरो फिर जो मेरी ओर से तुमको शिक्षा मिलेगी तो जो कोई मेरी शिक्षा पर चलेगा। उन्हें नतो कुछ भय होगा और न दुःख॥३८॥ और जिन्हो ने अनङ्गीकार किया और हमारे चिन्हों को झुठलाया वही नरक के निवासी थे और सर्वदा उस्में बास करेंगे ॥ ३९ ॥

रु० ५ म—हे इसराईल की सन्तानों ! मेरे उस अनुग्रह को स्मरण करो जो कि मैंने तुम पर किया और तुम मेरे साथ किये हुए प्रण को पूर्ण करो तो मैं तुम्हारे साथ किये प्रण को निभाऊंगा । और मुझ से भय करो और उसको स्वीकार कर लो जो कुछ मैंने उतारा है । उस वस्तु को सच बता जो तुम्हारे पास है । और तुम पहिले उसे अनङ्गीकार करने वाले न बनो । और मेरी आयतों के बदले थोड़ा मूल्य न लो और मुझ से भय करते रहो ॥ ४० ॥ और सत्य को असत्य में न मिलाओ । और नाही जान बूझ कर सत्य को छिपाओ ॥ ४१ ॥ और नमाज़ पढ़ो और चत्वारिंशतांश दो । और झुकने वालों के साथ झुको ॥ ४२ ॥ क्या तुम लोकों को पुण्य करने की आज्ञा देते हो । और अपने प्राणों को विस्मरण किये जाते हो । और तुम तो "पुस्तक" पढ़ते हो । फिर क्या नहीं समझते ॥ ४३ ॥ और संतोष तथा नमाज़ के साथ सहाय्य मांगो । हां ! गुरु तो हैं परन्तु उन पर नहीं जिनके अन्तःकरण द्रवित (नम्रता करने वाले) हैं ॥ ४४ ॥ जिन्हें यह विचार है कि उन्हें अपने प्रभु से मिलना हैं और उनको उसी की तरफ़ लौटना है ॥४५॥

रु० ६ ए—भो इसराईलापत्य ! मेरा उस कृपा को स्मरण करो जो मैंने तुम पर की । और यह कि विश्व भरके मनुष्यों से मैंने तुझे श्रेष्ठता दी ॥ ४६ ॥ और उस दिन से डरो जिसमें कोई किसी को कुछ भी सहायता न दे सकेगा और न उसकी ओर सिफ़ारिश स्वीकृत होगी और न उस स्थान में कुछ लिया जावेगा और न उनको सहायता मिलेगी ॥ ४७ ॥ जब हमने तुझे फ़िरऔन के लोगों से छुड़ाया जो तुमको महा कष्ट देते थे जो तुम्हारी सन्तानों का वध करते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे और उसमें तुम्हारे प्रभु की ओर से महती परीक्षा (आपत्ति) थी ॥ ४८ ॥ और जब हमने तुम्हारे हेतु महासागर को चीरा और तुम्हें रक्षित

किया और फ़िरऔन के पुरुषों को निमज्जित किया और तुम अवलोकन कर रहे थे ॥ ४९ ॥ और जब हमने चत्वांरिशत रात्रि की मूसा से प्रतिज्ञा की थी फिर तुमने उसके पीछे वत्स निर्माण किया और तुम अत्याचारी थे ॥ ५० ॥ फिर उसके पश्चात् हमने तुम्हें क्षमा कर दिया किस्यात् तुम धन्यवाद दो ॥ ५१ ॥ जब हमने किताब और "फ़ुर्क़ान" (सिद्धियां) मूसा को दीं किस्यात् तुम उपदेश ग्रहण करो ॥ ५२ ॥ और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा । हे जाति वालों । तुमने वत्स निर्माण से अपने ऊपर अत्याचार किया है अब अपने सृष्टा के सन्मुख झुकियो । और अपनी प्राणों का अन्त कर दो । तुम्हारे उत्पादक के विचार में तुम्हारे लिये यह कार्य्य श्रेष्ठ है। फिर उसने तुम पर ध्यान दिया कि वही क्षमा करने वाला दयालु है ॥ ५३ ॥ और जब तुमने कहा हे मूसा हम तुझ पर विश्वास न करेंगे । जब लों ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन न कर लें । फिर तुम्हें विद्युत ने पकड़ा और तुम देख रहे थे ॥ ५४ ॥ फिर हमने तुम्हारे मृत्यु के पश्चात् तुम्हें जीवित किया स्यात् तुम कृतज्ञ बनो ॥५५॥ और हमने तुम पर अभ्र की छाया की और "मन वसलवा" तुम पर उतारा कि तुम हमारी दी हुई अच्छी वस्तुओं को भोगो। हमारी तो कुछ हानि (अत्याचार) न की पर तुम अपने ही प्राणों पर अत्याचार करते रहे ॥ ५६ ॥ और जब हम ने कहा कि तुम इस नगर में प्रवेश करो और यत्र कुत्र यथेष्ट सुरक्षित हो। खाते फिरो और साष्टांग दण्डवत् करो और "हित्तन" उच्चारण करते द्वार में प्रविष्ट होवो तो हम तुम्हारे पाप क्षमा करेंगे । और पुण्य शीलों को हम अधिक भी देंगे ॥ ५७ ॥ परञ्च उन अन्याय शीलों ने कही गई वार्ता को दूसरी वार्ता से परिवर्तित किया तब हम ने उन अन्याय शीलों पर उनके आज्ञोल्लंघन के कारण आकाश से कष्ट भेजा इस लिए कि पापिष्ठ थे ॥ ५८ ॥

रु० ७ म—और जब मूसा ने अपनी जाति के हेतु जलार्थ प्रार्थना की तो हमने कहा अपनी यष्टिका से पत्थर पर प्रहार कर। तब उसी से द्वादश स्रोत बह निकले। और सब मनुष्यों ने स्वस्वघाट का प्रत्याभिज्ञान कर लिया। ईश्वर की ओर से सम्पति का उपभोग करो और पान करो और पृथिवी पर उपद्रव न करते फिरो ॥ ५६ ॥ जब तुमने कहा हे मूसा ! हम एक खाने पर तुष्ठ न होंगे। तू हमारे हेतु परमेश्वर से प्रार्थना कर कि वह हमारे लिये वह प्रकट करे जो पृथिवी से उपजते हैं शाक और ककड़ी और गोधूम और मसूर तथा पियाज़। तो उस (मूसा) ने कहा क्या तुम अच्छी वस्तु का तुच्छ वस्तु से परिवर्तन करना चाहते हो किसी नगर (मिश्र) में उतर जाओ। जो मांगते हो वह तुमको मिलेगा वे असन्मान तथा दीनता को प्राप्त हुए। और ईश्वरीय मन्यु को लेकर फिरे। यह इस लिये कि वह ईश्वरीय चिन्हों को अनङ्गिकार करते थे। और वृथा नबियों का घात करते थे। इस लिये अनाज्ञाकारी थे और सीमोल्लंघन कर जाते थे ॥ ६० ॥

रु० ८ म—निस्सन्देह जो लोग विश्वास लाए और जो लोग यहूदी हुए और नसारा हुए और साएबीन (अविश्वासी तथा ग्रहपूजक) हुए। जो कोई उसमें से ईश्वर पर तथा अन्तिम दिनपर विश्वास करे और सुकर्म करे उनका बदला (मज़दूरी) उनके प्रभु के पास है ! न उनको कुछ भय है और न वे शोकातुर होंगे ॥ ६१ ॥ जब हम ने तुम से प्रतिज्ञा कराई और पर्वत (तूर) को तुम्हारे ऊपर उठाया कि हमने जो तुम को दिया है उसे हठात् पकड़ो और जो उसमें हैं तुम उसे स्मरण करते रहो स्यात् तुम भयभीत होवो ॥ ६२ ॥ इसके पश्चात् तुम लौट गये। सो यदि ईश्वर की कृपा और दया तुम पर न होती तो तुम हानि उठाने वालों में में से हो जाते। और तुम उन पुरुषों को अवश्य जानते

जब कोई किसी की सहायता न कर सकेगा और न उसका बदला स्वीकृत होगा और न कोई सिफ़ारिश उपयोगी होगी आर न उनकी सहायता की जायगी ॥ ११६ ॥ और जब इबराहिम की उस प्रभुने कई बातों में परीक्षा की और इबराहीम उस परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ (उसने वह बातें पूरी की) तब स्वयम्भु ने कहा निस्सन्देह मैं तुझे लोंकों का नेता बनाऊंगा। उसने कहा कि मेरी संतति को भी। फरमाया कि मेरी प्रतिज्ञा अत्याचारियों के लिये नहीं ॥ १२० ॥ जब "खानः काबः" को लोगों के लिये सम्मिलित होने का स्थान तथा रक्षा गृह निश्चय किया और (कहा कि) इस स्थान को इबराहीम के नमनस्थान (नमाज़ की जगह)' बनाओ और हमने इबराहीम तथा इसमाईल से प्रतिज्ञा की थी कि उभय मेरे गृह की प्रदक्षिणा करने वालों, पारायण करने वालों तथा घुटनों पर हाथ धरे हुये झुक कर पाठ करने वालों साष्टांङ्ग दंडवत करने वालों के लिये (मूर्तियों से) पवित्र रक्खो ॥ १२१ ॥ और जब इबराहीम ने कहा कि हे प्रभो! इस नगर (मक्कः) को शांति गृह बना और उसके अधिवासियों में से जो ईश्वर पर तथा अन्तिम दिवस पर विश्वास करें, उन का फल खिला, तब स्वयंभू ने कहा, कि जो कोई कुफर करें उसको भी मैं थोड़े दिनों तक लाभ दूंगा फिर उसे नारकीय कष्ट में विवश करूंगा और वह गर्हित स्थान है ॥ १२२ ॥ और जब इबराहिम और इसमाईल, गृह (काबः) की नीवे उठा रहे थे। (तो कहते थे) हे प्रभो! हमारी ओर से इस को स्वीकार कर और तू ही सुनता और जानता है ॥ १२३ ॥ और हमारे प्रभो! तू हम दोनो को अपना आज्ञाकारी बना। और हमारी संतति में से भी एक मुसलमान उम्मत (निकाल) और हमें पूजापद्धति (हज्ज यात्रा विधि) सिखा और हमें क्षमाकार। क्यों कि तू ही क्षमाकार कृपालु है १२४

हे हमारे प्रभो ! और उनके मध्य उन्ही में से एक रसूल उठा जो तेरी आयतें उन पर पढ़े और उन्हें किताब और नीति सिखाए । और उन्हे सुधारे । तू ही सब से बलशाली नीतिवान् है ॥ १२५ ॥

रू०१६शम-मूर्खातिरिक्त कौन है जो इबराहीम के मत से मुख मोड़ेगा । हम ने उसको संसार में श्रेष्ठ बनाया और निस्सन्देह न्याय के दिन पुण्यशीलों में है ॥ १२६ ॥ जब उस (इबराहीम) को उसके प्रभु ने कहा कि तू मुसलमान (आज्ञाकारी) हो जा । वह बोला कि मैं जगतों के प्रभु के हेतु मुसलमान हुआ ॥ १२७ । और इबराहीम ने स्वपुत्रों को तथा याकूब ने यह अन्तिमाज्ञा (स्वीकारपत्र वसीयत नामा) की कि ऐ मेरे पुत्रो अल्ला ने तुम्हारे लिये एक मत (दीन) चुन लिया है । तुम अवश्य मुसलमानी (आधीनता) में प्राण विसर्जन करना ॥ १२८ ॥ क्या तुम उपस्थित थे । जब याकुब की मत्यु हुई । जब उसने अपने बेटों से पूछा (कहा) कि तुम मेरे पश्चात् किसकी पूजा करोगे । उन्होंने कहा कि हम तेरे अल्ला तथा तेरे पिता पिता-महों इबराहीम, इसमाईल तथा इसहाक के अल्ला की । जो अद्वैत ईश्वर हैं उसका पूजन करेंगे । और हम उसके आधीन [मुसलमीन] हैं ॥ १२९ ॥ वह एक उम्मत [सम्प्रदाय] थी जो बीत गयी । जो वे कमा गए उनका हुआ और जो तुम चयन करते हो वह तुम्हारा है । तुम से उन के कृत्यों के विषय पूछा न जाएगा ॥ १३० ॥ वह कहते हैं यहूदीया नसारा बनो । तब आदेश मिलैगा । तू कह नही हमने इबराहीम का मार्ग स्वीकार किया है ! जो एक पक्ष का मानने वाला था और अनेकेश्वरवादी (पाषाणपूजक) न था ॥ १३१ ॥ तुम बोलो हम ईश्वर पर विश्वास करते हैं । और उस (वचन) पर जो हम पर उतारा गया है और उस

पर जा इबराहीम, इसमाईल, इसहाक, याकूब और उसके द्वादश पुत्रों पर उतरा था और जो मूसा और ईसा को मिला था और जो कुछ सर्व नबियों को उनके प्रभु की ओर से दिया गया। हम उनके मध्य किसी में भी अन्तर नहीं करते और हम उसके आधीन (मुसल्मान) हैं ॥ १३२ ॥ पस यदि वे भी विश्वास करें तो उन्होंने शिक्षा पाई। और यदि मुख मोड़ें तो वे आग्रही हैं और उन के प्रति तुझे ईश्वर पर्य्याप्त हैं और वह श्रवण करता और जानता है ॥ १३३ ॥ और (हमने) ईश्वर का वर्ण (लिया) है और किसका वर्ण ईश्वर से उत्कृष्ट है ? और हम उसीकी वन्दना करते है ॥ १३४ ॥ तू कह! क्या तुम हम लोगो से ईश्वर विषयक विवाद करते हो। वह हमारा और तुम्हारा प्रभु है। हमारे कर्म हमारे लिये। तुम्हारा कर्म तुम्हारे लिये। और हम तो उसी के मित्र है ॥ १३५ ॥ क्या तुम कहते हो कि इबराहीम, इसमाईल इसहाक और याकूब और उसके बारह पुत्र यहुदी थे या नसारा। तू कह। क्या तुम अधिक ज्ञानी हो या अल्ला। और उस की ओर से उस के पास था और उस व्यक्ति से अधिक अत्याचारी कौन है। जिसने उस साक्ष्य को जो ईश्वर की ओर से उस के पास था छिपाये और ईश्वर तुम्हारे कामों से अविदित नहीं है ॥ १३६ ॥ यह एक सम्प्रदाय था जो बीत गया। जो वह कमा गए उनका हुआ और जो तुम कमाते हो तुम्हारा हुआ। तुमसे उनके कर्म्म विषयक प्रश्न न होगा ॥ १३७ ॥

द्वितीय पारः

२० मन्जिल।१।पारः।२। सूरते वक़्र।२।रुकुअ। १७। आयत।१४३।२७।

रु०-१७—शीघ्र ही खल पुरुष कहेंगे, कि किस चीज़ ने मुसल्मानों को उनके उस क़िवले से फिराया जिस पर वह थे। तू कह, ईश्वर ही की पूरव और पश्चिम है। वह जिस को चाहे सन्मार्ग प्रदर्शित कर दें॥ १३८ ॥ इसी तरह हम ने तुम को अच्छा सम्प्रदायी बनाया। ता कि तुम सब लोगों पर और रसूल तुम पर साक्षी हो॥ १३९॥ वह किवला जिस पर तू पूर्वकाल में था। हमने केवल इस वास्ते नियत किया था। ता कि हम को यह ज्ञात हो जाए। कि कौन रसूल के आधीन रहेगा और कौन प्राङ्मुख होगा। और यह कार्य्य यद्यपि गुरु है तथापि उन के लिये जिन को ईश्वर ने उपदेश दिया है। और स्वयंभू ऐसा नहीं जो तुम्हारी श्रद्धा नष्ट करे वह तो मनुष्यों का मित्र और कृपालु है॥ १४०॥ हम ने तेरे मुख को फिरना आकाश में देखा: सो हम अवश्य तुझे उस किवले की ओर फेर देंगे जिस से तू प्रसन्न है। पस अपना मुख "मस्जिद ऐ हराम की ओर फेर ले। जहां तुम हो। अपना मुख उसकी तरफ फेरो। और पुस्तक पंथी जानते हैं कि, कि यह (अर्थात् कावे की ओर मुख करना) कर्तव्य है उन को प्रभु की ओर से और ईश्वर उन के कार्य्यों से असावधान नहीं है १४१ यदि तू पुस्तक पंथियों के पास सारे चिन्ह लावे वह तेरे किवले के आधीन न होंगे और न तू उन के किवला के आधीन होगा॥ और उन में से भी कई एक दूसरे के किवले के आधीन न होंगे। यदि तू ज्ञानप्राप्त्यनन्तर उन की इच्छाओं के आधीन होगा तो तू अत्याचारी होगा॥ १४२॥ जिन्हें हम ने पुस्तक दी है। वह उस को (मुहम्मद को) ऐसा जानते हैं जैसा कि वे अपने वेटों को पहचानते हैं। और उन में से एक समूह जान बूझ कर सत्य को छिपाता है॥ १४३॥ सत्य तेरे

प्रभु की ओर से है। तू तो संशय करने वालों में से न हो॥ १४४॥

रु०-१८—प्रत्येक के लिए एक दिशा है जिस की तरफ वह मुख करता है। सो सुकर्मों की ओर धावन करो। जहां तुम होगे। ईश्वर तुम सब को एकत्रित कर लायगा। निस्सन्देह ईश्वर सर्व वस्तुओं का अधिष्ठातृ देव है॥ १४५॥ और जहां से तू निकले। "मसजिद-ए हराम" की ओर मुख फेर। तेरे प्रभु की ओर से यही सत्य है॥ और ईश्वर तुम्हारे कृत्यों से अबोध नहीं है॥ १४६॥ जहां से तू निकले "मस्जिद-ए-हराम" की ओर मुख कर। और जहां तुम हो अपने मुख उसी की ओर करो। ता कि लोक तुम पर कोई उदङ्कना न करे। परन्तु जो लोग उन में अत्याचारपरायण हैं (वे तुम से अवश्य कलह करेंगे) सो तुम उन से न डरो) सो तुम उन से भय भीत न हूजियो। इस लिए कि मैं अपना अनुग्रह तुम पर पूर्ण करूं॥स्यात् तुम शिक्षा ग्रहण करो॥ १४७॥ जैसा कि हम ने एक रसूल तुम्हारे ही मध्य में से तुम में से भेजा वह हमारी आयतें तुम पर पड़ता है (सुनाता है) और तुम्हें सुधारता है। और तुम्हें पुस्तक, नीति और ऐसी बात बतलाता है जिन से पूर्व तुम अज्ञ थे॥ १४८॥ सो तुम मुझे स्मरण करो में तुम्हें स्मरण करूंगा। और मेरे कृतज्ञ रहो कृतघ्न न बनो॥ १४९॥

रु०-१९—विश्वासियो। संतोष तथा नमाज़ से शक्ति लाभ करो निस्सन्देह ईश्वर सन्तोषियों का सहायक है॥१५०॥ जो लोग ईश्वर के हेतु वध किये जाते हैं। उनको मृत न कहो। अपितु वे जीवित हैं। परन्तु तुम उससे अज्ञ हो॥१५१॥ और किञ्चिन्मात्र क्षुधा, भय और प्राणों, सम्पत्तियों और फलों की हानि से हम तुम्हारी परीक्षा करेंगे॥ और उन संतोषकों को शुभ सूचना दे १५२ कि जब उन पर आपत्ति आती है तो कहते हैं कि हम

दैवी सम्पत्ति हैं। और उसी (ईश्वर) की ओर जाने वाले हैं ॥१५३॥ ऐसे ही मनुष्यों पर उनके प्रभु की ओर से कृपा और अनुग्रह है और वही उपदेश पर (चलते) हैं ॥१५४॥ निस्सन्देह "सफा" और "मरवा" (पर्वत) ईश्वरीय चिन्हों में से हैं। तो जो कोई "खाना-काबा" की यात्रा और "उमरा" करे। उसको उन दोनों की प्रदक्षिणा करना पाप नहीं। और जो स्वरुचितः पुण्य करे। ईश्वर कृतज्ञ और जानता है ॥१५५॥ जो लोग हमारी उतारी हुई दलीलों और शिक्षाओं को गुप्त करते हैं पश्चात उसके कि हम उनको लोकोपदेशार्थ पोथी में वर्णन कर चुके हैं। तो ईदृश पुरुषों पर ईश्वर भी धिक्कार करता है। और धिकारने वाले भी उसे धिक्कारते हैं ॥ १५६ ॥ परन्तु जिन लोगों ने पाश्चाताप किया और सन्मार्ग पर आगए। और उन बातों को खोल दिया तो ऐसे ही लोगों को मैं क्षमा करता हूं। और मैं क्षमा करने वाला कृपालु हूं ॥ १५७ ॥ जो लोग काफिर हुए उन पर ईश्वर की, और फरिश्तों और सब मनुष्यों की धिक्कार है। १५८ ॥ वह सर्वदा "धिगवस्था" में रहेंगे न उन का कष्ट लघु होगा न उन को अवकाश मिलेगा ॥ १५९ ॥ और तुम्हार ईश्वर एक ईश्वर है कोई पूज्य नहीं सिवाए उस क्षमा करने वाले कृपालु के ॥ १६० ॥

रु०-२०।—निस्सन्देह, आकाशों और पृथिवी की उत्पत्ति में, और दिन और रात्रि के परिवर्तन में, और नाव में जो नदी में लोगों के लाभार्थ चलती है। और उसमें जो ईश्वर ने आकाश से पानी उतारा। और उससे पृथिवी को उसके मरे पीछे जीवित किया। और प्रत्येक प्रकार के पशुओं को विकीर्ण किया और वायु के फेरने में, और अभ्र में जो पृथिवी और आकाश के मध्य में काबू किया हुआ है। बुद्धिमान पुरुषों के निमित्त चिन्ह है ॥ ॥ १३२ ॥ और लोग में कतिपय ऐसे भी हैं। जो ईश्वरा-

तिरिक्त ततुल्य की कल्पना करते हैं वे उन से ऐसा प्रेम करते हैं जैसा कि ईश्वर से करना चाहिए । और जो विश्वासी हैं । वे ईश्वर के प्रेम में इन से बढ़े हुए हैं । यदि यह अत्याचारी उस समय का अनुभव करें कि जिस समय यातना भोगेंगे (और जो उस समय अनुभव करेंगे उस का इस समय जान लें) कि सर्व शक्तिसम्पन्न ईश्वर ही है और यह कि ईश्वर अत्यन्त पीड़ा देनेवाला है । १६२ ॥ और जब वे लोग अपने आधीनों के कष्टों को देखेंगे तो उनकी आधीनता से घृणा कर सर्वप्रकार के सम्बन्धों से मोचन हो जाएंगे ॥ १६३ ॥ और यह आधीन पुरुष कहेंगे कि यदि पुनः हम संसार में जाए तो उन से विमुख होंगे । जैसे यह यहां हम से विमुख होगए हैं । इसी प्रकार ईश्वर उनके कर्म्मों का पश्चाताप उन्हीं पर प्रकट करेगा । और वे अग्नि से बहिः न निकलने पावेंगे ॥ १६४ ॥

रु०-२१—लोगों । पृथिवी में जो भक्ष्य और पवित्र है उसे भक्षण करो और शैतान के पग पर न चलो । वह तुम्हारा खुला शत्रु है ॥ १६५ ॥ वह तुम्हें केवल पाप कराने की निन्द कार्य्यों की, और ईश्वर के सम्बन्ध वे बातें जो तुम्हें अज्ञात है बोलने की । आज्ञा देता है ॥ १६६ ॥ और जब उन से कहा जाता है । कि जो ईश्वर ने उतारा है उसी के आधीन हो जाओ । तो वे कहते हैं कि जिन बातों पर हमने अपने पितृ पितामहादिक को पाया है । उसी पर आचरण करेंगे ॥ भला क्या उस अवस्था में भी जब कि हमने उनके पितृपितामहादिक न बुद्धिमान हों और न शिक्षालब्ध हों ॥२६७॥ काफिरों का उदाहरण एक ऐसे अज्ञानी मनुष्य का है कि जो पशुओं को पुकारता है । और वह केवल चिल्लाना और शब्द श्रवण करता हो। बधिर शुका अन्ध हैं वे न समझेंगे ॥ १६८ ॥ विश्वासियों । पवित्र वस्तुओं में से जो हम ने तुम्हें दी हैं । भक्षण करो और ईश्वर को धन्यवाद दो । यदि तुम उसके

वास्तविक पूजक हो ॥ १६६ ॥ मृतदेह, रुधिर, और शूकर का मांस और जो ईश्वरके नामपर न मारा गया हो । आवधेय है (अर्थात अल्लाके नामके सिवाए वध किया) गया हो परन्तु जो मनुष्य ऐसी अवस्थामें कि अनाज्ञाकारी, और विद्रोही नहीं । विवश हो जाए । उसपर उसका भक्षण कुछ पाप नहीं है । निस्सन्देह ईश्वर सब से महान् क्षमा करने वाला दयालु है ॥ १७० ॥ वह जो पुस्तक में से ईश्वर की उतारी हुई आज्ञा को छिपाते । और उसके बदले में तुच्छ मूल्य स्वीकार करते हैं । वे सब उदरों में अग्नि भक्षण करते हैं । ईश्वर उन से न्याय के दिन बात न करेगा और न उन्हें पवित्र करेगा और उन के लिए कष्ट की पीड़ा है ॥ १७१ ॥ उन्होंने उपदेश के बदले मार्ग भ्रष्टता, और युक्ति के स्थान में कष्ट खरीदा है । सो किस वस्तु ने उन को अग्नि पर सन्तुष्ट किया ॥ १७२ ॥ यह इस कारण से है कि ईश्वर ने सच्ची पुस्तक उतारी और जिन्होंने इससे मत भेद किया व अत्यन्त हठधर्मी हैं ॥ १७३ ॥

रु०-२२—पुण्य केवल इतनाही नहीं कि तुम अपने मुख पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेरो, परन्तु पुण्य उसका है जो स्वयंभू पर और अन्तिम दिन, और ईश्वरीय दूतों, और पुस्तकों और नबियों पर विश्वास करें । यद्यपि सम्पत्ति प्रिया है तथापि सम्बन्धियों, अनाथों, दीनों, यात्रियों और भिखारियों को दे ; और (लोगों का) दासत्व मोचन करने में व्यय करे । और नमाज पढ़ें । और चत्वारिंशतशदे । और प्रतिज्ञा करके निभाने वाले, और वह जो कष्टों और आपत्तियों में और समरकाल में धीर हैं वही सच्चे और धर्मात्मा हैं ॥ १७४ ॥ विश्वासियों । हतपुरुष (वध किए गए] के घात का बदला तुम्हारा कर्तव्य माना गया है । स्वतन्त्र के स्थान में स्वतंत्र, दास के स्थान में दास, स्त्री के स्थान में स्त्री फिर जिसको उसके भाई से कुछ क्षमा हो जाए । तो

ओ३म्

मञ्ज़िल शब्द का नोट नम्बर ॥ १ ॥

वेद और क़ुरान के विभागक्रम की समानता

इस में कोई सन्देह नहीं कि क़ुरान प्रधानतया (इसमें लग भग ११४ भाषाओं के शब्द पाए जाते हैं जिन में से कुछ संस्कृत के भी हैं) एक अरबी भाषा की पुस्तक है। जिस को आज से १३३२ वर्ष पूर्व मुहम्मद महोदय ने ईश्वरीय ज्ञान के नाम से प्रसिद्ध किया और इस समय तक भी सार्व देशिक मुसल्मान इसी बात पर आरूढ़ हैं कि यह ईश्वरीय पुस्तक है। परन्तु इन सब बातों की आलोचना न करते हुए यदि हम उस के आंतरिक और वाह्य विभाग क्रम पर गूढ़ दृष्टि डालें। तो यह बात स्पष्टतया सिद्ध हो जायगी। कि क़ुरान कर्त्ता वेदों को अवश्य जानता और मानता था। यहीं तक नहीं। किन्तु वह वेदों के कई एक भागों का सच्चा भक्त तथा उपदेष्टा भी प्रतीत होता है। (इस का प्रमाण हम विस्तार पूर्वक सूरतें यूसुफ में पाठकों की भेंट करेंगे।) हां यह सम्भव है कि उस समय के लोगं पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष के कारण जो महाभारत के घोर युद्ध से फलतः उत्पन्न हो चुका था। वह वेदों को एसा न मानते हों जैसा कि आधुनिक आर्य्य लोग मानते हैं। परन्तु उन के वेदानुयायी होने में किंचिन्मात्र भी सन्देह नहीं। जिस का प्रबल प्रमाण यह है कि क़ुरान कृत ने वेदों के प्राचीन क्रम का अक्षरशः याथातथ्येन क़ुरान में अनुकरण किया है। यथा क़ुरान की मञ्ज़िल, ऋग्वेद का मण्डल, क़ुरान की सूरत, ऋग्वेद का सूक्त; क़ुरान का पारः, ऋग्वेद का वर्ग; क़ुरान का रुकूअ, ऋग्वेद का अनुवाक़; क़ुरान की आयत्त, ऋग्वेद की ऋचा; । यद्यपि कौराणिक और वैदिक भाषाएं परस्पर भिन्न हैं

तथापि उन में एतादृशी समानता पाई जाती है कि जिस को कोई भी बुद्धिमान् अनङ्गीकार नहीं कर सकता। और यदि ध्यान पूर्वक देखा जावे। तो केवल उपरोक्त विषय में ही समानता नहीं। अपितु वैदिक परिभाषाओं के बहुत से शब्द किञ्चिन्मात्र परिवर्तित रूप से आप को कुरान में मिलेंगे। और इतना परिवर्तन वाञ्छनीय भी था यतः वेद संस्कृत में है और कुरान अरबी में। क्या "मण्डल" और "मञ्जिल" "सूक्त" और "सूरत" में आप कोई भेद समझते हैं। मेरे विचार में यदि आप अरबी और संस्कृत भाषाओं के व्याकरणों का किञ्चिन्मात्र भी ज्ञान रखते होंगे। तो यह आप को भली भांति निश्चय हो जावेगा कि ज, ड, अथवा ड, ढ, प्रायः समान स्थानीन हैं जिस के कारण वैदिक विभाग के मण्डल सूक्त कुरान की मञ्जिल और सूरत में अति समानता पाई जाती है।

अरब देशीय वेदों से अनभिज्ञ न थे।

इस के उपरान्त हम वेद और कुरान के विभागों की पारस्परिक सामानता के पोषक कतिपय एसे नामों को आप के सामने उपस्थित करते हैं कि जिन को अरब देशीय विद्वान प्राचीन समय में वेद और कुरान उतवा सामान्यतया प्रत्येक निबन्ध के लिए प्रयुक्त करते थे। (इस की विस्तार पूर्वक विवेचना हम किसी अन्य समय पर करेंगे परन्तु आप की जानकारी के लिए कतिपय नामों को हम यहां पर भी उदाहरण रूपेण उद्धृत किए देते हैं। कि जिस्से आप को पूरा २ विश्वास प्राप्त हो जावे) यथा अरबी रक्क् और वर्क़ संस्कृत में ऋक् या ऋग्, और वर्ग ("झलां जशोऽन्ते") इस सूत्र से क् को ग् होता है) के अपभ्रंश हैं जो प्राचीन समय में अरब देशीय लोग पुस्तकों के लिए प्रयोग करते थे। प्रमाण के लिए देखो ". क़ामूस" जिल्द ३री बाबुलक़ाफ़

फ़स्लुलवाव पृष्ठ १५१ व ११९) और 'ग़यासुल्लुगात' प्रभृति अरबी कोश सम्बन्धी प्रामाणिक ग्रन्थ जिस से साफ स्पष्ट रूप से विदित होता है कि वे लोग संस्कृत साहित्य से आवश्य सुचित्त थे कि जिन्हों ने उस भाषा की पुस्तकों के नाम अक्षरशः अर्थात् ज्यों के त्यों अपनी भाषाओं में नक़ल कर दिय वर्न संभव था कि वह भी अन्य भाषा वालों की तरह कोई और ही नाम नियत करते परन्तु यह उन के वेदानुयाई होने का कारण था कि जिस ने उन को अपने असली नाम रखने पर मजबुर किया। रही यह बात कि संस्कृत भाषा के ऋग् का रक्क़ और वर्ग का वर्क़ क्यों कर बन गया। सो इस का सीधा और सरल उत्तर यह है कि विशेष रूपेण अरबी भाषा में "ग" का प्रयोग नहीं होता। इस लिए उन्हों ने "ग" के स्थान में "क़" का ग्रहण किया। इस के पश्चात् यदि कोई अनभिज्ञ पुरुष यह प्रश्न करे कि "ग" के स्थान में "क़" प्रयोग क्यों नहीं किया। तो उस का उत्तर यह है। कि "क़" के प्रयोग से पुस्तक अर्थ लब्ध नहीं होता। फिर यदि कोई बुद्धिमान सोच विचार के यह कहे। कि भला इस का क्या प्रमाण है कि अरब देशाधिवासी "ग" के स्थान में "क" का प्रयोग करते थे। तो इस का उत्तर हमारी ओर से यह है। कि "इराक़" देश में लोग सामान्यत आज कल भी "क़" का उच्चारण "ग" ही करते हैं। उदाहरण के हेतु कतिपय शब्दों को उद्धृत करता हूं। यथा—"गाल" (कहा), "गुल" (कहो) "गुम" (उठ) "गिद्दाम" (आगे) "गवल" (पहिले) और इसी "ग" के स्थान में, 'श्याम, दामिक़, मकः और मदनिः निवासी "क़" का प्रयोग करते हैं। यथा—'गाल-क़ाल'-'गुल-क़ुल,' 'गुम-क़ुम' और 'गिद्दाम-क़ुद्दाम,' 'गवल-क़बल' इत्यादि। अब आप को निश्चय होगया होगा

कि अरबी लोगों में "ग" का 'क़' और "क" का "ग" इस समय भी प्रचलित है। अतएव हमारा पक्ष सिद्ध हुआ कि अरब देशीय वेद और उसकी पवित्र भाषा से ऐसे कोरे न थे कि जैसा वर्तमान इतिहास वेत्ताओं का विचार है किन्तु वह वेद और उस की वाणी को ऐसा जानते थे कि जिस तरह जननी अपनी संतान को और यदि आप मुझ को थोड़ी देर के लिये क्षमा करें तो मैं यह कहने का साहस करता हूं कि उनका कुरान जिस प्रकार वेदों की प्रशंसा करता है इस प्रकार आप के शिखा सूत्रधारियों की पुस्तकें भी न करती होंगी बस इससे आपको यह बात भली प्रकार विदित हो सकती है कि अरब देशीय लोग किस प्रकार वेदों पर आरूढ़ थे कि जिन्हों ने अपने प्राचीन ऋष्यों के सत्य मार्ग के परिवर्तन के पश्चात् भी अपनी धार्मिक पुस्तकों के नाम को न छोड़ा।

हमारे उपरोक्त पक्षका समर्थन और कुरान कर्ता की मंज़िल संख्या

अब रही मञ्ज़िलों की संख्या सो सामान्यता वर्तमान कुरान ["वर्तमान" विशेषण इस लिए दिया गया है कि कतिपय मुसल्मानों के विचारानुसार "असल कुरान" समरना की गुफा में गुप्त हैं जो क़यामत" के समीप "इमाम मेहदी" के साथ प्रकट होगा] में ७ मंज़िलें मानी जाती हैं। परन्तु यदि "शीअः" (नाम पंथ देखो हमारी बनाई पुस्तक "मुसलमानों के ३१४ सम्प्रदाय) लोगों के विचारानुसार (इन लोगों का यह विश्वास है कि "असल कुरान" ४० पारा था जिसमें से मुहम्मद महोदय के श्वशुर श्री उस्मान ने दश पारः निकाल दिए थे) उस्मान महाशय के निकाले हुए १० पारों को भी इस में सम्मिलित कर दिया जावे तो ऋग्वेदीय १०

मण्डलों का सच्चा अनुकरण हो जावेगा । और इधर कर्मकाण्ड की अपेक्षा से यजुर्वेद के ४० अध्यायों का भी ठीक ठीक पता चल जाएगा । क्योंकि जब ३० पारः कुरान में ७ मंजिलें हो सकती हैं । तो ४० में अवश्यमेव १० की संख्या पूरी हो जाएगी । और हमारा अभिप्राय भी यही है । कि कुरानकारकर्ता ने बहुत से अंशों में वेदों के अनुकरण की चेष्टा की है । यद्यपि वह बेचारा इस महान् कार्य को सम्पूर्णतया सम्पादन न कर सका । तथापि वह अपने प्राचीन वेदों का गौरव स्थिर करने में अवश्य सफल हुआ । इस से भी अधिक मैं आगे चल कर आप को बताऊंगा, कि कुरान किस प्रकार वेदों की प्रशँसा करता है । यह सब का सब एक कुरान प्रणेता के वेदानुयायी होने का ही परिणाम है कि कुरान में इस प्रकार समानता पाई जाती है

आपके और उनके हार्दिक भावों का एक छोटा सा चित्र

अन्यथा यह कब सन्भव था कि एसे देशनिवासियों की पुस्तक आपके वेदों की महिमा गान करे । कि जिसके अनुयायी भवादश शुद्ध विचार महानुभाव हों कि जो उनके दर्शन मात्र से ही अपने को प्रायश्चित के भागी समझें । अस्तु । यह आपकी बुद्धिमता है परन्तु मैं यह कह सकता हूं कि उन को आप से कदापि यह आशा न थी । और अब भी वह लोग, यह कहते हुए दिखलाई देते हैं कि " हे-

जाति—" हम तुम्हारे हो चुके ।
तुम हमारे हो न हो ॥ १ ॥

परन्तु याद रखिए—" दौरे अय्याम न इक तौर पै चलते देखा । इसको हर रोज़ नए रंग बदलते देखा ॥ " यह बात नितान्त सत्य और समँञ्जस है । और वह दिन अति समीप हैं । कि जब उनके लज्जाशील और साहसी पुरुष अपने प्राचीन वैदिक

धर्म को ग्रहण करते हुए आप की सम्पूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करेंगे। क्योंकि उन में प्राचीन ऋषियों का रक्त और धार्मिक पीड़ा का सच्चा जोश है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि वे आप की, और आपकी आने वाली सन्तानों की पूरी २ रक्षा करेंगे॥ क्योंकि अरबी की एक कहावत प्रसिद्ध है। "आशिब्लो इब्नुल असद" अर्थात् सिंह का बच्चा सिंह होता है। अतएव अरबी के छन्द

"क़द क़ामतिल्क़यामतो या अय्यो हुन्न्याम।
हुब्बु अनिल्मनामे व कुफ़फ़ु अनिल्हराम॥ १॥
फ़रुम्हो हीन यख़ तले सुलाकिरन फी इह्तेज़ाज़े।
वल्ख़ सो हीन यफतरे सुस्से दो फी इब्तिसामे॥ २॥
फ़न्नजमु हीन लाह क़दिस्तवलूद बिदुजा।
वल्बद्रो हीन तन्म कंदूअ ग़तम्माबिज़्ज़िलामे॥ ३॥
फ़शैबो क़द् तबल्लज वस्सुन्हो क़द वदा!
या क़ौमे कद न सहतो कुल्युम वस्सलामु॥ ४॥

भावार्थ—हे प्रमाद निद्राग्रस्तो! उठो जागो। और अपने हस्तों को अत्याचारवलम्बन से संकुचित करो। क्योंकि 'क़यामत' (मृत्यु के अनन्तर उठना अर्थात् जीना] प्रकट हो चुकी। भाले शत्रुओं को देख करके मानो उद्विग्न हो रहे हैं। सिंह स्व आखेट स्थल में आल्हाद से प्रफुल्लित हो रहे हैं। जो नक्षत्र ज्योतिर्मय हैं वे तमोमय होते हैं। शशि भी अपनी पूरी ज्योति और प्रकाश के अनन्तर तमसाभिभूत होता है। वार्द्धिक्य (नैर्बल्य) का आसितत्व मानो प्रातः (मुदिता) काल की उषा है। इस लिए हे जाति! अपने संकीर्ण हृदयों को विशाल बनाओ और आजही से ऋषिवर दयानन्द और महा बलिदाता धर्म्मवीर पं० लेखराम के रक्त से सिंचित पौधों को अपने हृदय और मस्तिष्क रूपी गमलों में पोषण करने की प्रतिज्ञा करो। यतः संसार उनसे सुगन्धित समीर के झोंकों से, फिर एक वार दया रूपी पृथिवी और प्रेम रूपी आसनों पर बैठकर एक ध्वनि से अपने परम पिता परमात्मा की महिमा गान करते दीखें। और आशा है कि वे दिन शीघ्र आएंगे। किसी कवि ने कहा है।"यही आश अट कि यो रहे

अति गुलाब की मूल। आई हैं भंवर वसन्त ऋतु इन डारन दिए फूल"। इसका भाव यह है कि गुलाब की जड़ों को देख कर यही आश लगी रहती है। कि वसन्त ऋतु में फिर भी वही (वेहा वही वही हां वही जो पांच सहस्र वर्ष पूर्व संसार के दिमग़ों को सुगन्धित करते थे) फूल आएंगे। मैं कहता हूं और डंके की चोट से कहता हूं कि वह फूल वेदों की प्रेम वाटिका में लग चुके हैं परन्तु इस वृद्ध भारत के मन्द भाग्य से स्वार्थी और लोभी मालियों के हाथों कई एक तो मसले जाकर प्रचण्ड समीर की भेंट हो चुके। और शेष अवशिष्ट उनकी गर्हित और अपवित्र ओढ़नियों से डांपे जाकर यद्यपि शुष्क नहीं हुए तथापि कुम्हला अवश्य गए कि जिनकी कुम्हलाहट और मुरझाहट पर आज आप का बूढ़ा भारत दो दो अश्रुपात करता दृष्टिगत होता है। शोक है कि ३० कोटि भारत वासियों में से एक भी गैरतमन्द ऐसा न निकला जो उनके दीर्घ निश्वसित आर्तनाद को अनुभव करता। जो इस वृद्ध भारत को शान्ति प्रद होता। परन्तु आज हम अपने दुःखाभिभूत भारत को आनन्द समाचार सुनाते हैं। " भारत जवान तेरे मरक़द से उठ रहे हैं। आहों को तेरी सुन सुन दिल दिल में घुठ रहे हैं। बस अब वह तेरे समग्र कष्टों और क्लेशों को हर लेंगे। और

"इज्जत को तेरी भारत हरगिज़ न जाने देंगे।
नूरे नज़र वह तेरे क़दमों में ला धरेंगे ॥ २ ॥
सदियों की जुदाइयां फिर दूर वह करेंगे।
ऋषियों की वैरान कुटियां माऽमूर वे करेंगे ॥ ३ ॥
गर जुल्म करेंगे दुश्मन अहले वफा वो होंगे।
फैज़ जहान बन कर आलिम मशहूर होंगे ॥ ४ ॥

प्रियपाठक! मैं न तो कोई कवि हूं और नहीं ऐसे समाज में उत्पन्न हुआ हूं जो इस के सीखने सिखाने को अच्छा समझता हो। इस लिए सम्भव है कि मेरे विचार प्रकट करने की शैली में बहुत त्रुटियां रह गई हों। अतः आशा है। आप उन दोषों से उपेक्षा करते हुए मेरे हार्दिक भावों की ओर ध्यान देकर उन के समझने के निमित्त सचेष्ट

होंगे। ता कि जिस महान् यज्ञ कार्य्य को मैंने आरम्भ किया है उस को मैं विधि पूर्वक आप के समक्ष समाप्ति कर सकूं। और यह भी सम्भव है कि कहीं कहीं मेरी लेखनी से कोई शब्द आपके ज्ञान के प्रतिकूल निकल गया हो। सो उस को भी "ख़ताए खुर्दान् मताए बुज़ुर्गान्" के नियमानुसार क्षमा कीजिएगा। ताकि "सरअंजामें फ़ैरोज़ शादान् शवी। बईन पोरे नाज़ादः नाज़ान शवी॥"; १॥

क़ुरान की पारायण विधि और मञ्जिल संख्या में भेद

इसके बाद हम "इमाम नौवी" के "रिसालः तुल्बयान फी आदा बिल्क़ुरान" से ७ मंजिलों के नाम और उनकी पारायण पद्धति का कुछ थोड़ा सा विवर्ण आप पाठकों की भेंट करता हूं। जिससे आप को विदित हो जावे कि इस्लाम मतानुगन्ताओं ने क़ुरान को ७ मंजिलों में क्यों विभक्त किया। सर्वसाधारण के लिए इस बात का लिख देना अनुचित न होगा कि जिस तरह हमारे आर्य्य जाति के बहुत से अङ्ग वेदों के पाठ मात्र कोही अपनी मुक्ति का साधन समझते हैं ठीक इसी प्रकार मुसल्मानों के हां क़ुरान का पारायण कैवल्य मे कारण समझा जाता है। फलतः उस का परिणाम यह हुआ कि बहुत से मुसल्मानों ने उस की पाठ विधि को अपने, अपने सुभीते के लिए भिन्न भिन्न प्रकार से नियत किया। १ कोई पुरुष प्रति दिवस केवल ३ पारा का पारायण किया करते थे; २ और प्राय लोग महुम्मद महोदय तथा उसके गण (गण उसको कहते हैं जिसने मुहम्मद महोदय को देखा है और उनके सम्प्रदाय में मरा हो) और "ताबई" [ताबई उसको कहते हैं कि जिसने मुहम्मद साहिब की किसी बात को ऐसे गण से सुन कर वर्णन किया होकि जिसने स्वयं भी मुहम्मद साहिब से सुना हो) लोगों के समय (इस समय सम्बन्धि मुहम्मद

साहिब ने एक हदीस वर्णन की है! "खैरुल्कुरूनेकरनी; सुम्मल्ल ज़ीन यलौन सुम्म वसुम्मलज़ीन य लौन सुम्म अर्थात—सब कालों से मेरा समय श्रेष्ठतम है। उसके उत्तर मेरे गणों का, और तदनन्तर उनके गणों का" इस हदीस में समय वाचक क़रन शब्द आया है। जिसकी अवधि विद्वद्वर मुजद्दिदुदीन मुहमद फ़ैरो ज़ाबाद्धी ने अपने "क़ामूस" जिल्द चहारुम बाबु ल्नून फसलुल्क़ाफ में इस तरह वर्णन की है। कि क़रन दश या बीस या तीस वा चालीस या पच्चीस या साठ या सत्तर या अस्सी या सौ या एक सौ बीस वर्ष का होता है परन्तु समुचित बात यह है कि ४० वर्ष का होता है और क़तिपय ३० वर्ष समुचिततर मानते हैं। इसकी विस्तार पूर्वक व्याख्या हम किसी अन्य उचित समय पर करेंगे)। में एक एक पारा का पारायण किया करते थे। (३] और कुछ लोग एक दिन रात में आठ बार कुरान का पाठ कर लिया करते थे। (४) "इमाम अबु हनीफ़ा" के विषय में लिखा है कि साधारण तया तो वह एक बार कुरान" प्रति दिन समाप्त कर लिया करते थे। परन्तु "रमज़ान (यह मुसलमानों का अतीव पवित्र और पुनीत मास है जिसका वर्णन रोज़ों के विषय में आएगा) के मास में ६१ कुरान को अवश्य ही समाप्त कर लेते थे। ३०, दिनों में और ३० रात्रियों में और एक नमाज़े तरावीह (इसका वर्णन भी रमज़ान मास के साथ किया जाएगा क्योंकि इसका उसी के साथ सम्बन्ध है) में इमाम के साथ पढ़ा करते थे। (५) और कतिपय लोग दो बार कुरान का प्रति दिन पारायण कर लिया करते थे॥ (६) और कई लोगों का विचार था कि ३० से ४० दिन के भीतर इसे समाप्त कर देना चाहिए अन्यथा इसके पाठ का पुण्य न होगा। चालीस दिवस की संख्या बताती है कि किसी समय कुरान के ४० पाराः थे अन्यथा एमे असम्बद्ध नियम बनाने की आवश्यकताही क्या थी। (७) और कई लोगों ने

एसी कोरी गप्प हांकी है कि जिसको कोई बुद्धिमान स्वीकार नहीं कर सकता । यथा अली महोदय के सम्बन्ध में लेख है । कि वह अश्वारोहण समय एक रिक़ाब से दूसरी रिक़ाव में पैर धरते समय तक समग्र क़ुरान का पारायण कर जाते थे। यदि यह बात विश्वासनीय है तो क़ुरान का अधिकांश कल्पित स्वीकार करना होगा अन्यथा इस समय किसी मुसल्मान को आचरणेन इसका प्रमाण देना होगा अन्यथा हमारे समीप इसकी शेखचिल्ली अथवा गुलबकावली की निर्मूल गाथाओं से अधिक क्या कुछ प्रतिष्ठा होगी (८)

॥ मन्ज़िलों की संख्या में मौहम्मद विद्वद्गण का पारस्परिक मतवैपरीत्य ॥

और साधारणतया लोग ७ दिन में क़ुरान का पारायण कर लिया करते थे। अतएव इसी कारण से ७ मन्ज़िलें (मन्ज़िल = अर्थात् जाए नुज़ूल = उतरने की जगह अर्थात् नित्य पाठ का विरामस्थल) नियत की गई थीं, वस्तुतः इन ७ में भी बहुत कुछ विरोध है यथा कई लोगों के समीप " फ़म्मी व शौक़ " अर्थात् फ़े से सूरते फ़ातह: 'मीम' से मायदह, 'ये' से यूनुस, 'वे' से बनी इसराईल, 'शीन' से शुअरा 'वाव' से वस्साफ़ात. और 'क़ाफ़' से 'क़ाफ़' तक ७ मन्ज़िलें मानते हैं। और कई महाशयों के समीप " फ़ायतूइज्जू " अर्थात् "फ़" से सूरते फातह, " अलिफ " से इनआम, 'ये' से यूनुस, 'तोए' से ताहा. ऐन से अनकबूत, 'ज़' से जुमर' और 'वाव से वाक़िअः से अभिप्रेत है । इसका स्पष्ट तात्पर्य्य यह है कि सप्ताह के ७ दिनों में इस विधि से पाठ किया जाता है ! अर्थात् शनिवार को सूरते फातेह से मायदह तक, दूसरे पक्षानुसार सूरते इनआम पर्य्यन्त प्रथम मंजिल, आदित्यवार को मायदह से दूसरे

पद्मानुसार इनआम से यूनुस तक द्वितीय मंज़िल, और चन्द्रवार यूनुस से बनी इसराईल, २ रे पद्मानुसार सूरते ताहा तक तृतीय मंजिल मंगल के दिन बनी इसराईल से शुअरा २ रे पद्मानुसार ताहा से अनकबूत तक. ४थे मंजिल और बुद्धवार को शुअरा से वस्साफ़ात, २ पक्षानुकूल अनकबूत से ज़ुमर तक ५ वीं मंजिल, और बृहस्पतिवार को वस्साफ़ात से सूरते क़ाफ़ पर्य्यन्त २ य पद्मानुसार ज़ुमर सूरते वाक़िअः तक षष्ठी मन्ज़िल और शुक्रवार सूरते क़ाफ से २ य पद्मानुसार वाक़िअः से कुरानान्त पर्य्यन्त ७वीं मन्ज़िल और कतिपय पुरुष " फ़म्मी वशौक के स्थान में फ़न्नी वशौक अर्थात सुरते मायदः के बदले सूरते निसा तक ही मन्ज़िल गिनते हैं। और फ़ायत इज्ज़ू के बदले 'अहज़ाव' अर्थात १ मज़िल शूक़ का पाठ फातिह से इनआम तक ६ पारहैः २ मं० शीन का पाठ इनआम से यूनुस तक ५॥ पाराः ३ री मज़्ज़िल आदित्य का पाठ युनुस से ताहा तक ३॥ पारा ४ थी मन्ज़िल सोम का पाठ ताहा से अनकबूत तक ४। पारः ५ वी मँज़िल मंगल का पाठ अनकबत से जमुर तक एक रुकुअ ३ पारः ६ मं० बुद्ध का पाठ ज़मुर से वाक़िअ तक ३ रु कुअऊन ४ पारा और ७ वी मं० बृहस्पति का पाठ वाक़ीअ से २ रुकअ कम ३॥ पारा अर्थात कुरानावसान पर्य्यन्त. ७ वी मँज़्ज़िल और कतिपय मनुष्यों के समीप अहज़ाव (हिज़ब' का बहुबचन अर्थ-विरद नियत पाठ) कुरान के उन साठ भागों का संग्रह है। कि जो मन्सुरे दव्वानकी ख़लीफ़ा ए-अब्बासिअः के राजत्व काल में साधारण मुसलमानों के सुभीते के निमित नियत किया गया था। ताकि सर्व साधारण लोग प्रत्येक भाग को छः २ दिवस के हिसाब से एक वर्ष में सम्पूर्ण कुरान को भली प्रकार कंठस्थ कर सकें। यद्यपि यह बात सत्य है कि मन्सूर दव्वा-नकी ने कुरान के पारायणार्थ उसको साठ विभागों में

विभक्त करा दिया था। परन्तु आजकल के समयमें इसका ठीक २ पता लगाना कि वह भाग कहां से कहां तक नियत किए गए थे। अति कठिन और दुस्तर प्रतीत होता है। क्योंकि उनके सुपुस्यवस्थापन्न धार्मिक संरक्षक केवल स्वप्न ही में नहीं अपितु स्वामूल्य प्राणों को भी विसर्जन करने के लिए उद्यत हैं। परन्तु शोक से कहना पड़ता है। कि उन साहस शुन्य और विन राज्य के राजा, धार्मिक संरक्षक महात्माओं की इस कायरता और असावधानता के कारण मृत्यु भी उन से कोसों दूर धावन करता है। यतः जब उन्हों ने अपने जीते जी अपने आत्माओं के आधार, सत्य मार्ग का आदर करना न सीखा तो उनके मरने से इसके अतिरिक्त कि वायु मण्डलस्थ प्राणियों उतवा भूमिस्थ जीवों को उनके दुर्गन्ध युक्त परमाणुओं से कष्ट पहुंचे और क्या हो सकता है। अतः मृत्यु भी उनके निमन्त्र को स्वीकार नहीं करता। और वे इसी योग्य भी हैं। जब कि उन्हों ने न स्वयं लाभ उठाया और न आने वाली सन्तानों के हेतु कुछ शेष छोड़ा कि जिससे वें सत्या सत्य विवेचन के योग्य हो सकतीं। अस्तु। यदि इस रोने को ही रोया जावे तो मैं कह सकता हूं कि एक पूर्ण आयु और कई दफतरों की आवश्यकता होगी कि जब जाकर कहीं उपालम्भ समाप्त होंगें। फिर भी संभव है कि उनकी धार्मिक त्रुटियों का सर्व तो भावेन पूर्ण चित्र विचित्र न कर सकें। क्योंकि जिस प्रकार उन्हों ने धर्म्म मर्यादा भङ्ग करने में यत्न किए हैं। उस प्रकार किसी भी जाति ने साहस नहीं किया था। फलतः इन्हीं की कृपाओं का फल है कि कुरान को ईश्वरीय पुस्तक मानते हुए भी उसकी इस प्रकार धज्जि यें बखेरीं। कि जिनके वास्तविक भागों का पता तक लगना दुस्तर होगया है। और यदि कहीं किञ्चिन्मात्र परामर्श मिलता भी है। तो उसके परस्पर शतशः विरुद्ध सम्मतिएँ भी उपस्थित

हैं । कि जिन में से किसी एक को प्रामाणिक या अप-माणिक कहना न केवल अत्यन्तही दुरुह आपितु असंभव प्रतीत होता है। उदाहरणार्थ इन्ही "अहज़ावों" को ले लीजिए कि जिनमें बहुत कुछ परस्पर विरोध पाया जाता है । यदि इसी विरोध को पूर्ण रुपेण उद्धृत कर देवें तो आप को केवल उनके पढ़ने में कई एक मास की आवश्यकता होगी । इस लिए हम उन सब को छोड़ते हुए केवल एकही पक्षको आप के समक्ष उप-स्थित किए देते हैं । कि जिससे आपको यह भली भान्ति विदित हो जावे कि इस "अहज़ाब" और उपरोक्त "अहज़ाब" में कितना आकाश पाताल का अन्तर विद्यमान है । इस से कुछ ही पूर्व हमने एक "अहज़ाब" के ७ सात रोज़ में पारायण करने की विधि उद्धृत की थी । और दूसरी निम्न लिखित ६० भागों में आपके सन्मुख उपस्थित की जाती है। अवलोकन कीजिए ।

(१) हिज़ब—सूरते फातिह से सूरते बकर के ५ रू० के ४२ आ० तक

२	बकर के	१३ रु० की	६३ आ० तक
३	,, ,,	२१ ,, ,,	१७ ,, ,,
४	बकर के	२९ रु० की	५३ आ० तक
५	,, ,	३८ ,, ,,	४६ ,, ,,
६	आलेइमरान	५ ,, ,,	६५ ,, ,,
७	,, ,,	१३ ,, ,,	७४ ,, ,,
८	,, ,,	२० ,, ,,	७२ ,, ,,
९	निसा	८ ,, ,,	५३ ,, ,,
१०	,,	१७ ,, ,,	६० ,, ,,
११	,,	के अन्त	
१२	मायदह	,, ७ ,,	५० ,, ,,
१३	,,	,, १५ ,,	६३ ,, ,,
१४	इनआम	,, ९ ,,	७८ ,, ,,
१५	,,	१२	७६ ,, ,,
१६	आराफ़	५	४८

१७	,,	१६	६३
१८	,, ,,	के अन्त	
१६	अनफ़आल	के अन्त	
२०	तोबा	७ रु०	५८ आ० तक
२१	,,	१५ ,,	६२ ,,
२२	यूनुस	४ ,,	७५ ,,
२३	हुद	४ ,,	८२ ,,
२४	सूरते यूसुफ़ के	२ रु०	६७ आ० तक
२५	,,	१० ,,	८६ ,, ,,
२६	इबराहीम	२ ,,	६४ ,,
२७	हुजर	६	१४१
२८	नहल	१२	८६
२६	इसराईल	५	६१
३०	कहफ़	४	६१
३१	मरियम	२	१०२
३२	ताहा	३	१५२
३३	अंबिया	१४	११०
३४	हज्ज	५	६६
३५	योमेनून	४	१००
३६	नूर	६	१८८
३७	फुरकान	के अन्त तक	
३८	शुआरा	के अन्त तक	
३६	कसस	१	१०४
४०	,,	के अन्त तक	
४१	रुम	३	६५
४२	सजेदा	के अन्त तक	
४३	अहज़ाव	८	५६
४४	फ़ातिर	२	१२०
४५	वस्साफ़ात	१	१३२
४६	स्वाद	४	२२२
४७	ज़ुमर	के अन्त तक	

४८	मोमिन	के अन्त तक	
४६	शुअरा	४	५०
५०	दुखान	१	१३५
५१	अहकाफ़	के अन्त तक	
५२	हुजरात	२	५०
५३	नजम	१	१७७
५४	वाक़िआ	३	२४२
५५	अशर	१	८४
५६	तग़ाबुन के अन्त तक		
५७	नून के अन्त तक		
५८	मुदस्सिर के अन्त तक		
५६	इन्फ़ितार के अन्त तक		
६०	.कुरान समाप्ति पर्य्यन्त ॥		

और इन कतिपय विरोधों के पश्चात् इतना बतला देना उचित समझता हूं कि वर्तमान कुरान की मन्ज़िल संख्या "फम्मी वशौक़" (दहने मन दर क़िरअते कुरान बा शौक अस्त-अर्थतः कुरान के पारायण में मेरा मुख अभ्यस्त है ।) के आधार पर मानी जाती है । अतः मैं भी अपने अनुवाद में इसी का अनुकरण करूंगा । जिस से किसी महाशय को आक्षेप का अवकाश न रहे ।

वेद और कुरान के आचार्य्यों की संख्या ।

अब हम इन मन्ज़िलों के विभाग क्रम और उन की संक्षेप संख्या इयत्ता के पश्चात आप को कुरान के उन आचार्य्यों के नाम बतलाते हैं । कि जिन्हों ने इसके प्रचारार्थ बड़े बड़े कष्ट सहन करके सुदूर देशों में जाकर भिन्न २ स्थानों में अपने आश्रमों की स्थापनाएं की और तदनन्तर उनके होनहार और योग्य अनुयायों ने पौराणिक मतावलम्बियों के संसर्ग से वैदिककाचार्य्यों की समानता के लिए ठीक वही नीति वरती कि जिसको किसी समय में जैन और बौद्ध मतावलम्बियों ने प्रयुक्त किया था । क्योंकि इस संसार में परिवर्तन करने वाली व्यक्तियों के लिये यह बहुत ही

आवश्यक है कि वह जिस जाति में परिवर्तन करना चाहें प्रथम उस जाति के धार्मिक शास्त्रों और उनके संचालकों की " खाना पुरी" करें। अन्यथा उनका अपने विचारनुसार सफल होना बहुत ही दुस्तर आपितु असं भव है। इस लिए हम मुसल्मानों की इस नीति की प्रशंसा किए विना नहीं रह सकते। कि उन्हों ने इस कार्य्य में पूरी २ सफलताप्राप्त की॥

आप यह वार्ता सुनकर अति अचम्भित होंगे। कि जितनी संख्या पौराणिक लोगों ने वैदिकाचार्य्यों के लिए निश्चित की थी ठीक उतनी ही संख्या कौराणिक लोगों ने कौराणिकाचार्य्यों के लिए नियत की। यद्यपि कौराणिक जगत् में कुराण के ज्ञाता इनसे भी अधिक प्रचण्ड पण्डित हो चुके हैं कि जिन्हों ने इस के प्रचारार्थ अपने सर्वस्व को अर्पण कर दिया। तथापि उनके नाम इतने प्रशंसनीय नहीं समझे जाते। कि जितनी इन आश्रमों की स्थापना करने वालों के समझे जाते हैं। क्योंकि इनके शिरों पर तो केवल समानता की धुन सवार थी। इस लिए उन्हों ने यह यत्न किया कि जिस प्रकार पौराणिक लोगों ने वेद विषय में उन लोगों को आचार्य्य माना है कि जिन्हों ने वेदों के अध्ययनाध्यापन और नियमों के नियत करन में समय अतिवाहित किया। इसी विध्यनुसार इन लोगों ने भी उनही विद्वानों को आचार्य्य माना कि जिन्हों ने इस्लामी सृष्टि में कुरान के पठन पाठन की विधि प्रचलित की। और यह विद्वान अपने विभागक्रम अर्थात् प्रख्याति की अपेक्षा से दो श्रेणियों में विभक्त हैं। एक वह जो शुमूस अर्थात् अधिक प्रसिद्ध हैं। और दूसरे बुदूर अर्थात् जो अल्प प्रसिद्ध हैं। इन दोनों दलों के आचार्य्यों मे से प्रत्येक के दो २ शिष्य हैं। कि जिनके नाम क्रमेण नीचे उल्लिखत करते हैं।

नाम आचार्य्य	स्थान आश्रम	नाम शिष्य	वर्ग
१. इमाम नफ़िअ	मदीनः	कालवन, वर्ष	शुमूस
२. ,, इब्ने कसीस	मक्का	वज्जी, कुम्बेल	,,
३. ,, अबू उमर	बसरः	दौरी, सीय्यै	,,
४. ,, इब्ने आमिर	शाम	हुश्शाम, इब्नेजकवान	,,
५. ,, आसेम	कूफ़ा	अबूबकर, हफ़्स	,,

६. „ हमज़ा	„	खलफ़े वज्ज़ार. अबूईसा	„
७. „ इमाम कसाई	कूफा	अबुल हारिस, दौरी	शुमूस
८. „ अबू जाफ़र	मदीना	ईसा, इब्ने हुम्माद	बुदूर
९. „ इब्ने महीस	मक्का	बज्जी, इब्ने शम्बूद	„
१०. „ याक़ूब	बसरा	रदीस अबुलहसन	„
११. „ सलमान आमश	कूफ़ा	बतूम, शम्बूदरी	„
१२. „ चलफ़े बज्जाज	„	इस्हाके दर्राक, इद्रीस	„
१३. „ हसन	बसरा	दौरी, ईसा संकफी	„
१४. „ यहयातरमज़ी	„	अबु अय्यूब, इब्ने फ़र्राः	„

इनके मुक़ाबिले के लिये अब हम वेद और उनके आचार्य्यों की संख्या उपस्थित करते हैं।

नाम आचार्य्य	नाम शिष्य	किस वेदका
पैल मुनि	इन्द्र प्रमति, वाषकल्य	ऋग्वेद
वाषकल्य	बौद्धय, याज्ञवल्क्य, प्राशर, अग्निमित्र	ऋग्वेद
इन्द्र प्रमति	माण्डूक्य, शाक	ऋग्वेद
वेदमित्र	मुद्गल, गोखल्य, वाष्य शाल्य, शिशुरू	ऋग्वेद
शाकमुनि	क्रोञ्च, वैतालिक, लाक, कृत	ऋग्वेद

वाषकल्य	काला यनि गार्ग्य जब	ऋग्वेद
	ये तीन भी वाशकल्प के शिष्य माने जाते हैं।	
वैशमपायन	याज्ञवल्क्य वैसे तो इन के शिष्य बहुत बतलाये जाते हैं परन्तु मुख्य यही हैं।	यजुर्वेद
जैमिनि	शुमन्तु	सामवेद
शुमन्तु	सुकर्मा	सामवेद
सुकर्मा	हिरण्य नाभ	सामवेद
हिरण्य नाम	लोकाची कुयोमि कुसीदी लांगली	सामवेद
	इन्हीं को पोष्पाञ्जि के शिष्य भी कहा जाता है।	
शुमन्तु मुनि	एक गुप्त नाम	अथर्व वेद
गुप्त नाम	देवदर्शी पथ्य	अथर्ववेद
देवदर्शी	मौदूग ब्रह्मबली शौल्यकायिनी पिप्पलाद	अथर्ववेद
पथ्य	जाजलि कुमुद शौनक	अथर्ववेद

शौनक	बभरू सैंधवपन	अथर्ववेद

इन में से यदि विसगुम नाम और पोष्पञ्जि आदि नामों को छोड़ दिया जावे। तो शेष पूरे ४२ नाम रह जाते हैं इस के अतिरिक्त कई लोगों ने वेदों के आचार्यों की संख्या इस प्रकार भी वर्णन की है।

नाम आचार्य्य	नाम शिष्य	किस वेदका
पैल मुनि	इन्द्र प्रमति	
	वाषकल्य	ऋग्वेद
वाषकल्य	बौद्धय	
	याज्ञवल्क्य	
	प्राशर	ऋग्वेद
	अग्नि मित्र	
इन्द्र प्रमति	माराडुक्य	ऋग्वेद
माराडुक्य	शाकल्प	
	शुभरू	ऋग्वेद
	देवामित्र	
यास्य	मुद्गल	
	शाल्य	ऋग्वेद
	गोखिल्य	
	शिशुरू	
शाल्य	जातिकरण	ऋग्वेद
जातिकरण	बलाक पैल जावान व्रज	ऋग्वेद
वैशम पायिन	[याज्ञवल्क्य	सामवेद
जैमिनि	[शिवकर्मा	सामवेद
	पौषपञ्जी	
शिवकर्मा	हिरण्यनाभ	सामवेद

	आवन्स्य	
पौषपंञ्जी	लोगाची	
	मांगली	
	कल्प	
		सामवेद
	उसीद	
	कुची	
सौमन्त	गवन्त	अथर्ववेद
गवन्त	पथ्य	
	वेद दश्क	अथर्ववेद
वेददश्क	पैलायनि	
	मौदुस	अथर्ववेद
	सूक्लायनि	
पथ्य	कुमुद	
	सन्क	
	जाजिलि	अथर्ववेद
सन्क	वभरू	
	सैंधवायन	अथर्ववेद

अब यदि इन वैदिक तथा कौराणिक आचार्य्यों की संख्य में से वेदव्यास से पढ़ने वाले जैमिनि, वैशम्पायन और सोमन्त और पुनः पुनः आने वालों के नामों को छोड़ दिया जाव तो कौराणिक आचार्य्य की ४२ की संख्या का पूरा पूरा पता लग जाएगा और यदि इन तीन नामों को भी मिला लिया जावे, तो इधर जैद, अबीविनकाब, और अब्दुला विन मसऊद के ३ नाम उपस्थित हैं। और यदि आप इसके आतिरिक्त वेदव्यास और ब्रह्मा जी को भी सम्मिलित कर ४७ की संख्या पूरी करनी चाहें। तो इधर इस्लामानयायियों के समीप कुरान के अधिष्ठाता अल्ला और मुहम्मद महोदय विराजमान हैं। और यदि हमारे आर्य्य भ्राता अग्नि, वायु, आदित्य, और अंगीरः को भी इनमें सम्मिलित कर लें। तो इधर मुसल्मानों केहां भी ४ मुल्हम वह व्यक्तिएं मानी जाती हैं। कि जिनसे इस्लामी, ईसाई, यहुदी, आदि सम्प्रदायों में इल्हाम

का होना स्वीकार किया जाता है । अर्थात: जिस प्रकार सृष्टि के आरम्भ में केवल इन चारही ऋषियों द्वारा वेदों का प्रकाश होना स्वीकार किया जाता है । इसी प्रकार इन लोगों में भी मुख्य मुल्हम लोग चारही माने जाते हैं ।

कतिपय समानता का दृश्य ।

फलत: इन लोगों ने वैदिक धर्मानुआइयों से तुलयता करने के निमित्त कोई उपाय बाकी नहीं छोड़ा । यदि आप वेदों से पञ्च महायज्ञ प्रमाणित कीजिएगा तो वे ठीक इन्ही की अनुकृति कुरान से पांच नमाज़ें प्रस्तुत कर देंगे । और यदि हमारे पौराणिक भाई उनको नीचा दिखलाने के लिए काशी अयोध्या द्वारिका, हरिद्वार, कान्ति अवन्ति मथुरा, आदि सप्त पुरी दिखलाएंगे तो वे मक्का, मदीना बेतुल्मुकदस, काज़मैन, करबला, नजफ, और मशहद्द का परामर्श देंगें । यदि हमारे पौराणिक भ्राता अपने २४ अवतारों की तुलना करना चाहेगें तो यह अपनी २४ पालकियों का निशान बतलावेंगे और यदि आप गरुड़ रूपी वाहन लायेंगे तो वे बुराक़ की जीन दिखलायेगे यदि आप कृष्ण का घोड़ा उपस्थित करेंगे । तो वहां अली का दुलदुल दृष्टिगत होगा । और यदि आपके हनुमान जी ने सूर्य्य को निगल कर सृष्टि को उज्यारे से रहित किया तो इधर मुहम्मद साहिब ने चन्द्र के दो टुकड़े कर दिये । यदि आप के अगस्त्यमुनि जी ने समुद्र को हड़प किया तो इधर बाबा आदम आदिम के अश्रुओं से समुद्र नदी आदिक स्रावित हो निकली । और यदि आप राम और रावण के दशहरा का मुकाबिला करेगें तो इधर इमाम हुसैन और यजीद के दश दिन के युद्ध के । वृतान्त पढ़ेंगे कि जिन दोनों का कारण एक स्त्री हरण ही है । और यदि हमारे शैवमतानुरागी महाशय उनको अपना चन्द्राकृति तिलक दिखलाएंगे । तो वे उनको अपने प्राचीन ऋषियों का चिन्ह वर्तमान पताकाओं और राजकीय मुद्राओं पर अंकित दिखलायेंगे यह चिन्ह बतलाता है कि किसी समय वह लोग चन्द्रवंशी कुल से अपने को सम्बद्ध कहा करते थे । परिणामत: । जिस ओर आप झुकेंगे उसी ओर अपना अनुसरण देखेंगे । अत: एव आप को यह

स्वीकार करना पड़ेगा कि जिस प्रकार इस भारतवर्ष में बहुत से मत्तमतान्तर अपने आप को आर्य्य कहने के अधिकारी हैं वहां पर यह भी इस अधिकार के सर्वथा भागी हैं कि आर्य्य कहलावें क्योंकि जब जैन और बौद्ध मतावलम्बी नास्तिक होते हुए भी आप के भ्राता बन सकते हैं । तो यह ईश्वर के मानने वाले तो अवश्यही आर्य्य होने के अधिकारी हैं। आगे आपको अधिकार है। क्योंकि मेरा कार्य्य तो केवल इतनाही है कि मैं इन मुख्य मुख्य बातों को आपके समक्ष उपस्थित कर दूं। शेष मानना न मानना यह आपके वशवर्त्ती है।

आर्य्यन तथा एरिया जाति

इसके पश्चात् हम आपके समीपवर्ती और नाम राशि एरिया (ईरानी) जाति के उन धर्म्मशास्त्रों का वर्णन करेंगे। कि जिनको न केवल अपने प्राचीन नामो तथा भाषा परही अभिमान है। किन्तु उनको अपने कई एक ऐसे विषयों पर भी घमण्ड है। कि जो आपके वेदों से बहुत कुछ घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं।

यद्यपि आपने उनके संरक्षक महात्माओं के सहस्त्रों वर्ष पूर्व के घनिष्ठ सम्बन्धों को अपने विशाल हृदयों और प्रकाशमान् मस्तिष्कों से निकालने में कोई उपाय शेष नहीं छोड़ा। तथापि उनके सहनशील पुरुषों ने आपकी सब बातों को सहन करते हुए आजतक वैदिक कुश्ती (यज्ञोपवित) और होम (अग्निहोत्र) आदि पवित्र चिन्हों को इस प्रकार सुरक्षित रक्खा। कि जिस प्रकार महर्षि दयानन्दजी ने अपने अखण्डनीय ब्रम्हचर्य्य को।

परन्तु शोक और खेद का स्थान है । उन वैदिक धर्म्मानुयायियों के लिए कि जिन्हों ने ऋषिसन्तान होते हुए देवभूमि में जन्म लेकर स्वयं नास्तिकता का बीज बोया । यहीं तक नहीं किन्तु जैन और बौद्ध मत के अधिष्ठाता और संचालक बनकर एसी एसी पुस्तकों की रचना की और कराई । कि जिन का मूल उन्मूलन करने के लिए कई एक मुक्तात्माओं को दो बारा जन्म लेकर अपने आपको बलिदान देने की आवश्यकता पड़ी। परन्तु वाह रे बल और पुरुषार्थ हीनजाति ! तूने फिरभी न समझा

कि हमारा धर्म क्या है। और हम क्या करना चाहिए। क्योंकि आप की आंखों पर तो अभिमान की पटी बन्धी हुई है। और "हम चुनान दीगरे नेस्त" के मद में उन्नत हैं॥

अस्तु। खूब चद्दरें तान तान कर सोइये। समय आयेगा। और आप की टांगें खेंच खेंच कर आप को उठायेगा। उस समय आप समझेंगे कि हमारा धर्म क्या था। इस समय आप समझेंगें कि हमारा धर्म्म क्या था। इस समय आपको संसार की कोई सुद्ध-बुद्ध नहीं। और नाहीं इस समय आप जागृत हो सकते है। क्योंकि जब महर्षि श्री दयानन्द सरस्वती जी जैसे महा पुरुषों की प्रेम और दयामय वाणी ने आप पर कुछ प्रभाव नहीं डाला। तो हमारे जैसे निर्बल आत्मा के मनुष्य आपका क्या उपकार कर सकते हैं॥

परन्तु स्मरण रखिए। जब तक आप के भीतर वैदिक धर्म्म और प्राचीन ऋषियों के कर्त्तव्य घर न करेंगे। तब तक आप उस मान और प्रतिष्ठा के योग्य कदापि न समझे जाएँगे। कि जिस के लिए आप स्वप्न देख रहे हैं। इस लिए हे मेरे प्रिय और सज्जन पुरुषों। अपने अनमोल समय का आदर करना सीखो। और जहां तक हो सके मनुष्य जाति के उपकारार्थ वेदों के सौवर्ण द्वारों को उद्घाटन करने का यत्न कीजिए। ताकि इश्वर के नाम की महिमा हो। अन्यथा मनु जी के इस श्लोक को—

"एतद्देशप्रसुतस्य सकशाद्ग्रजन्मनः॥
स्वं स्वं चारित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवः॥"

भावार्थ—समग्र भूमंडल के लोग इस देश के बासियों से शिक्षा ग्रहण करते थे।

पढ़ते हुए आज अपने हृदयों पर हाथ रख कर बतलाओ। कि क्या तुम उनकी सन्तान कहलाने योग्य हो। यदि हो तो इस भारत वर्ष के अहो भाग्य हैं। और यदि नहीं हो तो समझ लो कि अब आप के नाम का भी अन्त आगया है। क्योंकि प्रत्येक वस्तु अपने लक्षणों से लक्षित होती है। यदि आप में शेष रहने वाली जातियों के लक्षण हैं। तो ठीक। अन्यथा उन

गुणों को उत्पन्न करने के लिये अभी से तत्पर हो जाओ नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब कि आप की नव्वे करोड़ की जन संख्या में से ३५ करोड़ बौद्ध २५ करोड़ इसाई १० करोड़ मुसलमान और १० करोड़ अच्छुत आदि अन्य जातियां आप के कर्णोत्पाटन के लिये उद्यत हों ॥

क्यों कि आपने उनको वेदादि सच्छास्त्रों से वञ्चित किया। आपने उनको ऋषि सन्तान से काफ़िर, हिन्दु, नास्तिक, चोर गुलाम बनाया। आपने उनको म्लेच्छ, राक्षस, तथा शुद्र बनाया। आपने अपनी स्वार्थता के कारण उन को चमार, भङ्गी, अन्त्यज तथा अछूत बनाया आपने अपने उदर पोषणार्थ उन ब्रह्म उपासकों से नीम, बबूल, बरगद, तुलसी और पाषाण तक पुजवाय: कहां तक गिनाऊं। आपने इस भारत वर्ष को रसातल में पहुंचाने के लिये दुर्गा, काली, भैरव, चण्डी, मतण्डी, भवानी आदि की निर्मूल गाथाएं गढ़ गढ़ कर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गौतम, कणाद, जैमनि, राम कृष्णादि की शूरवीर और धार्मिक सन्तानों को ऐसा निर्बल तथा भयभीत बनाया कि जो रात्रि समय साधारण चूहे की खटखटाहट पर शौच फिर देवें। यहीं तक नहीं किन्तु आपने एसी एसी भूलें की कि जिनका भूलना भी महा पाप है।

परन्तु हमें विश्वास है और पूर्ण विश्वास है ॥ कि आपके लिये इन सब बातों का बदला दे देना कोई असंभव बात नहीं क्यों कि आप में कृपा और द्रोण का रक्त है आप में पाणिनी और कुमारिल भट्टाचार्य्य की लज्जा है आपमें कल्हन (कल्याण यह महात्मा किसी समय समाधि लगाये बैठे हुए थे कि सिकन्दर रूमी ने आकर उनसे वार्तालाभ करने की चेष्टा की जिस पर उन्हो ने यह जानकर कि यह सिकन्दर रूमी हैं उनसे स्पस्ट कह दिया कि आप कृपा करके हमारी तपस्या में भंग न डालिये क्योंकि हम सांसारिक प्रलोभनाओं के इच्छुक नहीं हैं। परन्तु सिकन्दर की बहुत कुछ प्रार्थनाओं के पश्चात् उनको कुछ समय के लिए शिकन्दर के साथ जाना पड़ा। कि जिन्होने यूनान देश में जाकर बहुत कुछ परोपकार किया और अन्त समय में यह देख कर कि उनकी मृत्यु के पश्चात् कोई संस्कार करने वाला न मिलेगा। इस लिये वह

स्वयम ही अग्नि में बैठ अन्तर्धान होगये । इस महात्मा की धार्मिक जीवनी के विषय में यूनानी साहित्य अर्थात् ऐतिहासिक लेखकों ने बड़ी प्रशंसा की है । और बतलाया है कि यह पण्डित अपने धार्मिक विषयों के इतने ज्ञाता और अनुगामी थे कि जिन्हों ने मरण पर्य्यन्त भी उनके विरुद्ध न होना स्वीकार करते हुये अपने आपको जीते जी अग्नि में पुर्णाहुति देकर अपने प्राचीन ऋषियों की अपूर्व महिमा बढ़ाने के लिये धार्मिक लज्जा का उदाहरण दिया) और चाणक्य की तपस्या का बल है। आप में शंकर और जगनाथ (यह महात्मा अपने धर्म के रक्षार्थ कुछ समय तक मुसलमान हो गये थे और जब भली भांति उनके शास्त्रों से परिचित हो गये तो उनको छोड़ वैदिक धर्म की पुष्टचर्थ संसार भर के मुसल्मानों को शास्त्रार्थ की घोषणा दे दी जिस के पश्चात् उन में से किसी को यह साहस न हुवा कि इस पण्डित प्रकाण्ड का सामना कर सके) की विद्या का प्रकाश है। आप में वेदाचार्य्य वृजानन्द और वेदोद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द जैसे जगत गुरुओं के पुरुषार्थ का अभिमान है। कि जिन्होंने आपके जाति रूप शरीर में उद्दालक (छादोग्य उपनिषद् के ६ प्रपाठक-७ खण्ड में उद्दालक और श्वेत केतु की वार्तालाप देखिये)। ऋषि के समान उन बुझी हुई १५ कला को पुनः प्रदीप्त कर के २६ कला वाला जीता जागता, खाता पीता, कूदता फांदता रक्षा करने वाला फौलादी शरीर बना दिया। जो हर प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए भूत और वर्तमान पापों का भली प्रकार दंड दे सके।

इस लिये ऐ शिरोमणी जाति के धर्म वीरो ! उठो और आज ही से इस खान पान और जात्याभिमान तथा वैर विरोध की सर्व शृङ्खलाओं को तोड़ने के निमित्त धर्म क्षेत्र में कूद पड़ो और भर्तृहरिः के निम्नस्थ श्लोक को अपने सन्मुख रखते हुए संसार भर को वैदिक धर्म के प्रेम रूपी महासागर में डुबोदो।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वास्तवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छन्तु वायथेष्टम।
अद्यैव वामरणमस्तु युगान्तरेवा

न्याय्यात्पथा प्रविचलन्ति पदन्न धीराः ॥

भावार्थ—नीति में निपुण लोग तुम्हारी निन्दा करें अथवा स्तुति, तुम्हारा धन सारा चला जावे अथवा रहे। आज ही तुम्हारा प्राणान्त हो जावे अथवा युगान्तर जीवित रहो परन्तु धीर पुरुषों की भांति न्याय मार्ग से एक पग भी पीछे न हटो।

जिस्से फिर—

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः पृथिवी-
शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः
सर्व ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधि ॥

भावार्थ—हे परमात्मन ! द्यौ लोक में हमारे लिये शान्ति हो अन्तरिक्ष लोक और पृथिवी आदि के सर्व पदार्थ हमारे लिए शान्ति दायक हों और जल तथा उसके रहने वाले प्राणी हमारे लिये सुखदाई हो और मूल कंद तथा वनास्पति हमारे रोगों के निवारक हों और संसार भर में विचरने वाले ब्रह्मज्ञानी गण हमारी आत्माओं के लिये शांति प्रसारक हों और फिर हमारी यही प्रार्थना है कि सर्व ब्रह्माण्ड के पदार्थ हमारे लिये शान्ति बर्द्धक हो शान्ति की ध्वनी गूंजती दिखाई दें।

आर्यन तथा एरियन त्रिविद्या।

पूर्व इस के कि मैं आप को आर्य्य तथा एरिया जाति के धनिष्ट सम्बन्धों से परिचय दिलाऊं, उन के मूल शास्त्रों का वर्णन कर देना उचित समझता हूं। क्योंकि जब तक आप उन के शास्त्रों के गूढ तत्वों को न समझ लेंगे तब तक उन के जाति सम्बन्धों को यथार्थ रूप से न जान सकेंगे। इस लिये मेरा कर्त्तव्य है कि पहिले उन्हीं को आप सज्जनों की भेंट करूं।

एरियां जाति के धर्म शास्त्र सम्बन्धि बहुधा आज कल के व्याख्यान दाता तथा नामधारी विद्वानों का ये विचार है कि उनका धर्म शास्त्र यन्दावस्ता ही है। परन्तु ये उनकी भूल और एरिया जाति के धार्मिक साहित्य से अनभिज्ञता का कारण है।

अन्यथा वे लोग भूल कर भी इन शब्दों का उच्चारण न करते कि ऐरिया जाति का धर्म शास्त्र केवल एक यन्दावस्ता ही है। क्योंकि हमें उनके प्रमाणिक और माननीय साहित्य के अवलोकन करने से यह बात भली प्रकार विदित होचुकी है कि जिस प्रकार हमारी आर्य जाति अपनी मुक्ति तथा मोक्ष के लिए ऋग, यजु, सामादि त्रैविद्या विषयक सत्य शास्त्रों को ईश्वरीय ज्ञान के नाम से प्रसिद्ध करती है ठीक इसी भांति वे लोग भी अपनी मोक्ष तथा सर्व सुखों के निमित्त, दसातीर—क्यूमर्स की पुस्तक तथा यन्दावस्थादि त्रैयी विद्यक शिरोमणि शास्त्रों को, ईश्वरीय ज्ञान के नाम से विख्यात करते हैं। यद्यपि इन के अतिरिक्त और भी बहुत से शास्त्रों के ईश्वरीय ज्ञान होने का प्रमाण मिलता है। तथा पिउन सब का मूल आधार केवल यही तीन शास्त्र माने जाते हैं, अतः ये बात सिद्ध हो गई कि एरिया जाति की त्रैमी विद्या अक्षरशः जाति से अनुकरण की गई है।

ऋग् तथा यन्द विभाग समानता।

ततपश्चात हम आप को ऋग् तथा यन्द विभाग समानता का कुछ थोड़ा सा वर्णन सुनाते हैं। परन्तु पूर्व इस से कि हम आप को इनकी समानता के लिए उद्यत करें, यन्द विषयक कतिपय विचारों को प्रकट कर देना उचित समझता हूं।

अतः दत्तचित्त होकर अवलोकन कीजिये।

१ इस यन्द अवस्था के विषय में कतिपय लोगों का यह विचार है कि पूर्व समय में इस के निम्न लिखित २१ भाग थे।

यथा (१) अहू (२) वैर्यो (३) अथा (४) रतुश (५) अशात् (६) चीत (७) हचा (८) वन्धेउश (९) दज़दा (१०) मन्धो (११) श्कयोथ ननाम (१२) अन्धेउश (१३) न्नथ्रेमया (१४) अहुराइ (१५) आ (१६) यीम (१७) द्रेगुव्यो (१८) ददत् (१९) वास्ता रेम (२०) मजदाइ (२१)।

२ कतिपय मनुष्यों के समीप यन्दावस्था के बड़े २ दो भाग हैं। यन्द (१) व महायन्द (२)।

३ और कतिपय महाशयों के समीप इस पुस्तक के ४ विभाग माने जाते हैं, एक वह भाग कि जो जरतुश्त के पूर्व समय में लिखा गया था, अर्थात् उस से पूर्व पूर्वकाल में किन्हीं महाशयों ने लिखा था। (१) इस के तीन भाग निम्न लिखित हैं। अस्तीम वोहू (१) आहू नूर (२) यंगेहाताम (३) और शेष तीन भाग स्वयं जरतुश्त के लिखे माने जाते हैं। पहिला गाथा भाग, गाथा आहूनवत (१) उश्तवत (२) सपिन्तु मद (३) वहुक्षयथिर (४) वहिस्तु यश्त (५) वन्देदाद (६)

दूसरा भाग, पंचग, हावनगः (१) रिपित हवन (२) आवज़वेरून (३) ऐवसोनररम (४) उशहन (५) तीसरा यश्त भाग आहुर मजद (१) बेहरामयश्त (२) हफ्त अमश्तस्यन्द (३) अर्दी वहिस्त (४) खुर्दादादि कुल ३० हैं।

४ और कतिपय विद्वानों के समीप मन्दावस्था के तीन भाग इस प्रकार माने जाते हैं। एक भाग वह कि जिसको जरतुश्त से पूर्व समय में किन्हीं लोगों ने लेखबद्ध किया था जिसके नाम असमि. वोहू आदि उपरोक्त वर्णन हुए। दूसरा गाथा भाग, इसको स्वनं जरतुश्त का लिखा हुआ स्वीकार करते हैं, और तीसरा भाग जरतुश्त के शिष्यों का लिखा हुआ माना जाता है कि जिसमें न्यायश यश्त तथा पंचगः तीन बड़े २ भाग माने जाते हैं। न्यायश भाग न्यायश खुरशीद (१) मेहर (२) महाबुख्तार (३) आवानअर्दी-सोर (४) आतिश आदि की न्यायश मिला कर कुल १३२ होती हैं। यश्त भाग आहुरमज (१) बेहरामयश्त (२) हफ्त अमशास्पन्द छोटा बड़ा (३) अर्दीवहिश्त आदि कुल तीस हैं तीसरा पंचगः भाग, हवनगः अर्थात् प्रातःकाल की प्रार्थना (१) रिपितहवन अर्थात् १२ बजे से २ बजे दिन की प्रार्थना (२) आवज वेरूम अर्थात २ बजे दिन से

सायंकाल की प्रार्थना (३) एवसोनहरम अर्थात् सायंकाल से रात्रि के ३ बजे तक की प्रार्थना (४) उशहन अर्थात् सूर्योदय से पूर्वकाल की प्रार्थना (५) तत्पश्चात् इसी के अन्तर्गत और भी बहुत सी प्रार्थनायें मिलती है। यथा—दुआयेवस्पहुमन (१) सितायशनी (२) मवस्तारे (३) नमस्कारे चाहर तरफ (४) नकस्कारे चराग (५) नमस्कारे मकहमान (६) नमस्कारे दखमा (७) नकस्कारे कोह (८) नमस्कारे आव आदि कुल २६ प्रार्थनायें हैं।

५ और कतिपय मनुष्यों के समीप सीमनाद भी यन्दावस्था में संमिलित हैं।

६ और कतिपय मनुष्यों के समीप सीमनाद भाग यन्दावस्था का नहीं किन्तु दशातीर का अंश है। इन सीमनादों में महर्षि जैमुनि व्यास तथा यूनान आदि विद्वानों के शास्त्रार्थ का वर्णन है।

७ और कतिपय मनुष्यों के समीप सीमनाद तथा महायन्द ये दोनों भाग दशातीर के अंश माने जाते हैं।

८ और कतिपय मनुष्यों के समीप यन्द और अवस्था एक पुस्तक मानी जाती है।

९ और कतिपय मनुष्यों के समीप यन्द और अवस्था भिन्न २ दो पुस्तकें हैं भिन्न २ मानने वालों का ये विचार है कि जरतुश्त ने महावाद के पश्चात् एक नया मत खड़ा किया था, जिसकी पुष्ट्यार्थ उसने यन्द नामी एक पुस्तक रचा और उसमें बहुत सी बातें दसातीर के विरुद्ध लिख कर लोगों को भ्रम में डाला, और जो एकही मानते हैं उनके विचारानुसार जरतुश्त सचानवी और दशातीर के मृत्यु धर्म के जीवित करने वाला माना जाता है, और यन्द भाग के दशातीर के विरुद्ध मानने का कारण केवल यह है कि वह भाग बहुधा आपने गूढ़ विषयों को संकेत रूप से वर्णन करता है, इसी लिये बहुत लोगों के समीप उसका नाम भी रमज भाग पड़ गया, और इसी भाग के कारण जरतुश्त को आजकल भी बहुधा लोग नबीये रमज़ोग कहते हैं।

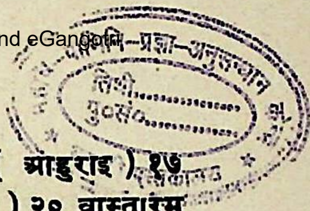
१० और कतिपय लोगों के समीप इस पुस्तक का नाम यन्द-अवस्था की बजाय अवस्था-यन्द है।

११ और कतिपय मनुष्यों के समीप इस सम्पूर्ण यन्द-अवस्था में मुख्यता बड़े २ दो भाग माने जाते हैं कि जिनमें से एक वह भाग है कि जिसमें धर्म सम्बन्धी आवश्यक बातों का वर्णन किया गया है। और दूसरे भाग में ऐसे २ विषयों का वर्णन है कि जिनका मानना अथवा न मानना विषेतया धर्म से सम्बन्ध नहीं रखता।

१२ और कतिपय मनुष्यों के समीप यन्दा-अवस्था के मुख्य तीन भाग माने जाते हैं, जिनमें से प्रत्येक में निम्न लिखित विषयों में से प्रधानतया इन २ बातों का वर्णन किया गया है।

प्रथम भाग में सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, दूसरा भाग में मनुष्य धर्म सम्बन्धी सम्पूर्ण कर्मकाण्ड का वर्णन तीसरे भाग में राजाधर्म इतिहास और शिल्पविद्या तथा भिन्न २ व्यवसायों का वर्णन है।

अनुमोदन अब हम उपरोक्त विचारों के अनुमोदनार्थ श्रीआजर (अग्निहोत्री) खिरदाद वासासानें पंजुम के उन लेखों को उपस्थित करते हैं कि जिनको हमारे सुयोग्य दविस्तानुलमजाहिब के कर्ता ने अपनी पुस्तक (दविस्तान) के पृष्ठ १०४ व १०५ में इस प्रकार वर्णन किया है " के ज़न्दवस्तु यक नुस्कस्त व नुस्कवस्तरस्त व हर नुस्करा नाम व ज़ुबाने जन्द व पार्सी व दीनतफसी लस्त एता (यथा) १. आहू २. वैर्यो ३ अता (अथा) ४ रतोश (रतुश) व नाद (सीमनाद) ६. वज़ुवानें ताज़ी वूकस्ताल गोयन्द व वपार्सी नवाये मसीहान व आननुस्कीस्त दर बयाने नजूम व वरूज व तर्तीबे फलकी व हैअत व सआदत व नहूसते कवाकिब व अमसाले आन दीगर अशाद (असात) ७ यदि (चीत) ८ हिचा ६ बन्धोयश (बन्धेउश) १० दज़दा ११ मनूधो (मन्धा) १२ सोनानाम (योथन नाम) ५३ अखेयुँश(अन्धेउश १४) मजदाद (मजदाह)



१५ खशरमचा (चूर्मञ्चा) १६ आहुरा (आहुराइ) १७ आ १८ यम (येम) १९ दरकोव्यो (द्रेगुव्यो) २० वास्तारम (वास्तारेम्) २१ वदर्जव्द जमीअ उलूम हस्त (हस्तन्द) अम्मा वाज़ेवरमज़ व इशारत मज़कूर शुदः (शुदन्द) अक्नून चहारदः नुस्कं तमाम दर निज़द दस्तूराने किरमान मान्दः (म न्दन्द) व हफ्त नुस्क नातमामस्त (हस्तन्द) ज़ेरा के दर्जग़गहा बशोरशहा कि दर ईरान शुद (शुदन्द) बाज़े अज़मयान रफ्त (रफ्तन्द) व चून तफा हुस कर दन्द दुरस्त वदस्त पशान न युफ्ताद (नयुफ्तादन्द) व सासाने पंजुम आवुर्दः कि चून आवाज़ वदीन गराईदन जन्क रंखाचः (जन रचस] दर जहान शियूयाफ्त व्यास नाम दानाइ अज़हिन्द दयार (अज़ दयारे हिन्द) व ईरान आमदः व फरमान शहनशाह फरज़ानगान हर किशवर गिर्द आमदन्द व्यास व पैगम्बर खुदा गुफ्त पे जरार तुश्त पासखदाज़ (दाद) गुजारी तो जन्क रंखाचः (जनरचस) आलमे तुरा सादिक शमुर्दन्द व मौजज़ात वेहद अजतो शुनिदः अम् (शुनिदः अन्द) वमन्दर इल्मो अलम दरकिशवरे खुदमानिन्दनदारमउम्मीद वार हस्तम के राज हापसर वस्तः कि दर दिल दारम्व अस्ला अजसहीफर्पादल वलवम्यावुर्दः अम् जेराकेवाजेगोयन्दीजीम्नयान व अहरमन परस्तआगही।दिहन्दअगर हमःरावकुशायवदी ने तोदरआयम पैगम्बरे यजदानगुफ्त पेशअज आमदने तो दादारे पाक मरा-आगः साख्तः पस सीमनादे कि यजदान फरो फरिस्तादः बूद वरू ख्वान्द व उश्र दर दिल दाश्तहम मजकूर वूदपाशखनीज दरपै आन व्यास सुख नियजदान वशनूद वहदीनशुदःवहिन्द बाजगश्त व ईन दो सीमनाद के पासखे फरज़ानः यूतान व व्यास वाशद दाखले जिन्द नीस्त वल्के जुजवे दसातीरस्त व सीमनाद वजुवाने दसातीरयनि नामाना आसमानी सुरये रागोयन्द" कि जिस का भावार्थ यह है। कियन्द के २१ नुस्क हैं। और नुस्क शब्द भाग वाचक और प्रत्येक भाग के नाम यन्द और फरस भाषा में इस प्रकार वर्णन किये गये हैं।

१. यथा. २. आह्व. ३. वैरयो, ४.अथा. ५. रतुष, ६. नाद. (नाद को अरवी भाषा में "वूकस्ताज" और फारसी में "नवाए मसीहान" कहते हैं और यह वह भाग है जिस में नक्षत्रादि ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धि विषयों का यथार्थ वर्णन किया गया है) ७. अशात, ८. चीत, ९. हचा, १०, वन्ध उप, ११. दजदा, १२. मन्धों, १३. शक्योथन नाम, १४. अन्धेउष, १५. मजदाई, १६. चथूमचा, १७. महुराइ, १८. आ, १९. येम, २०. द्रेगुव्यों, २१. वास्तारम ॥ और यन्द में प्रायः सब विद्याओं का वर्णन आया है। परन्तु कहीं कहीं इंगितों और संकेतों का प्रयोग किया गया है। सम्पूर्ण यन्द में से इस समय किर्मान के विद्वानों की सम्मत्यनुसार १४ भाग सम्पूर्ण और ७ भाग असम्पूर्ण उपस्थित हैं। इन के नष्ट भ्रष्ट होने का कारण पारसी राजाओं के पारस्परिक के विवाद और युद्ध हैं। जिनके पश्चात् उनके बड़े २ विद्वानों ने यह यत्न किया कि किसी उपाय से वे लुप्त भाग उपलब्ध हो जावें परन्तु उनका यत्न व्यर्थ और वृथा ही रहा। और महात्मा सासने पंजुम के कथनानुसार जब महर्षि जैमिनिजी ज़रतुश्त के दीन वही अर्थात् ईश्वरीय मार्ग को स्वीकार कर चुके तो उनकी इस प्रख्याति के अनन्तर एक वहती सभा का संगठन हुआ। जिसमें वेदव्यासादि धुरन्धर विद्वान सम्मिलित हुए। और जरतुष्य से ठीक ठीक उत्तर प्राप्त कर वे सब अपने २ देशों को लौट गए। पस यह दो सीमनाद कि जिन में यूतान वेदव्यासादि के शास्त्रार्थों का वर्णन किया गया है। यह दोनों भाग दसातीर के हैं। और नाद दसातीर भाषा में "नामा ए आस्मानी" अर्थात् सूक्त (सूरत) को कहते हैं।

समर्थन।

यहां तक जो कुछ वर्णन किया गया है वह परियाजाती के साहित्य के आधार पर था परन्तु अब हम उन के समर्थनार्थ उन लोगों के विचारों को उपस्थित करते हैं कि जिनको इस पवित्र पुस्तक के पठन पाठन तथा शिक्षाचार्य्य होने का भी अभिमान है।

अतः उदाहरण रूपेण हम श्री एदलजी केर शासपजी, व श्रीनाम-दारसर जमशेदजी जीजी भाई आदि यन्द के महापण्डित तथा महामहोपाध्यायों के रचित जरतुष्ती धर्म्मशिक्षा नामक ग्रन्थ के प्रश्नोत्तरों को यहां पर उद्धृत किये देते हैं जिससे आप को इस यन्दावस्था की काट छांट का पूरा पूरा परिचय हो जाएगा ॥ (प्रश्न) पूर्व समय में अवस्था नामा ग्रन्थ के कितने भाग थे ॥ (उत्तर) इक्कीस । और प्रत्येक पुरुष उसके पठनपाठन में तत्पर रहता था । (प्रश्न) इसके इक्कीस नाम किन किन वस्तुओं पर से रखे गये तथा क्या २ नाम हैं ॥ [उत्तर] यथा आहु वैर्यो के के शब्दों पर से यह नाम रक्खे गये हैं । १. यथा, २ आहु, ३. वैर्यों, ४. अथा, ५. रतुष, ६, अशात, ७. चीत, ८. हचा, ९ वन्धे उंष, १०. दजदा, ११. मन्धो, १२. शक्योथ ननाम, १३. अन्धे उष, १४. मजदाइ, १५. क्षथ्रमचा, १६. आहुराई, १७. आ, १८. येम, १९. द्रेगुब्यो, २०. ददत्त, २१. वास्ता रेम । [प्रश्न] इन इक्कीस नुस्क के कितने भाग किए गये थे । [उत्तर] तीन भाग । सात नुस्क में सर्व संसार के विषय अर्थात् उत्पत्तिस्थिति प्रलय और सात नुस्क में मनुष्यधर्म्म सम्बन्धि कर्मकाण्ड, और सात में राज धर्म्मसम्बन्धि विषय तथा शिल्पविद्यादि ॥ [प्रश्न] यह सर्व पुस्तकें वर्तमान काल में अपने पास उपस्थित हैं या नहीं । [उत्तर] नहीं, केवल ददत नामी भाग पूरा, शेष थोड़े थोड़े भाग उपस्थित हैं। (प्रश्न) उन शेष भागों के न मिलने का कारण क्या है । (उत्तर) ईरानी राजाओं के राजत्वकाल में सिकन्दर रूमी तथा अरबदेश के विजयशाली राजाओं ने इनको परास्त करके उनके धर्म्मशास्त्रों को भी नष्ट भ्रष्ट कर दिया ॥ (प्रश्न) ददत नामी भाग में क्या क्या है । (उत्तर) वन्देदाद, यजशन, विस्पर्द तीन भाग हैं ।

(प्रश्न) वन्देदाद के कितने भाग हैं ? (उत्तर) बाईस ।

(प्रश्न) यजशन के कितने भाग हैं ? (उत्तर) बहुत हैं ।

(प्रश्न) विस्पर्द के कै भाग हैं ? (उत्तर) बाईस ।

(प्रश्न) एतदतिरिक्त उस्ता के और भी भाग प्राप्त हैं वा नहीं ? (उत्तर) हां । खुर्दे: अवस्ता, विश्तासप, दामदाद्. नुस्क का थोड़ा सा भाग, हा दोख्त, और, इसके अतिरिक्त और भी बहुत से

अंश हैं जो पहिलवीं आदि भाषाओं में तथा यदावस्था भाषा की पुस्तकों में प्राक्षिप्त हो गया है। जिनको विशिष्ट विद्वान गण जान सकते हैं।

(प्रश्न) प्रत्येक पुस्तक में कितने २ भाग हैं।

[उत्तर] खुर्दः अवस्था में पांच नयायश, १ खुर्शीदनयायश २ मेहर ३ महाबुख्तार ४ अर्दी सोर ५ आतशकीनयायश और २१ यश्त १ अहुर्मजद यश्त २ हत्तांग ३ अर्दी वहिश्त ४ खुर्दाद ५ आवान ६ खुर्शेद ७ माह ८ तीर ९ गोश ११ मेहर ११ सरोश हादोख्त १२ रात की बड़ी ओशियश्न १३ रश्न १४ फरवरदीन १५ बेहराम १६ राम १७ दीन १८ अशिशिवँग १९ आश्ताद २० जमयाद २१ वन्त होमसिरोजा यश्त।

यन्दावस्ता विषयक महाशय ज्याउद्दीन का अंतिमनिर्णय।

अब हम आपको महाशय ज्याउद्दीन के अन्तिम निर्णय से सूचित कर वेद और यन्द की मोटी २ समानताओं का वर्णन सुनाते हैं। महाशय ज्याउद्दीन अकमल अपनी पुस्तक तारीखे कद़ीम के पृष्ठ ८१ पर इस प्रकार वर्णन करते हैं कि "प्राचीन समय में मेदजाति यन्दावस्ता पुस्तक को मानती थी जिसकी यकना अर्थात् कुर्बानी की कथा अति प्राचीन है यन्दावस्ता का असली नाम अवस्तायन्द है। जिसके अर्थ ग्रहण और स्वीकार योग्य हैं। अर्थतः इस पुस्तक का एक भाग अति आवश्यक आज्ञाओं से भरा हुआ है। और दूसरे भाग में उन बातों का वर्णन है जो इतनी आवश्यक नहीं और इसकी भाषा प्रायः संस्कृत से बहुत कुछ मिलती जुलती है इसके आठ भागों के नाम (१) यकना (२) दसपीराती (३) वयन्दाद (४) यश्तस (५) न्यायश (६) आफरीगान (७) गाह (८) सरोजा हैं"। जिनका प्रथम अनुवाद मसीह से ४०० वर्ष पूर्व सासानी राजाओं के समय में पहलवी भाषा में किया गया था और द्वितीयवार मसीह की १५ वीं शताब्दी में महाशय नरायूसिंह जी ने यकना भाग का अनुवाद संस्कृत में किया था इस पुस्तक के कतिपय भाग अति मनोरंजक हैं और हमारे पार्सी भ्राता इसी

पुस्तक के मानने वाले हैं।" इन कतिपय प्रमाणों से यह बात आपको भली प्रकार विदित हो गई होगी कि जिस पुस्तक को महर्षि जरतुष्तने अपनी जाति के सुधारार्थ लेख बद्ध कर अथवा कराकर प्रकाशित किया उस पुस्तक का मिलना तो एक तरफ़ किन्तु आज उसके सम्पूर्ण भागों का उपलब्ध होना भी अतिकठिनप्रतीत होता है और जो कुछ इस समय में मिल सकता था उसको मैंने यथाशक्ति संग्रह कर इन उपरोक्त पत्रों में वर्णन कर दिया है और यदि इसके अतिरिक्त और कुछ मिल गया तो उसको भी आप सज्जनो के सन्मुख उपस्थित करदूंगा परन्तु जहां तक मेरा विचार है वहां तक तो इसका शेष भाग मिलना यदि असंभव नहीं तो इनके समीप अवश्य प्रतीत होता है क्योंकि उन शेष भागों के नष्ट होने को वहुत समय व्यतीत हो चुका है और उनकी छान वीन के लिये बहुत से विद्वान यत्न कर कर थक चुके हैं। अतः हम भी उनका अनुकरण करते हुये इस विषय को यहीं पर समाप्त किये देते हैं। इस के पश्चात् अव हम वेद और यन्द की पारस्पर की समानताओं का कुछ थोड़ा सा वर्णन करते हैं सो सब से पहिले हम इनके नामों ही को लेते हैं आपने इस बात को भली प्रकार जान लिया होगा कि यन्दावस्था नाम दो शब्दों से बना हुआ है। और वैसे भी इस के दो ही भाग हैं अर्थात् यन्द और महा यन्द अथवा अवस्था जिसका असल रूप वेदों के नामों में छन्द वहुत अच्छी तरह से हमको उपलब्ध हो रहा है कि यन्द का असली रूप छन्द है इसका प्रमाण यह है कि जिस प्रकार वेदों के नाम तथा उनकी भाषा के लिये छन्द का प्रयोग किया जाता है ठीक इसी प्रकार पारिया जाति की धर्म पुस्तक और उसकी भाषा के लिये यन्द शब्द प्रयोग में लाया जाता है। और दूसरा शब्द जो वर्तमान समय में इसके साथ बोला जाता हैं। वह विलकुल संस्कृत के अवस्था शब्द का विगाड़ है और तीसरा नाम जो इस पुस्तक को दिया गया है वह गाथा है। जिसका पता हमें ब्राह्मण और गृहसूत्रों से इस प्रकार मिलता है कि आर्य्य लोग अपने धर्म शास्त्रों में से किसी एक भाग को गाथा नाम से भी विख्यात करते थे जिसको

महर्षि जर तुश्त ने ज्योंकात्यों अनुकरण कर अपनी पुस्तक के लिये नियत कर दिया प्रमाण के लिये देखो महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका द्वितीय संस्करण पृष्ठ ८१ और अथर्व वेद काण्ड १५ अनुवाक २ वर्ग ६ मंत्र १०, ११, तथा १२ " सवृहतीं दिश मनु व्यचलत । तमितिहा साश्च पुराणं च गाथाश्च नाराशंसीं श्चानु व्यचलत । इतिहासस्य चवै स पुराणस्य च गाथानां च नाराशंसीनां च प्रियं धाम भवतिय एवं वेद: " और " ब्राह्मणा नीति हासान् पुराणानि कल्पान् गाथा नारा शंसीरिति " आदि गृहसूत्रों के प्रमाणिक ग्रन्थों से सिद्ध होता है कि गाथा नाम प्राचीन समय में आर्य्य जाति के धर्म शास्त्रों में से किसी एसे भाग का नाम था कि जिसका मानना उनके लिये अति आवश्यक था । अत: इसी कारण से यन्दा नुयायियों ने इस पवित्र नाम को अपनी पुस्तक के लिये नियत कर लिया । चतुर्थ समानता यह है कि जिस प्रकार ऋग्वेद के मूल १० मण्डल माने जाते हैं उसी प्रकार १ ददत २ वन्देदाद ३ यजशन ४ विस्पर्द ५ खुर्दे ६ विस्तासप ७ दामदाद ८ हादोख्त ९ नयायश १० यश्त यन्द के भी १० ही भाग माने जाते हैं । यदि ददत नयायश और यश्त भाग को उनके अन्तर्गत होने के कारण छोड़ दिया जावे तो शेष वन्देदाद २ यजशन ३ विस्पर्द ४ खुर्दे ५ विस्तासप ६ दामदाद ७ हादोख्त ७ नाम रह जाते हैं जो ऋग्वेद के १ गायत्री २ उष्णिक ३ अनुष्टप ४ वृहती ५ पङ्क्ति: ६ त्रिष्टुप ७ जगती के मुख्य ७ छन्दों का अनुकरण है और नम्बर षष्ठ मे ऋग्वेद के बार २ आने वाले छन्दों को छोड़ कर यदि उन छन्दो को ले लिया जावे कि जो सारे वेद में १ गायत्री २ उष्णिक ३ अनुष्टप ४ वृहती ५ पँक्ति: ६ त्रिष्टुप ७ जगती ८ आर्षी ९ दैवी १० आसुरी ११ प्रजापत्या १२ याजुषी १३ याम्नी १४ आर्च्ची १५ ब्राह्मी १६ विराट १७ निवृत १८ शुद्धा १९ भूरिक २० स्वराट् इस प्रकार आये हैं तो महात्मा सासाने पंजुम के कथनानुसार सीमनाद भाग को छोड़कर यन्द के भी २० ही भाग रह जाते हैं । प्रमाण के लिये देखो दविस्तानुल, मजाहिब पृष्ठ १०५ नं० सप्तम अवयदि पौराणिक मतानुसार ऋग्वेद को

१ शाकल्य २ वाषकल्य ३ ऐत्रिय ४ ब्राह्मण ५ आरण्यक ६ शाखाएं ७ माण्डूक्य ८ कौषत् की भागों का संग्रह मान लिया जावे तो महाशय ज्या उद्दीन के विचारानुसार १ यकना २ दसपोरातों ३ वंयन्दाद ४ यश्तस्न ५ न्यायश ६ आफरीगान ७ गाह ८ सरोजा आठ भागों का मूल श्रोत वेद भगवान ही सिद्ध होगा।

जिसके विषय में हमारे परमहंस महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज ने कई एक वर्ष पहिलेही से हमें सुचेत करने के लिये अपने स्वरण से लिखने योग्य अक्षरों में यह बात बतला दी थी कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" अर्थात् संसार भर की धार्मिक तथा विज्ञानिक पुस्तकों का मूलाधार केवल एक वेद ही है जिससे प्रत्येक विद्वान ने अपनी २ बुद्धि अनुसार कुछ थोड़ा बहुत प्राप्त करके मनुष्य जाति के उपकारार्थ लेख बद्ध कर प्रकाशित कर दिया कि जिनका वर्तमान समय में ठीक २ भाव समझना अति कठिन और दुस्तर प्रतीत होता है परन्तु जो २ भाग उनके हस्ताक्षेपों से बच रहे वह आज भी यथा तथ्य,अर्थात् ज्यों के त्यों वेदों में पाये जाते हैं यथा वैदिक त्रष्टुप, अनुष्टुप, आसुरी गायत्री तथा यन्दा वस्ता के अष्ट वैति गाथा,, होम यश्न और बहू क्षेत्र आदि छन्द भाग जिस प्रकार वेदों के छन्द ग्यारह और आठ २ मात्राओं के हिसाब से तीन २ और चार चार पद के नियत किये गये हैं ठीक इसी प्रकार यन्दावस्था में तीन २ और चार २ पाद के अर्थात् चौबीस २ और चवालीस २ मात्राओं के छन्दों का वर्णन किया गया है देखो यश्ना भाग इकतीस मन्त्र आठ और चवालीस मन्त्र तीन तथा ग्यारहवाँ यश्न यद्यपि यन्दिक तथा वैदिक विषयों में बहुत कुछ अन्तर है तथापि उनकी छन्द शाइलियों में बहुत कुछ समानता पाई जाती है यहीं तक नहीं किन्तु उनकी भाषाओं में भी बहुत कुछ इयत्ता पाई जाती हैं प्रमाण के लिये देखो सर चश्मा ए मजाहिब अनुवाद श्रीमान् पंडित घासीराम प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त पृष्ट पञ्चानवे "विस्प दुरचो जनायती विस्प दुरच्च निशयती यथा हनोति एषां वाचं,, जिन शब्दों का शुद्ध संस्कृत इस प्रकार है "विश्व दुरचो जिन्वति विश्व दुरचो नश्यति यदा श्रणोति एतां

अर्थात् एषां वाचम इसका भावार्थ यह है कि प्रत्येक बुरा आत्मा नष्ट हो जाता है तथा भाग जाता है जब इन शब्दों को सुनता है यश्न इकत्तीस इन उपरोक्त प्रमाणों से इतना तो आप अवश्य समझ गये होंगे कि जिस प्रकार कुरान की बनावट तथा विभाग क्रम वेदों से लिया गया है ठीक इसी प्रकार अपितु उस से भी कई एक अंशों में बढ़ चढ़ कर यन्दानुयायोंने वेदों का अनुकरण किया जिसको आज मैंने संक्षेप रूप से आप सज्जनों के सन्मुख उपस्थित कर दिया है परन्तु मैं जानता हूँ कि अभी आपको हमारी इन कतिपय समानताओं से इतना संतोष न हुआ होगा कि जितना मुझको इसलिये मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको आर्य्य तथा एरियाजाति के उस श्रोत की ओर ले चलूं कि जिस पर पहुंच कर फिर आपको किसी प्रकार का कोई सन्देह शेष न रहेगा। अतः इसकी खोज के लिये सब से पूर्व हम उनके जन्म स्थान अर्थात् प्राचीन निवास स्थान का वर्णन करते हैं। जहांतक हमने आर्य्य जाति के भिन्न भिन्न शास्त्रों तथा भाषाओं का अवलोकन किया है वहां तक तो यही बात विदित होती है प्राचीन समय में आर्य्य जाति एशिया के किसी मध्य भाग में विराज मान थी क्योंकि (१) यह एक विख्यात बात है। कि एशिया से जाकर कुछ लोग यूरुप में आबाद हुये थे (२) यूनान और रूम के इतिहास वेताओं का यह विचार है कि उनके पुरुषा पूर्व और उत्तर से जाकर वहां पर आबाद हुये थे । (३) धार्मिक सृष्टि में सब से प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद के पढ़ने वाले कतिपय विद्वानों के समीप आर्य्य जाति सब से पूर्व पंजाब में आकर आबाद हुई । और वहाँ से शनैः शनैः पूर्व की ओर बढ़ती गई यदि इस बात को स्वीकार करलिया जावे तो आर्य्य जाति का हिन्दूकश पर्वत के पश्चिम और उत्तर से भारत वर्ष में आना सिद्ध हो जाता है परन्तु ऋग्वेद के कई एक स्थलों से यह बात भली भांति प्रतीत होती है कि कुछ लोग हिमालय पर्वत के उत्तर और पश्चिम से आये थे जिससे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के तिब्बत की ओर से आने का प्रमाण सिद्ध हो जाता है (५) हिमालय पर्वत के उत्तरीय देश सदा आर्य्यों की दृष्टि में प्रतिष्ठा के योग्य समझेजाते थे। और वे लोग अपने

पवित्र सुमेरु और कैलास को भी उसी ओर बतलाते हैं तथा उत्तरा खण्ड को देव भूमि और तपस्या स्थान मानते हैं क्योंकि कुरुक्षेत्र के महायुद्ध के पश्चात पाण्डव भी इसी मार्ग से स्वर्ग में प्रवेश हुए थे संभव है कि इनके पुरुषा सृष्टि की आदि में इसी मार्ग से भारत वर्ष में आये हों कि जिसके कारण वह उत्तरीय ओर को अति पवित्र मानते हों। (५) ऋग्वेद के कौशत की ब्राह्मण के ७-में इस प्रकार वर्णन किया गया है कि "वाक उत्तर में है इसालिये लोग उत्तर की ओर वाणी को सीखने जाते हैं और विख्यात है कि जो मनुष्य उत्तर से आते हैं लोग उन्हीसे अधिक सुनने की चेष्टा करते हैं क्योंकि उत्तर ही वाणी का स्थान है, इससे भी विदित होता है कि उत्तरी ओर अति प्रशंसनीय है अतः वही मनुष्य जाति का सबसे पूर्व निवास स्थान है। अन्यथा इसकी इतनी प्रशंसा का और कोई कारण विदित नहीं होता (६) इसकी पुष्ट्यार्थ हम एरिया जाति के एक एसेस्थान को उपस्थित करते हैं कि जिसका नाम उनके धर्मशास्त्रों में एरिया वैजो अर्थात् आर्य्य बीज अर्थतः यह वह भूमि है कि जिससे संसार की कुल जातियें अपने भिन्न भिन्न स्थानों की खोज के लिये पृथक हुईं। (७) आर्य्यवैजो अर्थात् एरियाना वेजो के वर्णन से यह बात भली भांति विदित हो जाती है कि एरिया जाति की प्राचीन भूमि यह उसी मान और प्रतिष्ठा के योग्य समझी जाती है कि जिस मान और प्रतिष्ठा की दृष्टि से तिब्बत को देखा जाता है। और उसके कतिपय विशेषणों में से कुछ एक इस प्रकार वर्णन किये गये हैं। कि उस भूमि में सर्दी का मौसिम १० मास तक और गर्मी का २ माह तक होता है। एसा सर्द देश कि जहाँ से यह आर्य्य जाति निकली है मध्य एशिया के अन्य और कोई स्थान नहीं हो सकता (८) आर्य्य जाति की भिन्न भिन्न श्रेणियों की भाषाओं में मौसम में सर्मा तथा वाहार के जैसे समान नाम दृष्टिगोचर होते हैं वैसे और किसी मौसम के नाम नहीं पाये जाते अतः इससे सिद्ध हुआ कि उन सब जातिओं का प्राचीन देश यही है। (९) तदनन्तर हम ऋग्वेद के सप्तसिन्धु और यन्दावस्ता के हप्ताहिन्दु देश की पड़ताल करते हैं। कतिपय विद्वानों का यह बिचार है कि ऋग्वेदीय सप्तासिन्धु से दर्यायसिन्धु और पंजाब के ५ दर्याय (सतलज, व्यास, राबिच, नाब,

झेलम,तथा दर्याय सरस्वती मुराद हैं अतः उनके विचरानुसार दर्याए सरस्वती जो कुरुक्षेत्र के समीप है। वहां से ले कर दर्याए सिन्ध तक ये भूमि फैली हुई थी और कतिपय विद्वान यह कहते हैं कि यही भूमि प्राचीन आर्य्यों का निवास स्थान था और यही भूमि विख्यात महाभारत का युद्ध स्थान है। जहां पर आर्य्य तथा ऐरिया जाति के महापुरुष परस्पर की इर्षा द्वेष के कारण लड़कर समाप्त हुये और इसी स्थान को उनकी जुदाई का स्थान माना जाता हैं (इस से कोई महाशय यह न समझ लेवे कि महाभारत के युद्ध के पश्चात् लोग यहां सें भिन्न भिन्न देशों में जाकर आबाद हुये किन्तु वह इस युद्ध के पूर्व ही अन्य देशों में जाकर आबाद हो चुके थे) कि जहां से वह लोग हिन्दु कश पर्वत सें होते हुये ईरान में जा बसे और इधर आर्य्य जाति के जथ्थों के जथ्थे पूर्व की ओर से बढ़ते हुये उत्तरीय भारतवर्ष में आ बसे इस प्रकार सर्व भूमि का नाम आर्य्यवर्त हुआ। इससे हम कह सकते हैं कि ऋग्वेद की सप्तसिन्धु और यन्दावस्ता की हप्ता-हिंदु एक ही भूमि थी परन्तु इस बात का पता लगाना कि यह भूमि वर्तमान समय में कौन सी भूमि है। इसका उत्तर बहुत ही कठिन है।

एरिया तथा आर्य्य जाति का इष्टदेव—तदनन्तर हम आपको एरियन जाति के अहुरमज़द और आर्य्यन जाति के असुर नाम का पता बतलाते हैं। क्यों कि इस से बेहतर हमारे पास आपके संतोष दिलाने के लिये और कोई साधन नहीं है कि हम आपको उनके इष्ट देवों के नामों की पूरी २ समानता दिखला देवें इस बात की तो चन्दा न कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती कि हम आपको आहुर मजद शब्द के पहलवी भाषा के होने का प्रमाण देवें क्योंकि इसको तो सामान्य तया आज कल के सभी लोग जानते हैं कि आहुर मजद नाम एरिया जाति के पूज्य परमेश्वर का मुख्य नाम है। परन्तु इस बात की आवश्यकता है कि असुर नाम से आप को भली प्रकार परिचय दिला दिया जावे। अतः देखो ऋग्वेद मण्डल १, २४, १४ तथा १, ५४, ३ व १: ६४, २ व १. ११०. ३ व २, २७, १० व २, २८, ७ व ४, ५३,

१ व ५, १२, १, व ५, १५, १, व ५, २७, १ व ५, ४९ १ व ५,४६, ३२, व ५. ६३. ३ व ५, ६३, ६ व ७, ३६,२ व ७, ६५, २ व ७, ९६,१ व ८, ४२, १ व ८, ६०, ६ व १०, , १०, २ व १०, ५५, ४ व १०,९६, ११ व १०, ९९, २ व १०, १०५, ११ आदि १५० स्थानों मे ईश्वर के इन्द्र वरूण मित्र मरूत, प्रजापति, त्वष्ट्री अग्नि, सरस्वती, स्वत्री, प्रजन्या के नामों का विषेषणा असुर नाम से विख्यात किया गया है जिस में से ग्यारह स्थानों को छोड़कर शेष सब जगहों में ईश्वरादि पूज्य और स्तुति योग्य अर्थों में प्रयोग किया गया है इस से आप यह अन्दाजा लगा सकते हैं कि ऋग्वेद का असुर और यन्दावस्ता का आहुर मजद् एक ही नाम है केवल यन्दावस्ता भाषानुसार सकार का हकार हो गया है जैसा संस्कृत के सोम का होम और सप्ता का हफ्ता मास का माह सेना का हेना असिम का अहमी सन्ति का हन्ति और असु का अहु आदि हो गये हैं।

वैदिक तथा यन्दिक नाम—अब हम आप को वेद तथा यन्द के कतिपय उन नामों की समानता दिखलाते हैं जो वर्तमान समय में इनकी पुस्तकों में उपलब्ध हो सकते हैं यथा वैदिक अङ्गिरा. आवस्तिक अङ्गरोहे, कृशाश्व, यन्द का कृशाशव या कृशाशया और वेद का उष्णिक जिसको पौराणिक सृष्टि में असुरों का गुरु शुक्राचार्य्य और तैतरिय संहिता का उष्ना कहा गया है इसको यन्द के वेहराम यश्त में कौमी उषा और यन्दा वस्ता में उषीनेमु या उष्नाक कहा गया है वेद का इशाश्व अवस्ता का विश्ताश्पा नियत किया गया है इस विश्ताश्पा नाम को वर्तमान फारसी भाषा में गुशतासप और गुसतासप भी कहते हैं यह शब्द कभी कभी या से भी प्रयोग किया जाता है यथा यस्तासप यह नाम वैदिक इश्ताश्व से वहुत कुछ समानता रखता है।

कतिपय बस्तुओं के नाम—आवस्तक हप्ता हिन्दु वैदिक सप्ता सिन्धु अवस्ता के अनुसार अहुर मजद की उत्पन्न की हुई दशवीं भूमि का नाम हरक्यूति है जो वेद के सरस्वती नाम से लिया गया है और बैदिक सरयू नाम जो वर्तमान भाषा

में सरजू के नाम से विख्यात किया जाता है वही अवस्ता के कथनानुसार अहुरमजद की उत्पन्न की हुइ छठी भूमि का नाम हरयू हुआ।

कतिपय व्यवहारिक बातें—वैदिक ऋषि दो लकड़ियों को घिस कर अग्नि को प्रज्वालित करते थे परिया जाति के महानुभाव पूज्य लोग भी ऐसाही करते थे आर्य्य जाति के प्रतिष्ठित वैदिक धर्मानुयायि सज्जन पुरुष प्रत्येक ग्रह में अग्नि होत्रार्थ अग्नि को स्थापित किया करते थे इसी प्रकार प्राचीन परिया जाति के गुरुजन भी ईश्वर स्तुति के लिये प्रत्येक ग्रह में अग्नि को स्थापित किया करते थे जिसका उदाहरण वर्तमान समय के बम्बई आदि देशों केरहने वाले पार्सी भ्राताओं का होम है। और जिस प्रकार आर्य्य लोग विवाह समय में आर्य्यामन वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हैं। इसी प्रकार परिन लोग अपने विवाह समय में परियामन देवता के मन्त्रों का पाठ करते हैं। वैदिक कर्मकाण्डियों के अथर्वन और होता नाम होते हैं इसी प्रकार अवस्था में आथरवा और ज्योता दो प्रकार के पुरोहित माने जाते हैं जिस प्रकार हमारे वर्तमान समय के कर्मकाण्डों में दूध मक्खन फल और पत्तों के गुच्छे और पकवान आदिका प्रयोग होता है इसी प्रकार पार्सियों की कई एक धार्मिक रस्मों में दूध मक्खन (किसी समय में मांस भी सम्मिलित किया जाता था परन्तु आजकल ईश्वर की कृपा से यह बुरी रस्म बन्द हो गई है) फल होमा मेंड़ों की ऊन पत्तों के गुच्छे और कई एक प्रकार के उत्तम २ भोजन तय्यार किये जाते हैं वैदिक स्तोम यज्ञ की पवित्र विधि का अनुकरण बर्तमान पारसियों की धर्म पुस्तक में यजश्ने के नाम से वर्णन किया जाता है और वैदिक आप्री दर्शन जो पूर्णमासी और चतुरमासी नाम से मनाया जाता है यही यथा तथ्य अवस्ता में आफरीगन दारुण और गम्बर नाम से समाप्त होता है अवस्ता के होमा का पवित्र चिन्ह वैदिक सोमा से लिया गया है इस सोमा के लक्षण प्रायः दोनों धर्म शास्त्रों में समान पाये जाते हैं अर्थात् यह बतलाया जाता है कि सोमा एक अति सुंदर सुवर्ण रंग का वृक्ष है कि जिसको विधि पूर्वक घोट कर पीने से निरोग्यता बल और आनन्द प्राप्त होता है

और इसके तय्यार करने में विशेष मंत्रों का उच्चारण किया जाता है और जिस प्रकार आर्य्य जाति में नियत आयु में बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार होता है ठीक इसी प्रकार पारसियों में भी आठ वर्ष या कुछ न्यूनाधिक आयु में बच्चों का कुश्ती संस्कार होता है और जिस प्रकार प्राचीन वैदिक धर्म में ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रादि जातियों का विविधान नहीं मिलता (हमारे इस जाती कथन से कोई महाशय ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रादि वर्णों का निषेध न समझ लेवे किन्तु इस जाति शब्द से वही भाव ग्रहण करे कि जिसको हमने प्रगट किया है अन्यथा उनका विचार सत्य न समझा जावैगा क्योंकि वर्णों का ज़िकर दसातीर और यन्दावस्ता में भी आया है यथा हूरस्तारान ब्राह्मण और नूरस्तारान क्षत्री सूरस्तारान वैश्य येज़स्तारान वैश्य यह नाम दसातीर भाषा के हैं और पहिलवी अर्थात् यन्द भाषा में रथू नान रथेस्ताराम वस्तरयोशान, हुतखिशान परंतु इन नामों से किसी भिन्न जाति का बोध नहीं होता) उसी प्रकार यन्दादि पारसी धर्म शास्त्रों में भी जाति भेद का कोई चिन्ह नहीं मिलता और जिस प्रकार वैदिक धर्म में किसी देवी देवता अर्थात् किसी विशेष व्यक्ति की मूर्त्ति पूजा का व्याविधान नहीं मिलता इसी प्रकार यन्द धर्म में भी दादाराहुर मज़द के अतिरिक्त किसी व्यक्ति की उपासना नहीं बतलाई गई और नहीं इन धर्मों में से किसी ने अपने मन्दिरों में मूर्त्तियों के रखने की आज्ञा दी है।

क्या अब भी आपको सन्देह है।

मैं समझता हूं कि अब आपको हमारी इन उपरोक्त समानताओं के विषय में किसी प्रकार का सन्देह न रहा होगा क्योंकि इस संसार में प्रत्येक बात के जानने के लिये उसके मुख्य लक्षणों का जान लेना ही काफी है अतः मनुष्य जाति की ईयत्ता के जानने के लिये उनके इष्ट देव अर्थात् परमात्मा का जान लेना मुख्य बात है यदि उनका इष्ट देव एकही सिद्धि हुआ तो

समझ लीजिये कि वो मनुष्य भी एकही जाति के अङ्ग हैं परन्तु कतिपय नामधारी विद्वान ये प्रश्न करेंगे कि क्या रूमी ष्यामी जर्मनी यूनानी आदि देशों के रहने वाले मनुष्य भी एक जाति में संमिलित हो सक्ते हैं हम कहेंगे कि अवश्य मेव वो भी आर्य्य जाति के मेम्बर हैं क्योंकि रूम श्याम जरमन आदि उन देशों के आधुनिक नाम हैं वास्तिविक में वह सब देश आर्य्यों के हैं और उनके रहने वाले सब लोग आर्य्य हैं यह संभव है कि आप लोग आरमिनियन ऐरियन थेरिसन शरमन आइरलैंएड अरब और मिश्र आदि प्राचीन नामों का न जानते हों परन्तु इस में कोई संदेह नहीं कि "समान प्रसवात्मिका जातिः ॥ न्याय शास्त्र अ० ॥ १ ॥ सू० ॥ १३८ ॥ अर्थात् समान आत्मा का नाम जाति है और सांख्य शास्त्र कारिका ॥ ५७ ॥ महाभारत शा० प० अ० ॥ १८८ ॥ और बृ० उ० ॥ १ ॥ ॥ ४ ॥ के १२ व १३ वा० उ० ॥ १६ ॥ २० ॥ भा० ॥ ३ ॥ १० ॥ ॥ १८ से २४ ॥ आदि आर्य्य शास्त्रों में इस मनुष्य जाति की ईयत्ता के विषय में कोटिशः प्रमाण मिलते हैं परन्तु मैं आप के इस सन्देह रूपी भूत को निकालने के लिये एक ऐसी यक्ती प्रस्तुत करता हूं कि जिससे फिर कभी स्वप्न में भी आप के हृदय में ये प्रश्न उत्पन्न न हो सके कि ये अन्यदेशी मनुष्य हमारे भाई नहीं वह प्रबल और अखंडनीय युक्ति यह है कि संसार भर की मुख्य भाषाओं का वास्तिविक श्रोत केवल एक संस्कृत वाणी ही है जिस के प्राचीन नाम हमें सूचिति करते हैं कि हम सब का पिता महः एक ही था यथा संस्कृत में [१] पितर यन्द पैतर फारसी पिदर यूनानी पाटर लातीनी पिटर जरमनी पिटर गाथक फाडर एसलेंएड फाधर स्वैडश तथा डैनश फाडर डच वैडर एंगिलो सैकसन फेडर अङ्गरेजी फादर इस से आप समझ गये होंगे कि इन सर्व नामों का मूल श्रोत केवल पितर नाम है कि जिस के त कार को दकार कर के उन्हों ने अपनी भाषाओं में पिदर फादरादि शब्दों की घड़ंत की तथा [२] मातृ संस्कृत में फारसी मादर यूनानी मैतर लातीनी माटर एंगिलो-सैकिसन-डैनिश-तथा-स्वैडस-मडर एसलाइन्डिक मधर जरमनी मतुर अङ्गरेजी मदर बेटी के लिये संस्कृत में [३] दुहितृ-यन्द दुगधर-फारसी दुख्तर-

यूनानी थुगतर—जरमनी तुकतर-गाथक ढोटर—डायनश तथा स्वैडश डाटर-एंगिलो सैकसन डुहटर-अंगरेज़ी डाटर-बैटे के लिये [४] संस्कृत में पुत्र-यन्द पुथर भाई के लिये संस्कृत में [५] भ्रातृ-यन्द ब्रातृ फारसी ब्रादर यूनानी फ्रातर लातीनी फ्रेटर प्राचीन जरमनी ब्रोडर स्वैडस तथा डैनश ब्रोडर एंगिलो-सैकसन बोधर अंगरेजी ब्रादर बहिन के लिये संस्कृत में (६] स्वस्ट—लातीनी स्रोर तथा सुसर प्राचीन जरमनी स्वसर गाथक स्वेटर एंगिलों सैकसन स्वाटर तथा स्वैटर अंगरेजी सिस्टर चचा के लिये [७] संस्कृत में पितृव्यः यूनानी पत्रोस नातिनी के लिये पटरोसे-नाती के लिए [८] संस्कृत में नैतृ लातीनी नियोपुस नातिनी के लिये [९] संस्कृत में नप्तृ लातीनी नपृस सुसर के लिये [१०] में श्वसुर फारसी खुसुर यूनानी में क्रूरस लातीनी सुसुर गाथक और पंजाबी सौरा आदि और भी बहुत से ऐसे शब्द पाये जाते हैं कि जिनका मूल स्रोत केवल संस्कृत भाषा ही है। परन्तु समय की न्यूनता तथा पुस्तकाकार के बढ़ जाने का भय हमें आज्ञा नहीं देता कि हम उन शेष नामों को भी आप सज्जनों की सेवा में उपस्थित करें इसलिये आशा है कि आप भी मेरी इन वास्तविक तथा सत्य भावनाओं से सहमत होते हुये शेष के लिये क्षमा करेंगे ॥

(तालमूद और उसके भाग)

यह धर्म पुस्तक वर्तमान यहूदी ईसाई तथा मुसलमान भ्राताओं के प्राचीन नबियों के पवित्र लेखों का एक अपूर्व संग्रह है। जिसको ईसाई प्राचीन "नियम" मुसलमान "तौरेत" ज़बूर, सुहुफे अम्बिया, तथा यहूदी तालमूद कहते हैं। इस ग्रन्थ संग्रह का समय मसीह से ४०१४ वर्ष पूर्व से ३९७ वर्ष पूर्व तक बतलाया जाता है परन्तु इस संग्रह के भागों में बहुत बड़ा भेद है (१) ईसाइयों के समीप इसके निम्नलिखित २९ भाग माने जाते हैं। यथा (१) पैदायश (२) खुरूज (३) अहबार (४) गिन्ती (५) इस्तिश्ना (६) यशू (७) क़ाज़ीऊ (८) रूत (९) पहला सम्वेल (१०) दूसरा सम्वेल (११) पहला सलातीन (१२) दूसरा सलातीन

(१३) पहला इतिहास (१४) दूसरा इतिहास (१५) अज़रा (१६) नहमिया (१७) आस्तर (१८) अय्यूब (१६) जबूर (२०) अमसाल (२१) वाइज (२२) गजलुल गजलात (२३) यशाया (२४) यरम्या (२५) यरम्या का नौहा (२६) हज़कीएल (२७) दानीएल (२८) होशिया २६) यूएल (३०) अमूस (३१) अब्दिया (३२) यूना (३३) मेका (३४) नहूम (३५) हबकूक (३६) सफानिया (३७) हज्जी (३८) जकरीय्या (३९) मलाकी (२) और मुसल्मानों के समीप बरिवायते अबुजर कुल ईश्वरी पुस्तकें १०४ बतलाई जाती हैं जिनमें से इञ्जील व कुरान को छोड़ कर शेष १०२ पुस्तकें इस प्रकार मानी जाती हैं कि १० आदिम की और ५० शीष की और ३० इदरीस की १० इब्राहीम की और १ मूसा की और १ दाऊद की और (३) दूसरी रिवायत में इस प्रकार वर्णन किया गया है कि २१ आदिम की और २१ शीष की और ३० इदरीस की और १० इब्राहीम की ११ मूसा की १ दाऊद की हैं। और (४) यहूदियों के समीप निम्न लिखित कुल ६४ पुस्तकों के नाम मिलते हैं (१) पैदाइश (२) खुरूज (३) एहबार (४) गिन्ती (५) इस्तिस्ना (६) ग्यारह ज़बूर (७) अय्यूब की दूसरी पुस्तक (८) मुशाहिदात की पुस्तक (९) पैदाइश की छोटी पुस्तक (१० मेराज की पुस्तक (११) इसरार की पुस्तक (१२] टैस्टमेन्ट की पुस्तक (१३) इकरार की पुस्तक (यह तेरह पुस्तक मूसा की मानी जाती हैं) और इसके अतिरिक्त यशुआ से लेकर मला की पर्य्यन्त तथा जङ्ग नामः और अलेसर की की पुस्तक, याहू की पुस्तक, समिया की पुस्तक, इदू की पुस्तक, नाथन की पुस्तक, अखिया की पुस्तक, मुशाहिदाते ईदू, आमाले सुलेमान, यशाया की पुस्तक, मुशाहिदाते यशाया, इतिहास से समूएल, सुलैमान के १००५ गीत, सुलैमान की ३००० अमसाल, यरम्या का मरसीयः आदि यह कुल ६४ पुस्तकें हैं (५) जिनमें से सामरियों के समीप केवल। (१) पैदाइश (२) खुरूज (३) एहबार (४) गिन्ती (५) इस्तिस्ना (६) यशू (७) कांजीऊं यह ७ पुस्तकें प्रमाणिक मानी जाती हैं (६) और इनके अतिरिक्त (१) आस्तर की पुस्तक (२) बारूक की पुस्तक और (३) एक भाग दानीयल की पुस्तक का (४) और तू ब्यास

की दो पुस्तकें (५) ज्यूदत की पुस्तक (६) वयूम की पुस्तक (७) पेकलीज़ की पुस्तक (८) तथा मक़ाबीस की दो पुस्तकें भी प्राप्त हैं। परन्तु इनको लगभग सभी लोगों ने क्षेपक मान कर छोड़ दिया है।

इनके अतिरिक्त और भी कई एक छोटे २ भागों के नाम मिलते हैं। परन्तु उनके अप्रमाणिक होने के कारण हमने उन्हें छोड़ दिया है। और जिन भागों को यहूदी तथा ईसाई विद्वानों ने प्रमाणिक मानाहै उनमें भी प्रायः बहुत कुछ मत भेद पाया जाताहै। यथा (१) जिन भागों को यहूदी लोग प्रमाणिक मानते हैं उनमें से कई एक भागों को इसाई लोग अप्रमाणिक बतलातेहैं। (२) और जिन भागों को रोमन कैथोलिक लोग प्रमाणिक मानते हैं उनमें से कई एक भागों को प्रोटेस्टन्ट इसाई अप्रमाणिक बतलाते हैं (३) और जिन भागों को फ़क़ही सदूकी (यहूदी) प्रमाणिक बतलाते हैं सामरी फ़रीसी यहूदी लोग उन्हे अप्रमाणिक सिद्ध करते हैं। (४) और जिन भागों को इसाई, फ़क़ही, फ़रीसी, सदूकी सामरी आदि प्रमाणिक मानते हैं लगभग उनसबको मौहम्मदी लोग अप्रामाणिक तथा तिरस्कार योग्य समझते हैं।

तालमूदके प्रथमभाग अर्थात् तौरते के अप्रमाणिक होनेके कतिपय प्रमाण

यद्यपि इन लोगों का यह पक्का विश्वास है कि "अल्लामियां ने सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य जाति के उपकारार्थ आदिम व मूसा आदि कई एक नवियों द्वारा अपने ज्ञानको प्रकाश किया तथापि वर्तमान समय की तौरेत ज़बूर आदि यहूदी तथा इसाइयों की धर्म पुस्तकों को वे लोग ईश्वरीय ज्ञान नहीं मानते उनका यह विचार है कि इन लोगों ने अपने प्राचीन धर्म पुस्तकों को कई एक अंश में बिल्कुल बदल डालाहै। जिसकी पुष्टयार्थ हम उनके तौरेत बिषयक कतिपय विरुद्ध प्रमाणों को आप लोगों के सन्मुख उपस्थित करते हैं। सबसे पूर्व हम तौरेत के आन्तरिक बिषयों को, उपस्थित करते हैं कि जो इब्रानी, सामरी तथा यूनानी भाषाओं में पारस्परिक बिरोध रखते हैं॥

प्रथम विरोध—इब्रानी भाषा की तौरेत में "आदिम से नूह के तूफ़ान तक का समय १६५६ वर्ष नियत किया गया है। और सामरी में १३०७ और यूनानी में २२६२ व २२४२ वर्ष का वतलया गयाहै,,। (२) इब्रानी भाषा में तूफ़ान नूहसे इब्राहीम तक का समय २९२ सामरी में ९४२ यूनानी में १०७२ व ११७२ वर्ष का माना जाता है (३) इब्रानी भाषा की तौरेत में आदिम से मसीह तक का समय ४००४ वर्ष यूनानी में ५८७४ सामरी में ४७०० वर्ष का माना गयाहै (४) पैदाइश बाब ४ आयत ८ में लिखा है 'तबकाइन अपने भाई हाबील से यों बोला और जब वे दोनों खेत में थे,, स्काट साहिब लिखते हैं सामरी व यूनानी में यह शब्द अधिक है "बोला कि आओ मैदान को चलें" जो इब्रानी में नहीं (५) हारन साहिब के कथनानुसार पैदाइश ५,२५ में से कुछ वाक्य रहगये हैं,,। [६] पैदाइश ७, १७ में ४० दिन का शब्द लिखा है और यूनानी और लातानी में ४० दिनरात। [७] पैदाइश १०, ११ के पश्चात् इतना लेख सामरी में अधिक है। "और यहोवाने मूसाको खिताब करके फ़रमाया कि तुम इस पहाड़ पर बहुत रहे अब फिरो और सफ़र करो और अमूरियों के पहाड़ और उनके सब वाशिन्दों में मैदानों में पहाड़ों में नशेब में जुनूब को और दर्या की बनावर को किन आनियों की सरज़मीन और लुबनान में बड़े शहर तक जो नहर फुरात है। जाओ देखो मैं ने फिर ज़मीन तुम्हें इनायत की दाखिल हो और उस जमीन पर जिसकी बाबत यहोवाने तुम्हारे बाप दादों इब्राहीम इसहाक़, याकूब से क़सम की कि तुमको और तुम्हारे पश्चात् तुम्हारी नस्ल को दूंगा मीरास में लो,,। [८] पैदाइश २०, ११ "और वह मेरी जोरू के वास्ते मुझको मार डालेंगे,, इस मुकामपर यूनानी में इतना अधिक है "इसलिये वह जोरू कहने से खौफ़ना कथा कि शायद शहर के आदमी उसको उसकी जोरू कहने से मारें, [९] पैदाइश २९, ३ में गल्ला शब्द रेवड़या बकरियों के समूह अर्थ आया है और यूनानी में गडरिया अर्थ में आयाहै। [१०] पैदाइश ३०, ३६ के पश्चात् सामरी में इतना लेख अधिक है "और खुदा के फिरस्ते ने याकूब को कहा कि ऐ याकूब वह बोला मैं हाज़िर हूं। तब उसने कहा कि अपनी आंख उठा और देख कि

सारे मेंडे जो भेडों पर चढ़े तौफदार और दाग़ी तथा चित्कबरे हैं इस लिये कि जो कुछ लाबानने तुझसे किया मैंने देखा बैति एलका खुदा जहां तूने सतून पर तेलमला और जहां तूने मुझसे नज़र का अहद किया मैं हूं अब उठ इस ज़मीन से निकल चल और अपने कुनबे की जमीन पर फिर जा, । (११) पैदायश ३५, २२ में लिखा है कि "रोबिन अपने बाप की बलहा नामी स्त्री से हम बिस्तर हुआ, । (१२) खुरूज २,२२ के पश्चात् इब्रानी की अपेक्षा यूनानी तथा लातीनी में यह लेख अधिक है " और उसने एक दूसरा जना जिसका नाम अल आज़र रक्खा क्योंकि उसने कहा मेरे बाप का खुदा बड़ा मदद गार है और उसने मुझे फिर औन की तलवार से बचाया " । (१३) खुरूज ६,२० वह उससे दो बेटे जनी एक हारून दूसरा मूसा, यूनानी में हारून, मूसा और मरियम उनकी बहिन को जनी, अर्थात् इब्रानी में मरियम का वर्णन नहीं है ॥ (१४) खुरूज ११, १३ के प्रथम वाक्य के पश्चात् इतना लेख सामरी में अधिक है " और मूसा ने फिर औन को कहा कि खुदावन्दयों कहता है कि इस राईल मेरा बेटा है बल्कि प्लौठा है सो मैं तुझे कहता हूं कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करे लेकिन तू उसे जाने नहीं देता तू देख मैं तेरी प्लौठी के बेटे को मार डालूंगा;। (१५) बनी इस राईल के मिश्र में रहने का समय खुरूज बाब १२ आयत ४० में ४३० वर्ष का माना गया है । हालाँ कि यह लोग २१५ वर्ष मिश्र में रहे थे तदन्तर इसी आयत में सामरी व यूनानी भाषाओं की खुरूजमें आबाव अजदाद शब्द आया है जो इब्रानी में अप्राप्त है। (१६) एहबार ९' २१ "जैसा मूसाने हुक्म दिया" यूनानी में है जैसे खुदा ने मूसा को हुक्म दिया, (१७)। गिन्ती १०, ६ में इब्रानी की अपेक्षा यूनानी में इतना अधिक है "और जब तुम तीसरी आवाज़ फूँको तो मग़रबी खेमोंका कूच होवे (१८) गिन्ती २४, ७ " और वह अपने लोटों से पानी बहावेगा और उसका तुख्म बहुत पानियों में होगा और उसका बादशाह अआग़ से फायक होगा और उसकी बादशाही बुलन्द होगी। यूनानी में इस प्रकार है " और उसके दर्म्यान से एक आदमी पैदा होगा और वह हुक्म करेगा बहुत आदमियों

७

पर और एक सलतनत वहुत वड़ी अआग से पैदा होगी । और उसकी सलतनत से वढ़ी होगी" (१९) गिन्ती २६, १० में लिखा है" ज़मीन ने अपना मुंह खोला और उन्हें करह समेत निगल लिया उस वक्त वह गिरोह मरा जव कि आगने २५० आदमियों को खा लिया सो वह इवरत के वास्ते एक निशान हुई, और सामरी में यों लिखा है " और जमीन निगल गई उनको जव कि वह गिरोह मरा और आगने खा लिया कोरह को २५० आदमियों समेत जो एक इवरत हुई (२०) इस्तिस्ना १०-६ से ८ तक में लिखा है कि उन्होंने जूद जूदा को कूच किया और जुदजूदा से यूतवात को और गिन्ती २३, २४ में लिखा है वह उसे वहां से जूफ़ीम के मैदान में कोहे पसगः की चोटी पर ले गया। इस्तिस्ना में लिखा है कि हारून का देहान्त मुसीरा में हुआ । और गिन्ती की पुस्तक में कोहे हूर में वतलाया जाता है। (२१) इब्रानी भाषा की इस्तिस्ना वाव २७ आयत ४ में लिखा है " सो तुम जव यर्दन के पार उतर जाओ तो तुम उन पत्थरों की किं जिनकी वावत मैं तुम्हें आज के दिन हुक्म करता हूं। पवाल के पहाड़ पर नस्व कीजियों " । और सामरी में लिखा है गजरूम के पहाड़ पर नस्व कीजियो यह दोनों पहाड़ आमने सामने हैं " (२२) इस्तिस्ना ३२, ५ उन्होंने आपको खराव किया और उनका दाग़ वह दाग़ नहीं है जो उसके लड़कों पर होता है। वह कजरो और टेढ़े करन हैं। और सामरी यूनानी तथा आरामी में "यों ही वह खराव किये गये हैं वह उसके वेटे नहीं हैं वह बेटे गलती या दाग़ के हैं इसके अतिरिक्त ३७ विरोध और भी पाये जाते हैं जिनको कि किसी अन्य स्थान में वर्णन किया जावेगा ॥

द्वितीय विरोध (१) पैदायश १-३१ और खुदा ने सवपर जो उसने वनाया था नजर की और देखा कि वहुत अच्छा है । अय्यूव १५-१४ में है कि इन्सान कौन है जो पाक हो सके और वह जो औरत से पैदा हुआ क्या है जो सादिक ठहरे देख कि वह अपने कुदसियों का एतवार नहीं करता उसकी आंखों में आसमान भी पाक नहीं। (२) पैदायश २-१७ जव आदिम उस दरख्त से खावेगा मर-जावेगा इसके विरुद्ध आदिम ९३० वर्ष जीता रहा । (३) पैदायश ६-१९ में दो जानवर लेने की आज्ञा है और ७-२ में सात २ की

आज्ञा है। (४) पैदायश ८-३ में और पानी जमीन पर से रफ्तः २ घटता जाता था और डेढ़ सौ दिन के बाद कम हुआ और सातवें महीने की सत्रवीं तारीख को अरारात के पहाड़ों पर किश्ती टिक गई और पानी दसवें महीने तक घटता जाता था दसवें महीने की पहिली तारीख को पहाड़ों की चोटियां नजर आईं। इसमें यह बात शोचनीय है कि जब दसवें महीने पहाड़ों की चोटियां नजर आईं तो सातवें महीने में कौन से पहाड़ की चोटी पर किश्ती ठहरी। (५) पैदायश ११-२६ में लिखा है कि इब्राहीम व नहूर व हारान पैदा हुवे तो उनका बाप तारः ७० वर्ष का था और पैदायश १२-४ के देखने से विदित होता है कि जब इब्राहीम हारान से निकला तो उसकी उम्र ७५ वर्ष की थी और तारः २०५ वर्ष का हो के मर इस हिसाब से हिजरत समय में इब्राहीम की उम्र १३२ वर्ष की होनी चाहिये। (६) पैदायश १७-१ में है कि मैं खुदा कादिर हूं। काजी १-१९ में है खुदावन्द यहूदा के साथ था उसने कोहस्थानियों को खारिज किया मगर सहरानशीनों को खारिज न कर सका क्यों कि उनके पास लोहे की गाड़ियां थीं॥ (७) पैदायश १७-१८ में लिखा है कि खुदा ने इब्राहीम से यह वायदा किया था कि मैं किनआन का मुल्क तेरी औलाद को हमेशा के लिये दूंगा। परन्तु यह प्रतिज्ञा पूरी नहीं हुई। (८) पैदायश ४६-४ में है खुदा ने याकूब से वायदा किया कि मैं तुझे मिश्र से फेर लाऊंगा। परन्तु पैदायश ४६-३३ से विदित होता है कि याकूब मिश्र ही में मर गया। (९) खुरूज १५-३ में लिखा है कि खुदा साहिबे जंग है' परन्तु इब्रानियों के पत्र १३-२० से विदित होता है कि वह सलामती का खुदा है। (१०) खुरूज २०-४ में लिखा है कि मूर्त्ति न बनाओ परन्तु खुरूज २५-१८ में है कि दोकुरोबियों अर्थात फरिश्तों की मूर्त्तियें बनाओ (११) खुरूज २०-१३ में लिखा है कि तू खून मत कर जिना मत कर, परन्तु जकरिया १४-२ में लिखा है कि खुदा सारी कौमों को यरोशलीम पर चढ़ाई के लिये जमा करेगा। (१२) खुरूज २०-२३ में है ताकि तेरी बरेहनगी उसपर ज़ाहिर न हो, यशाया ३-१७ में है खुदावन्द उनकी अन्दाम निहानी को उखाड़ेगा। (१३) खुरूज २३-३ में है मैं तुम्हारे साथ न जाऊंगा फिर

आयत १४ में है मैं खुद तुम्हारे साथ जाऊंगा । (१४) खुरूज ३३-२० में खुदा कहता है ऐसा कोई नहीं जो मुझे देखे और जीता रहे पैदायश ३२-३० में लिखा है मैं (याकूब) ने खुदा को रूबरू देखा और मेरी जान बच रही है । (१५) एहबार २१-७ में है फ़ाहिशः औरतों से निकाह न करें और होशिअः १-२ में है कि खुदा ने होशिअः को हुक्म दिया कि फाहिशः औरतों से निकाः करे । (१६) गिन्ती ४-३ में है ३० से कम और ५० वर्ष से ज्यादा उम्र का कोई आदमी खादिम न हो फिर ८-२४ में है कि २५ वर्ष से कम का न हो और ज़ायद जिस कदर चाहे हो (१७) गिन्ती २५-६ में लिखा है वे जो उस वबा में मरे चौबीस हज़ार थे फिर करन्तियों के प्रथम पत्र के १-८ में है कि एक दिन में २३००० तेइस हजार मरे पड़े थे। (१८) फिर गिन्ती २३-१६ में है कि खुदा आदमी नहीं है जो झूठ बोले और गिन्ती १४-३० में है कि तुम उस ज़मीन तक न पहुंचोगे कि जिसकी बाबत मैंने क़सम खाई (१९) इस्तिस्ना ७-५ में है कि बनी इसराईल के रहम करने से मना किया, मेका ७-१८ में है खुदा रहम से खुश है (२०) इस्तिस्ना ८-५ खुदा मिस्ल बाप के तरबीय्यत करता है गिन्ती ११-२३ में है गोश्त दांतों ही तले था कि खुदा ने सख्त मार से मारा (२१) इस्तिस्ना ३३-१० में है कि बनी इसराईल की मुहाफेजत खुदा ने आंख की पुतली के मानिन्द की और गिन्ती २५-४-५-६ में है कि २४००० को बेरहमी से सूली पर मरवा डाला आदि यह स्थाली प्लाक न्यायेन उदाहरण आपके समक्ष में उपस्थित किया गया है इसके पश्चात अब हम तालमूद के द्वितीय भाग अर्थात् जबूर के अप्रमाणिक विषयक कतिपय उदाहरण आपकी भेंट करते हैं ।

तृतीय विरोध (१) जबूर १४-३ के पश्चात् लातीनी, कोडेक्स, बोराटीका नोस के अनुवादों में इतना लेख अधिक है "उनके गले खुली हुई कबरें हैं वे अपनी जुबानों से झूठ कहते हैं उनकी लबों के अन्दर काले सांपों के जहर हैं। उनके मुंह लानत व कड़वाहट से भरे हैं उनके पांव खून करने के लिये तेज हैं हालांकि और अजीय्यत उनकी राहों में है और आराम की राह नहीं पहचानते उनकी आंखों के सामने खुदा का खौफ़ नहीं है "(२)



ज़बूर २२–१६ के लातीनी अनुवाद में यों लिखा है " वे मेरे हाथ और पांव छेदते " इसी के स्थान में इब्रानी में इस प्रकार है " और दोनों हाथ मेरे मानिन्द शेर के हैं। (३) और महाशय हनरी और स्काट साहिब के कथनानुसार ज़बूर २२–१६ के पश्चात् इतना लेख इब्रानी में अधिक है " उन्होंने मुझको जो प्यारा है मकरुह लाश करके खारिज किया और उन्होंने मेरे बदन को मेखों से छेदा " (४) ज़बूर ३४–१० में है " बाज हाजतमन्द और भूखे हैं " यूनानी में इस प्रकार है " अमीर आदमी फ़कीर और भूखे हैं " (५) ज़बूर ४०–६ में है " और तूने मेरे कान खोले " यूनानी में है " और तूने मेरे लिये एक बदन तय्यार किया" (६) महाशय हनरी व स्काट साहिब के कथनानुसार ज़बूर ९३–१२ में इब्रानी की अपेक्षा यूनानी में इतनी इबारत अधिक है " तब मैंने कहा " (७) ज़बूर ७५–८ में है खुदावन्द के हाथ में प्याला है जिसमें सुर्ख शराब है और मुरक्कब से भरा है जिसे वह पिलाता है और उसकी तिलछट को भी जमीन के सारे शरीरों पर निचोड़ेंगे और पियेंगे " यूनानी में इस प्रकार है कि एक प्याला तेज शराब का जो मुरक्कब से भरा है डालता है दूसरे में लेकिन फिर भी तिलछट उसकी खाली नहीं होती और तमाम शरीर जमीन के पियेंगे (८) जबूर ८१–५ में है वहां मैंने एक बोली सुनी जो न समझा यूनानी में यों है " उसने वह बोली सुनी जिसे वह न समझा (९) जबूर ९७–७ में है सारे माबूदो तुम उसे सजदा करो " यूनानी में है सारे फरिश्ते उसकी इबादत करें (१०) जबूर १०५–२८ में है " उन्हों ने उसके हुकम से सरकशी न की " यूनानी में है सरकशी की (११) जबूर ११८–२७ में है " कुरबानी को मजबह की करनों तक रस्सी से बांधो " यूनानी में है ईद साथ मोटी शाखों के कायम करो करनों कुरबानी तक (१२) जबूर ११९–८९ में है " ऐ खुदावन्द तेरा सुखन आसमान पर साबित है " और आरामी में यों है तूही हमेशा के लिये ए ! यहोवः तेरा कलाम आसमानों पर साबित है (१३) ज़बूर ११९–६१ में है " शरीरों ने मुझे चुराया " यूनानी में है शरीरों के जालों ने मुझे घेरा

चतुर्थविरोध–(१) ज़बूर १९–७ " खुदावन्द की तौरेत

कामिल है कि दिल के फेरने वाली है" और मती ५-१७ में इस प्रकार लिखा है कि "ये न समझो कि मैं तौरेत या नबियों की किताबों को मनसूख करने आया हूं" मनसूख करने नहीं किन्तु पूरा करने आया हूं इससे विदित होता है किया तो खुदा बाप का कलाम असत्य है या खुदा बेटे का अर्थात् मसीह का क्योंकि ईसाइयों के विचारानुसार जबूर खुदा बाप का कलाम है और इंजील खुदावन्द मसीह का और बाप के कलाम से यह सिद्धि होता है कि तौरेत कामिल और मुकम्मल है परन्तु बेटे के कथानुसार वह नाकिस अर्थात् अधूरा सिद्धि होता है अब ईसाइयों को इख्तियार है चाहे बाप का कलाम सत्य माने चाहे बेटे का परन्तु यह बात याद रहे कि यदि बाप का कलाम सत्य मानें तो बेटे का असत्य होगा और यदि बेटे का सत्य मानेंगे तो बाप का असत्य होगा और हमारे समीप यह दोनों असत्य है क्यों कि उनके मतानुसार बाप से बटा और बाप बेटा दोनों से रूहुल कुदुस अर्थात् पवित्र आत्मा निकला है। और यह नियम है कि जो चीज जिससे निकलती है वह उसी का अंश होती है जैसे सोने का टुकड़ा सोना चाँदी का टुकड़ा चाँदी लोहे का टुकड़ा लोहा ही होता है अतः यदि बाप का कलाम असत्य है तो बेटे का भी असत्य है यदि वह यह कहें कि बाप का कलाम अधूरा था बेटे ने उसको पूरा किया तो हम कहेंगे कि जब बेटा बाप से है तो वह बेटा भी नाकिस है क्योंकि वह बेटा अपने नाकिस अर्थात् अधूरे बाप से है। अत यह बात सिद्ध हो गई कि न बाप का कलाम सत्य है न बेटे का (२) जबूर ३०-५ में है "उसका गुस्सा एक दम का है,, और गिन्ती ३२-१३ में है "कि उसने ४० ,वर्ष बनी इसराईल को आवारः रक्खा,, (३) जबूर ४०—६" जबीहा और हदीयः को तूने नहीं चाहा तूने मेरे कान खोले सोख्तनी कुर्बानी और खताकी कुर्बानी को तूतालिब नहीं,, इब्रनियों का पत्र १०-५-६ में है कि "तूने कुर्बानी और नजर की ख्वाहिश नहीं की बलिक मेरे लिये एक जिस्म तय्यार किया पूरी सोख्तनी कुर्बानियों और गुनाह कि कुर्बानियों से तू खुश न हुआ" (४)जबूर १४५-८ में है "खुदावन्द महरबान और सरासर लुत्फ है" पहिला सम्वेल ६-१९ सो उसने ५०

हजार और ७० आदमी मार डाले,, अब हम इस द्वितिय भाग को यहीं पर छोड़ते हुये तालमूद के **तृतीय भाग** अर्थात् सुहुफ़े अम्बिया की पड़ताल का आरम्भ करते हैं। अवलोकन कीजिये

पंचम विरोध—(१) काजीयों की पुस्तक के प्रथम बाबकी १८ वीं आयत में है "लेखिया,, और यूनानी में है "न लिया" (२) पहला सम्वेल १३--१५ में है "सम्वेल उठा और जल जाल से विनया मीन के शहरजीफ़ा को चढ़ गया तव साउल ने उन लोगों को जो उस पास हाज़िर थे गिना और वे मरद छः सौ के करीब थे॥ यूनानी में इस प्रकार है सम्वेल उठा और जल जाल से चला गया और वाकी लोग बाद साउल के मय उन आदमियों के कि जिनसे लड़ाई की गई और वह जल जाल से जीफ़ा में आये तबसाउल ने उन लोगों को गिना जो उस पास हाजिर थे वह ६०० थे" अर्थात सम्वेल जल जाल से मय उन लोगों के चला गया कि जो उस लड़ाई में हाजिर थे। (३) पहला सम्वेल १४-१८ "उस वक्त सम्वेल ने अखिया को कहा कि सन्दूक यहां ला क्योंकि इलाह उस रोज इसराईल में था" यूनानी में इस प्रकार है। उस वक्त साउल ने अखिया को कहा कि अफूद को ला क्योंकि उस वक्त अफूद को वनी इसराईल के आगे पहिने हुये था (४) दूसरा सम्वेल ६--२६ सो उन्हो ने घर के अन्दर चुपके से घुसकर गेहूं लेने के बहाने से उसकी ५ वीं पसली में मारा और एकाव अपने भाई बोनः समेत भाग गया" यूनानी मे है "और अब देखो दर्वान घर का गेहूं साफ करता था और थक कर सोया पस एकाव और वोना दोनो भाई चुपके से घर में गये गेहूं लेने के बहाने से उसकी पांचवी पसली में मारा और एकाव अपने भाई बोना समेत भाग गया" (५) दूसरी सलातीन की पुस्तक के २३--१६ में इतना लेख यूनानी से अधिक है "जब यरबआम मजवः के सामने खड़ा था और उसने नजर फेरी और मर्दे खुदा की जिसमें अलफाज इरशाद किये थे कबर को देखा" (६) तवारीख की दूसरी पुस्तक के १३--३ में जो चार लाख व ५ पांच लाख व ८ लाख के शब्द पाये जाते हैं उन के विषय में हारन साहिब के

कथनानुसार लातीनी की कई एक प्रतियों में ४०लाख व ८०हजार व ५० हजार की गणाना मिलती है (७) हारन साहिब कहते हैं कि हमारे यहां आस्तर की पुस्तक १० बाब ३ आयत पर समाप्त होती है और यूनानी व लातीनी में १० बाब की दसवीं आयत पर और इसके अतिरिक्त ६ बाब और भी मिलते हैं जिनको यूनानी तथा रूमी लोग मानने योग्य समझते हैं (८) अय्यूब ४२-१७ में है कि अय्यूब उम्र दराज और पीरसाला हो कर मर गया यूनानी में इतना अधिक है कि वह उन लोगों के साथ जिनमें खुदावन्द उठाता है फिर उठेगा इसके पश्चात् अय्यूब का एक नस्ब नामः भी है।

(६) अमसाल १८-१ का लेख विद्वानों के समीप बड़ा गड़ बड़ है यूनानी वालों ने उसका अनुवाद यों किया है " वह जो दोस्त से विदा हुआ चाहता है उजर ढूढ़ता है लेकिन वह हमेशा काबिल मलामत होगा और प्रोटेस्टन्ट ईसाइयों के विचारानुसार इस प्रकार है मग़फिरत ख्वाहिश के माफ़िक ढूढ़ता है और हरमनसूबः में छोड़ता है (१०) यशाया ४०-५ में है " खुदावन्द का जलाल आश्कारः होगा और सब आदमी एकहीं साथ उसे देखेंगे खुदावन्द के मुंह ने यह फरमाया यूनानी में इस प्रकार है " खुदा-वन्द का जलाल आश्कारः होगा और सब आदमी एक साथ देखेंगे न जात हमारे खुदा की है क्योंकि खुदावन्द के मुंह ने यह फरमाया है" । (११) यरम्या २-३४ " मैंने उस जुस्तजू से नहीं पाया बल्कि उन सबों पर" सुर्यानी व यूनानी में इस प्रकार है " मैंने उसे खोदे हुये सूराख से नहीं पाया बल्कि ऊपर हर बलूत के" (१२) यरम्यां ११-१५ "और मुक़द्दस गोश्त तुझसे गुजरजाता यूनानी में इस प्रकार है " "क्या नमाज़ें और पाक गोश्त तुझ से तेरी शरारतें हटा देंगे " (१३) यरम्या ३१-३२ बावजूदे कि मैं उसका इसके स्थान में यूनानी में इस प्रकार है मैंनें उसका मुलाहिजा न किया (१४) यरम्या ४६-१५ में है क्या सबब है कि तेरे बहादुर गिराये गये वह खड़े न रहे क्योंकि खुदावन्द ने उनको औंधा किया" यूनानी में इस प्रकार है " क्यों, अब पस तेरा पसन्दीदः सांड़ तुझ से भागा क्यों वह खड़ा नहीं रहा इस लिये कि खुदावन्दने उसे कमज़ोर किया और तेरागिरोह था कमज़ोर और बे मुरव्वत।

प्राचीन नियम का पुनरावलोकन—प्रियवर इनकतिपय विरोधों से इतना तो आपको भली प्रकार विदित होगया होगा कि यह ग्रन्थ संग्रह वास्तव में वह ग्रन्थ नहीं कि जिसको यहूदी तथा ईसाई लोग ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं तथापि उनके अनुमोदनार्थ हमफिर एकबार इस प्राचीन नियम का पुनरावलोकन किये देते हैं कि जिससे आपको इस ग्रन्थके रद्दोबदल का पूरा पूरा पता लगजावे

अनुमोदन नं० (१)—आदम की सम्पूर्ण आयु इब्रानी भाषा की पुस्तकानुसार १३० और सामरी भाषाकी पुस्तकानुसार १३० वयूनानी भाषाकी पुस्तकानुसार २३० और ऊर्दूकी पैदायश ५-५ के अनुसार ९३० वर्ष की सिद्धि होतीहै (२) शीष की आयु इब्रानी व सामरी में १०५ और यूनानी में २०५ और पैदायश ५-८ से ९१२ वर्ष की प्रतीत होती है (३) और अनूश की आयु इब्रानी व सामरी में ९० यूनानी में १९० तथा पैदायश ५-११ में ९०५ वर्ष की है (४) कीनान की इब्रानी व सामरी में ७० यूनानी में १७० और पैदायश ५-१४ में ९१० वर्ष की है (५) महललाइल की इब्रानी व सामरी में ६५ यूनानी में १६५ तथा पैदायश ५-१७ में ८९५ वर्ष की है (६) यारिद की इब्रानी, सामरी, यूनानी में १६२ तथा पैदायश ५-२० में ९६२ वर्ष की है (७) हनूक की इब्रानी व सामरी में ६५ और यूनानी में १६५ तथा पैदायश ५-२४ में३६५ वर्ष की है (८)मतूशिला की इब्रानी व यूनानी में १८७ सामरी में ६७ तथा पैदायश ५-२७ में ९६९ वर्ष की है (९) लमक की इब्रानी में १८२ सामरी में ५३ यूनानी में १८८ तथा पैदायश ५-३१ में ७७७ वर्षकी है (१०) अर्फक्षदकी इब्रानी में ३५ सामरी व यूनानी में १३५ तथा पैदायश बाब ११ में ४६५ वर्ष की है(११) शालख़ की इब्रानी में ३० सामरी तथा यूनानी में १३० पैदायश बाब ११ में ४६० वर्ष की है (१२) आबिर की इब्रानी में ३४ सामरी तथा यूनानी में १३४ व पैदायश बाब ११ में ४६५ वर्ष की है (१३) फ्लिज की इब्रानी में ३० और सामरी तथा यूनानी में १३२ और पैदायश ११ में २४१ वर्ष की है (१४) शुरूज की इब्रानी में ३० सामरी तथा यूनानी में १३० और पैदायश ११ में २३० वर्ष की है(१५) नहूर की सामरी तथा यूनानी में ७९ और इब्रानी में २९ तथा पैदायश ११ में १४८ वर्ष की है (१६) तारः की इब्रानी तथा सामरी में ७० व यूनानी में १७० तथा पैदायश ११ के अनुसार २०५ वर्ष की होती है। सत्वरं लब्धसम्भविष्यत्यवशेषम्

प्रथमपारः का शुद्धि, अशुद्धि पत्र ।

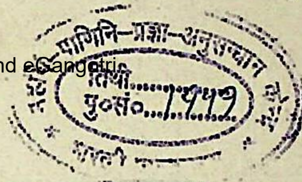
पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१८	म३म	मी३म
२	२०	हें	हैं
३	१५	यतः	निस्सन्देह
३	१७	पूवगों	पूर्वजों
३	१८	की	कि
४	१५	ध्वंस है	ध्वंस करते हैं
४	२६	वह बोला	वे बोले
५	११	किय	किया
५	२०	मेरा	मेरी
७	११	अपनी	मेरी
७	२८	अन्याय शीलों ने	अन्यायशीलों से
८	३	आर	और
९	२६	वधाकि	बध किया
१०	२६	हेमें	हमें
११	६	स्वार्गीय	स्वर्गीय
११	२६	अति कठार	अति कठोर
१२	१८	हें	हैं
१२	१६	लोलुप	लोलुप्त
१३	२१	जबरईल	जिब्राईल
१३	२७	मिकाइल	मेकाईल
१४	१	लोकों	लोगों
१५	६	क्या	क्या
१५	११	हों चुका हैं	हो चुका है
१५	१२	चाहते है	चाहते हैं
१५	२७	यहूदी ने कहा	यहूद ने कहा
१६	१५	पूर्वगों	पूर्वजों



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	१६	नारकीय	नरकीय
१६	२३	प्राप्त्यस्नन्तर	प्राप्त्यनन्तर
१७	७	लोकों का	लोगों का
१७	३१	चमाकार	चमाकर
१८	१६	पितामहो	पिता मह:
१८	२०	ईश्वर हैं	ईश्वर है
१९	१	जा	जो
१९	२	प्रात	प्रति
२०	२४	ज्ञानप्रप्त्यनन्तर	ज्ञानप्राप्त्यनन्तर
२१	१	प्रभु कीं ओर	प्रभु की ओर
२१	२५	सन्तोषाको का	सन्तोषियों का
२२	११	इंद्दश	ईदृश
२२	१२	धिंकारने	धिक्कारने
२२	२३	आकशों	आकाशों
२२	२८	बिकीर्ण	वितीर्ण
२२	२९	अभ में	अभ्रू में
२२	३१	लोग में	लोगों मे
२३	१	ततुल्य	तत्तुल्य
२३	६	उसका	उसको
२३	१९	पाप कराने की निन्द	पाप कराने के निन्दित
२३	२७	पशुओं	पशुओं
२३	२९	बधिर शुका	बधिर मूक
२४	२०	आर	और
२४	२५	चत्वारिंशतश्वे	चत्वारिंशतांशदे
	२७	धन्मात्मा	धर्मात्मा

मंज़िल शब्द के नोटका शुद्धि अशुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१६	लोगं	लोग
१	२३	अमुकरण	अनुकरण
२	१०	संस्कृतं	संस्कृत
२	१३	स्थानीन	स्थानीय
२	३०	३री	तीसरी
३	४	आवश्य	अवश्य
३	४	सुचित	सूचित
३	६	दिय	दिये
३	१०	मज़बुर	मजबूर
३	१८	श्यामदमिक़	श्यामदमिश्क़
३	२८	मक़ः	मक्का
३	२८	मदनिः	मदीनः
४	११	करतीहोंगा	करती होंगी
४	२०	हे	है
५	६	कुरानकारतां	कुरानकर्ता
५	१७	सन्मव	संभव
५	१६	वर्हादन	वेदिन
६	६	कुफफु	कुफ़्फ़ू
६	१२	वलूद	वद्द
६	१२	विदुजा	विहूजा
६	१३	तन्म	तस्म
६	१३	क़ंद्	क़द्
६	१५	कुल्युम	कुमुल्योम
६	१६	निदाग्रस्तो	निद्राग्रस्तो
६	१७	अत्याचारवलम्वन	अत्याचारावलम्वन
६	२६	सिंचित	सिंचित



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	२६	ह्दय	हृदय
७	३	वेहा	वही
७	४	दिमगों	दिमाग़ों
७	१२	अश्रपात	अश्रुपात
७	१६	अरं	और
७	२०	इज्जतको	इज़्ज़तको
८	५	दो	हो
८	१३	करता हूं	करते हैं
८	१६	हां	यहां
८	२६	सम्पदाय	सम्प्रदाय
९	४	गर्णोंका	गणोंका
९	५	हदीसमें	हदीसमें
९	६	अवीध	अवधि
९	७	फैरोजावाद्यी	फ़ैरोज़ाबाद
१०	११	मौहम्मद	मौहम्मदी
१०	२४	जुभर	ज़ुमर
११	२४	शूक्र	शुक्र
११	१८	अनकवत	अनकबूत
११	१८	जमुर	ज़ुमर
११	२५	संघ्रह	संग्रह
१२	४	सुपुस्यवस्थापन्न	सुपथस्थापक
१२	५	संरंत्तक	संरत्तक
१२	७	शुन्य	शून्य
१२	८	सरंत्तक	संरत्तक
१२	१०	करता है	करती है
१२	११	श्राघार	आधार
१२	१६	नहीं करता	नहीं करती
१३	१	अपमाणिक	अप्रामाणिक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	२	आपितु	अपितु
१३	७	कीं	की
१३	९	भान्ति	भांति
१३	१६	रू० के	रू० की
१५	१७	अर्यतः	अर्थतः
१६	५	उब्हों	उन्हों
१६	१३	जितनी	जितने
१६	१८	नियतकरनमें	नियत करने में
१६	२१	वह	वे
१७	७	चलफे	खल्फ़े
१७	१३	इन्द प्रमती	इन्द्रप्रमति
१७	१५	इन्दप्रमीत	इन्द्रप्रमति
१८	६	हिरण्यनाम	हिरण्यनाभ
१९	२	सैंधवपन	सैंधवायन
१९	८	इन्दप्रमति	इन्द्रप्रमति
१९	१५	शाकल्प	शाकल्य
१९	३०	सागवेद	सामवेद
२०	२	लोगाच्ची	लोकाची
२०	२६	इस्लामान यायियोंके	इस्लामानुयायों के
२१	११	अश्रुओं स	अश्रुओं से
२२	१०	एरिया	एरियन
२२	१६	सरंचक	संरचक
२२	१८	मस्तिष्कों	मस्तिष्कों
२३	१	हम	हमें
२३	२	पठी	पष्ठी
२३	६	है	हैं
२४	४	अच्छुत	अछूत
२४	१५	जैमनि	जैमिनि



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४	१७	यही तक	यहाँ तक
२४	१९	आपक	आपके
२५	१	बैठ	वैठ
२५	९	धर्मके	धर्म की
२५	२०	प्रदप्ति	प्रदीप्त
२५	२०	२६	१६
२५	२६	पड़ी	पड़ो
२५	३०	गच्छन्तु	गच्छतु
२५	३१	युमान्तरेवा	युगान्तरे वा
२६	१	पथाप्रविचलन्ति	पथः प्रविचलन्ति
२६	७	रत्नरिच्त	रन्तरिच्त
२६	११	हेपरमा्मन	हे परमात्मन्
२७	१	न करत	न करते
२७	२६	क्षथेमया	च्थेमचा
२८	१५	अमश्तस्यन्द	अमशास्पन्द
२८	१७	मन्दावस्था	यन्दावस्था
२८	२१	स्वनं	स्वयं
२८	३१	वेरुम	बेरून
२९	१२	यूनान	यूतान
२९	२८	आपने	अपने
२९	३१	रमजोग	रम्ज़गो
३०	१३	दूसरा	दूसरे
३०	२०	अपनी तुस्पक	अपनी पुस्तक
३१	१४	जरार तुश्त	जरातुश्त
३१	२४	उज्च	उच्चे
३१	२८	दसातीर या ना नामाना	दसातीर यानी ना माये
३१	३१	फरस	फ़ारसी
३२	१	वैरयो	वैर्यो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२	१७	साराने	सासाने
३३	१६	याईस	बाईस
३४	१	यद्दावस्था	यन्द्रावस्था
३४	७	यश्त	यश्त
३४	३०	ओरै	और
३५	२६	वर्तप्रान	वर्तमान
३६	३	का	को
३६	२१	अनुष्टप	अनुष्टुप
३६	२७	विरट	विराट्
३७	१६	त्रष्टुप	त्रिष्टुप
३७	१६	पदक	पाद के
३८	१	उसी ओर	उसी ओर
३६	३	पश्चात	पश्चात्
३६	१६	आर्चीन	प्राचीन
३६	२३	आर्य्य	आर्य्य
४१	६	विषेषण	विशेषण
४१	६	फि	कि
४१	३०	सरस्वती	सरस्वती
४३	२७	काफी	काफ़ी
४४	६	का	को
४५	१८	हुये	हुए
४५	२६	पन्रतु	परन्तु
४५	२८	यया	यथा
४५	२६	हस्तिश्ना	हस्तिस्ना
४५	२९	काजीऊ	क़ाज़ीऊँ
४६	१०	इदरासि	इदरीस
४७	२३	इसाइयों	ईसाइयों
४७	१८	तौरते	तौरेत
४७	२७	तौरेत	तालमूद

ओ३म्

आर्य्यभाषा के प्रेमियों को एक शुभ सूचना

हे देवभूमि निवासि ! आर्य पुरुषो ! यदि आप को

समग्र सांसारिक

धार्मिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, सामाजिक, नैमित्तिक

अर्थात्

वेद, कुरान, बाईबिल, यन्दावस्था, पितक

शास्त्र सम्मेलन

का

पूरा पूरा फोटो देखना हो तो धार्मिक इतिहास के मर्मज्ञ, अरबी, फारसी के अद्वितीय विद्वान्, यूनानी, सिन्धी, गुजराती, मराठी, पञ्जाबी, पश्तो, उर्दू आर्य्य आदि भाषाओं के प्रसिद्ध ज्ञाता श्रीमान् पं० सत्यदेव जी कृत कुरानानुवाद के ग्राहक बनिये। कि जिस का प्रथम भागांश श्रीयुत महाशय शिवप्रसाद जी गुप्त रईस काशी की आज्ञानुसार तारायन्त्रालय काशी में मुद्रित होकर प्रकाशित हो गया है। इस ग्रन्थरत्न की प्रशंसा जितनी की जावे उतनीही थोड़ी है। यह ग्रन्थ अपनी शैली में अनूठा, अपूर्व है। अतः आप सज्जनों को सूचना दी जाती है-कि इस ग्रन्थ को प्राप्त करने में विलम्ब न कीजियें। अन्यथा द्वितीयावृति की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। जो समग्र ग्रन्थ के प्रकाशित होने पर छप सकेगी। मूल्य विना डाकव्यय ॥=)

सर्व साधारण को विदित होकि हमने ईसाइ मुसलमानी मत से आये हुवे भ्राताओं के लिंये एक पाठशाला भी खोल दी है।

विनीत भवदीय—

श्री पूर्णचन्द्र भट्टाचार्य्य विद्यारत्न,

पुः मिः पौल मैनेजर।

सत्यसमाचार कार्य्यालय

कालीमहल काशी।